₹3.00

01 मई 2025 | रांची, गुरुवार | वर्ष-26, अंक- 89, पृष्ठ-12 | वैशाख शुक्ल पक्ष 04, संवत 2082 | रांची एवं डालटनगंज (मेदिनीनगर) से एक साथ प्रकाशित | रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155 | www.rastriyanaveenmail.com

ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

हर पक्ष की खबर | हर पक्ष पर नजर

अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस की शुभकामनाएं

आईसीएसई 10वीं बोर्ड की परीक्षा में मिला 100% अंक

झारखंड की बेटी शांभवी बनी नेशनल टॉपर

नवीन मेल डेस्क

जमशेदपुर (पूर्वी सिंहभूम)। झारखंड के जमशेदपुर की बेटी शांभवी जायसवाल ने आईसीएसई 10वीं बोर्ड परीक्षा में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त कर पूरे देश में प्रथम स्थान हासिल किया है। इस उपलब्धि से न केवल जमशेदपुर, बल्कि झारखंड और समूचे देश को गौरव की अनुभूति हुई है। काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशंस (सीआईएससीई) की ओर से बुधवार को घोषित 10वीं (आईसीएसई) और 12वीं (आईएससी) परीक्षाओं के नतीजों में जमशेदपुर के लोयला स्कूल की छात्रा शांभवी जायसवाल ने इतिहास रच दिया। उन्होंने 10वीं की परीक्षा में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त कर देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। शांभवी के माता-पिता दोनों डॉक्टर हैं। शांभवी के पिता डॉ अभिषेक जायसवाल, मेहरबाई टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल में रेडियोलॉजिस्ट हैं, जबकि उनकी मां डॉ ओजस्वी शंकर, टाटा मणिपाल हॉस्पिटल में स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं।

जमशेदपुर के लोयला स्कूल की छात्रा हैं शांभवी जायसवाल

100%

आईआईटी से इंजीनियरिंग करना चाहती हैं शांभवी

शांभवी ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता, स्कूल के प्राचार्य, उप-प्राचार्य और शिक्षकों को दिया है। भविष्य की योजनाओं के बारे में बात करते हुए शांभवी ने बताया कि वह 12वीं की पढ़ाई विज्ञान संकाय से पूरी कर आईआईटी से इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करना चाहती हैं।

सीआईएससीई ने 10वीं और 12वीं के रिजल्ट किए घोषित

नई दिल्ली (हि.स.)। काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन (सीआईएससीई) ने बुधवार को आईसीएसई (कक्षा 10वीं) और आईएससी (कक्षा 12वीं) परीक्षा के परिणाम घोषित कर दिए हैं। इस वर्ष आईसीएसई का कुल उत्तीर्ण प्रतिशत 99.09 प्रतिशत और आईएससी का कुल उत्तीर्ण प्रतिशत 99.02 प्रतिशत है। आईसीएसई परीक्षा में कुल 2,52,557 छात्र शामिल हुए थे, जिनमें से 2,50,249 छात्र पास हुए हैं। इसी तरह आईएससी परीक्षा में 99,551 छात्र शामिल हुए थे, जिनमें से 98,578 छात्र उत्तीर्ण हुए हैं। आईसीएसई में लड़कियों ने लड़कों से बेहतर प्रदर्शन किया है। लड़कियों का पास प्रतिशत 99.37 प्रतिशत और लड़कों का पास प्रतिशत 98.84 प्रतिशत है। **शेष पेज 11 पर**

बब्बर खालसा के 5 आतंकी गिरफ्तार

चंडीगढ़। पंजाब पुलिस ने बब्बर खालसा इंटरनेशनल मॉड्यूल के 5 गुर्गों को गिरफ्तार करके पुलिस थाने पर ग्रेनेड हमले की साजिश नाकाम कर दी है। पकड़े गए आतंकियों के पास से एक हैंड ग्रेनेड और एक अवैध हथियार बरामद किया गया है। पंजाब के डीजीपी गौरव यादव ने बुधवार को बताया कि गिरफ्तार पांचों गुर्गे आईएसआई नेटवर्क के लिए काम कर रहे थे। इनमें नरेश कुमार उर्फ बब्बू, अभिनव भगत उर्फ अभि, अजय कुमार उर्फ अज्जू, सनी कुमार और एक नाबालिग शामिल है।

शुभकामनाएं

राष्ट्रीय नवीन मेल के सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, अभिकर्ताओं, कर्मयोगियों एवं शुभचिंतकों को 'श्रमिक दिवस' की हार्दिक शुभकामनाएं।

- संपादक

आवकाश की सूचना

'श्रमिक दिवस' के अवसर पर **राष्ट्रीय नवीन मेल** कार्यालय 01 मई (गुरुवार) को बंद रहेगा। अत: अखबार का अगला अंक 03 मई (शनिवार) को प्रकाशित होगा।

- प्रबंधक

रांची का तापमान

	कांके	रांची
अधिक.	32.5°	32.0°
न्यून.	21.4°	18.0°

झारखंड राज्य विद्युत नियामक आयोग ने की बढ़ी दरों की घोषणा

राज्य के उपभोक्ताओं को लगा बिजली का झटका

नवीन मेल डेस्क

रांची। झारखंड में लोगों को 1 मई से बिजली का तगड़ा झटका लगेगा। झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड (जेबीवीएनएल) ने वर्ष 2025-26 में बिजली की दरों में वृद्धि की है। बुधवार (30 अप्रैल) को झारखंड राज्य विद्युत नियामक आयोग ने इसकी घोषणा की। बिजली की बढ़ी दरें 01 मई 2025 से प्रभावी हो जाएंगी। शहरी क्षेत्र के उपभोक्ताओं को अब प्रति यूनिट बिजली के लिए 20 पैसे और ग्रामीण क्षेत्र के उपभोक्ताओं को प्रति यूनिट 40 पैसे ज्यादा भुगतान करने पड़ेंगे। झारखंड राज्य विद्युत नियामक आयोग के अध्यक्ष महेंद्र प्रसाद ने बुधवार को एक प्रेस कांफ्रेंस में बिजली की नए दरों की जानकारी दी।

कृषि कार्यों के लिए बिजली दर में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है। वहीं, सभी तरह के उपभोक्ताओं को मीटर रेंट का भुगतान नहीं करना पड़ेगा। 200 यूनिट तक बिजली का उपयोग करने वाले उपभोक्ताओं को पहले की तरह कोई भी शुल्क नहीं अदा करना होगा। झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड (जेबीवीएनएल) ने आयोग के समक्ष बिजली दरों में 40.02 प्रतिशत वृद्धि का प्रस्ताव दिया था, जिस पर आयोग ने केवल 6.34 की वृद्धि की मंजूरी दी है। ज्ञात हो कि नई बिजली दरें तय करने से पहले राज्य के सभी पांच प्रमंडलों में आयोग की ओर से जनसुनवाई की गई थी। इस दौरान आम उपभोक्ताओं और विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने राज्य में बिजली की दरों में 40 फीसदी से अधिक वृद्धि के प्रस्ताव पर जबर्दस्त विरोध दर्ज कराया था। नई दरों के अनुसार, शहरी क्षेत्र के उपभोक्ताओं को अब प्रति यूनिट बिजली के लिए 6.85 रुपए और ग्रामीण क्षेत्र के उपभोक्ताओं को 6.70 रुपए के हिसाब से भुगतान करना पड़ेगा। नए टैरिफ में प्रावधान किया गया है कि उपभोक्ता यदि 5 दिनों के भीतर बिल भुगतान करते हैं, तो उन्हें कुल बिल पर 2 प्रतिशत की छूट मिलेगी।

- शहरी क्षेत्र में प्रति यूनिट 20 और ग्रामीण क्षेत्र में 40 पैसे की वृद्धि

बिजली की बढ़ी दर (रुपए में)

क्षेत्र	पहले	अब
ग्रामीण	6.65	6.85
शहरी	6.30	6.70

बिजली की आपूर्ति नहीं तो फिक्स्ड चार्ज नहीं

आयोग ने जेबीवीएनएल को निर्देश दिया है कि जिस अवधि में उपभोक्ताओं को बिजली की आपूर्ति नहीं होगी, उस अवधि के लिए फिक्स्ड चार्ज की राशि नहीं ली जाए। इस राशि के समायोजन का लाभ बिलिंग सॉफ्टवेयर के माध्यम से उपभोक्ताओं को स्वत: मिलेगा। फिक्स्ड चार्ज की पूरी वसूली के लिए यह अनिवार्य होगा कि एचटी (हाईटेंशन) श्रेणी के उपभोक्ताओं को 23 घंटे और एलटी (लो टेंशन) श्रेणी के उपभोक्ताओं को 21 घंटे विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

प्रीपेड स्मार्ट मीटर वालों को 3% की छूट

प्रीपेड स्मार्ट मीटर अपनाने वाले उपभोक्ताओं को एनर्जी चार्ज में 3 प्रतिशत की छूट मिलेगी। सार्वजनिक इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशनों के लिए आयोग ने सौर समय (सुबह नौ बजे से शाम चार बजे) में 7.31 रुपए प्रति यूनिट और गैर-सौर समय में 8.77 रुपए प्रति यूनिट की दर निर्धारित की है।

पहलगाम घटना की जितनी भी निंदा की जाए, वह कम है : सीएम सोरेन

- स्पेन और स्वीडन के दौरे से रांची लौटे मुख्यमंत्री
- सीएम ने पहलगाम में सूचना तंत्र की विफलता पर उठाया सवाल

नवीन मेल डेस्क

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन बुधवार को स्पेन और स्वीडन के दौरे से रांची लौट आए। रांची आने के बाद आज मुख्यमंत्री सोरेन ने रांची एयरपोर्ट पर पहलगाम घटना पर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा है कि इस घटना की जितनी भी निंदा की जाए, वह कम है, लेकिन कहीं ना कहीं देश में जो सूचना तंत्र है, उसका घोर अभाव दिखा। उम्मीद कर रहे हैं कि आगे ऐसी घटना न हो। ज्ञात हो कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन 19 अप्रैल से स्पेन और स्वीडन के दौरे पर थे। उनके साथ मुख्य सचिव अलका तिवारी, सीएम के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार के अलावा 11 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल शामिल था। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने अलग-अलग सेक्टर से जुड़े दोनों देशों के व्यवसायियों से कई दौर की वार्ता की है। उम्मीद जताई जा रही है कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में इस प्रतिनिधिमंडल के इस दौरे के बाद दोनों यूरोपियन देशों से झारखंड के कई सेक्टर में निवेश की संभावना है।

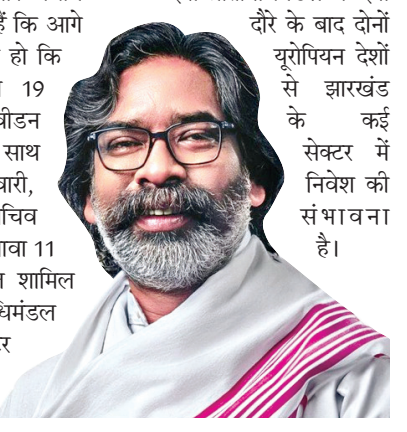

सारा तेंदुलकर ने कहा क्रिकेट मेरे डीएनए में है

मुंबई । क्रिकेट न केवल एक खेल है, बल्कि भारत में यह एक भावना है, जो लोगों को जोड़ता है। इस खेल से गहरा नाता रखने वाली सारा तेंदुलकर, जो क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर की बेटी हैं, ने अब क्रिकेट के डिजिटल युग में कदम रखा है। सारा ने हाल ही में ग्लोबल ई-क्रिकेट प्रीमियर लीग (जीईपीएल) के बेंगलुरु में आयोजित एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया, जहां उन्होंने जेटसिंथेसिस के संस्थापक और सीईओ राजन नवानी के साथ सार्वजनिक बातचीत में अपनी

चार आरोपी अफसरों की अग्रिम जमानत पर 14 को सुनवाई

नवीन मेल डेस्क

जेपीएससी नियुक्ति घोटाला

रांची। झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) नियुक्ति घोटाला मामले में नामजद चार अधिकारियों की अग्रिम जमानत याचिका पर बुधवार को सीबीआई की विशेष अदालत में सुनवाई हुई। आरोपियों में पुलिस अधिकारी विकास पांडेय और अरविंद सिंह, तथा प्रशासनिक अधिकारी कुमुद कुमार और संगीता कुमारी शामिल हैं।

सुनवाई के दौरान बचाव पक्ष ने कोर्ट से जवाब दाखिल करने के लिए और समय मांगा, जिसे अदालत ने स्वीकार कर लिया। अब इस मामले में अगली सुनवाई 14 मई को होगी। ज्ञात हो कि सीबीआई कोर्ट इस घोटाले से जुड़े कई आरोपियों को अग्रिम जमानत देने से इनकार कर चुका है। हालांकि, कुछ आरोपियों को हाईकोर्ट से राहत मिल चुकी है।

व्हाट्सएप से सीधे जुड़ें

सुझाव, शिकायत और समाचारों का स्वागत समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिए सप्रमाण समाचारों का स्वागत है। आप सुझाव या शिकायत भी भेज सकते हैं। संपर्क/व्हाट्सएप **82925 53444** विज्ञापन देने या अखबार प्राप्त करने के लिए संपर्क **+91 82923 73444** कार्यकारी संपादक।

पाकिस्तानी एयरलाइंस के लिए भारत का एयर स्पेस 23 तक बंद

- नवीन मेल की खबर पर लगी मुहर

नवीन मेल न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। आतंकी हमले के बाद से पाकिस्तान के खिलाफ एक्शन पर एक्शन लिए जा रहे हैं। ताजा घटनाक्रम में भारत ने पाकिस्तान की सभी तरह की फ्लाइट्स के लिए अपनी एयर स्पेस पर रोक लगा दी है। 30 अप्रैल की शाम 6:30 बजे से 23 मई की रात 11:59 बजे तक पाकिस्तान की हर तरह की कॉमर्शियल और मिलिट्री फ्लाइट्स पर रोक लगाई है। इस बाबत भारत ने नोटम (नोटिस टू एयरमैन) जारी किया है। भारतीय एयर स्पेस पाकिस्तानी एयरलाइंस के लिए बंद किए जाने की संभावना की खबर को राष्ट्रीय नवीन मेल ने 30 अप्रैल 2025 के अंक में प्रकाशित किया था।

गौरतलब है कि पाकिस्तानी विमान सेवा कंपनियों ने पहले ही भारतीय हवाई क्षेत्र से बचना शुरू कर दिया है। ऐसा कथित तौर पर 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद संभावित जवाबी कार्रवाई की चिंता के कारण किया गया है। इस हमले में आतंकवादियों ने नागरिकों पर गोलीबारी की थी, जिसमें 26 लोग मारे गए थे। **शेष पेज 11 पर**

केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में जाति जनगणना को मंजूरी

- शिलांग से सिलचर तक नए ग्रीनफील्ड हाई-स्पीड कॉरिडोर के निर्माण को मिली स्वीकृति

नई दिल्ली (आईएएनएस)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को दिल्ली में केंद्रीय कैबिनेट की बैठक हुई। इस बैठक में कई अहम फैसले लिए गए। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट बैठक के बाद केंद्र सरकार द्वारा लिए गए फैसलों की जानकारी दी। बैठक में सरकार ने जाति जनगणना कराने का भी फैसला लिया है। कैबिनेट ने जाति जनगणना को मंजूरी दे दी है। सरकार के फैसले की जानकारी देते हुए अश्विनी वैष्णव ने कहा कि कांग्रेस की सरकारों ने जाति जनगणना का विरोध किया। वर्ष 1947 के बाद से जाति जनगणना नहीं हुई। जाति जनगणना की जगह कांग्रेस ने जाति सर्वे कराया, यूपीए सरकार में कई राज्यों ने राजनीतिक दृष्टि से जाति सर्वे किया है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने लोकसभा में आश्वासन दिया था कि जाति जनगणना पर कैबिनेट में विचार किया जाएगा।

तत्पश्चात एक मंत्रिमंडल समूह का भी गठन किया गया था। इसमें अधिसंख्य राजनीतिक दलों ने जाति आधारित जनगणना की संस्तुति की थी। इसके बावजूद कांग्रेस की सरकार ने जाति जनगणना के बजाय, सर्वे कराना ही उचित समझा, जिसे सीईसीसी के नाम से जाना जाता है। अश्विनी वैष्णव ने कहा कि इन सब के बावजूद कांग्रेस और इंडी गठबंधन के दलों ने जाति जनगणना के विषय को केवल अपने राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग किया। वैष्णव ने कहा कि जनगणना का विषय संविधान के अनुच्छेद 246 की केंद्रीय सूची की क्रम संख्या 69 पर अंकित है और यह केंद्र का विषय है। हालांकि, कई राज्यों ने सर्वे के माध्यम से जातियों की जनगणना की है। जहां कुछ राज्यो में यह कार्य सुचारू रूप से संपन्न हुआ, वहीं कुछ अन्य राज्यों ने राजनीतिक दृष्टि से और गैरपारदर्शी ढंग से सर्वे किया। वैष्णव ने आगे कहा कि इस प्रकार के सर्वे से समाज में भ्रांति फैली है। इन सभी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए और यह सुनिश्चित करते हुए कि हमारा सामाजिक ताना-बाना राजनीति के दबाव में न आए, जातियों की गणना एक सर्वे के स्थान पर मूल जनगणना में ही सम्मिलित होनी चाहिए। **शेष पेज 11 पर**

गन्ना किसानों को दी गई राहत

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि कैबिनेट ने गन्ने के उचित एवं लाभकारी मूल्य को लेकर भी बड़ा निर्णय लिया है। वर्ष 2025-26 चीनी सत्र के लिए गन्ने की एफआरपी दर 355 रुपए प्रति क्विंटल तय की गई है। यह दर 10.25 फीसदी की बेसिक रिकवरी दर पर आधारित है। इसके अलावा, रिकवरी दर में हर 0.1 फीसदी की बढ़ोतरी पर 3.46 रुपए प्रति क्विंटल का प्रीमियम मिलेगा, जबकि 0.1 फीसदी की कमी पर उतनी ही राशि की कटौती की जाएगी। सरकार का यह निर्णय गन्ना किसानों की आय सुनिश्चित करने और चीनी मिलों के साथ संतुलन बनाए रखने की दिशा में उठाया गया कदम है।

इंडिया

अदूरदर्शी नीतियों से घटते किसान, बढ़ते मजदूर और बिचौलिए

सुनील बादल
कार्यकारी संपादक

भारत के शहरों में बसे या संघर्षरत नौकरीपेशा या मजदूर सभी की पृष्ठभूमि गांवों के किसानों की है। आजादी के बाद पंचवर्षीय योजनाओं के समय से ही खेती का आकर्षण कम होने लगा जो बाद के वर्षों में अदूरदर्शी नीतियों के कारण विकराल रूप ले चुका है। पिछले महीने गोला में दो रुपए किलो टमाटर की दर मिलने से नाराज किसानों का ट्रैक्टर से फसल को कुचलने का समाचार प्रकाशित हुआ और बात आई गई हो गई ।इसका समाधान सरकारों के पास यह होता है कि गांवों में मुफ्त राशन और नगद बांट दिया जाए जिससे किसान खेती छोड़ मजदूर या सरकारी कार्यालयों के बिचौलिए बन रहे हैं। योजनाएं बनाने वाले बड़े सरकारी अफसर न तो गांवों को समझते हैं और न ग्रामीण अर्थव्यवस्था को जिस कारण सभी सरकारों ने पुराने और फर्जी आंकड़ों के आधार नीतियों को लागू किया और नतीजा है कि झारखंड के गांवों में कारों, महंगी बाइक पर बैठकर राशन और लाल पीले कार्ड की मुफ्त सुविधाएं लेने वाले कुपात्र युवा दिन में ताश खेलते हैं और रात में नशापान करते हैं। जिस दिन मुफ्तखोरी बंद होगी उस दिन तक न किसान बचेंगे और न मेहनतकश मजदूर जिससे अपराध और बेरोजगारी बढ़ेगी। खेती-किसानी से जुड़े खेतिहर मजदूर जो नशापान से अशक्त होकर पलायन करता तो शहर की नई झुग्गी झोंपड़ियों से नई समस्या उत्पन्न होती है।औद्योगिक विकास, शैक्षिक विस्तार, सर्विस सेक्टर के विकास, शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि के सामूहिक प्रभाव की वजह से भी भारत में किसानों की संख्या कम होती जा रही है। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक यानी नाबार्ड की 2016-17 की एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में 10.07 करोड़ परिवार खेती पर निर्भर हैं।कृषि प्रधान देश के विशाल आबादी की खेती पर ऐसी अतिशय निर्भरता की वजह

से किसानों के करोड़ों परिवार आर्थिक बदहाली में जीने के लिए मजबूर हैं। उन्हें गांवों में नियमित रूप से रोजगार नहीं मिल पाता तो शहरों की ओर पलायन करना पड़ता है। इस तरह गांवों के खेतिहर मजदूर शहरों में पहुंचकर अन्य किस्म के मज़दूर बन जाते हैं। शहरों में उन्हें अपेक्षाकृत बेहतर मजदूरी मिलती है। वैसी कमाई गांवों में है नहीं, क्योंकि इससे खेती की लागत बढ़ जाती है और मुनाफा इतना भी नहीं मिलता कि गुज़ारा हो सके। मज़दूर की यही किल्लत मशीनों की मांग बढ़ाती है। मशीन के आते की खेतिहर मज़दूरों की संख्या और बढ़ जाती है।भारत में करीब 86 प्रतिशत छोटे और सीमांत किसान हैं। इनके पास 2 हेक्टेयर या 5 एकड़ से भी कम कृषि भूमि है। छोटी जोत के किसानों की परेशानी ये है कि अगर वो खेतिहर मज़दूरों से काम कराते हैं तो फसल की लागत बढ़ जाती है और मुनाफा घट जाता है। इसीलिए छोटी जोत के किसान परिवार के बुज़ुर्गों और लाचार सदस्यों को छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं। गांवों की सामाजिक ताना-बाना ऐसा है कि छोटी जोत वाले लोग औरों के खेतों में मज़दूरी करना पसन्द नहीं करते, इसीलिए गांव ही छोड़ देते हैं। छोटे किसान या खेतिहर मज़दूर इसलिए भी घट रहे हैं क्योंकि खेती-बाड़ी में फसल की बुआई और कटाई के मौसम में कुछ दिनों के काम ज़्यादा निकलता है। जबकि घर-परिवार चलाने के लिए मजदूरों को भी तो नियमित काम की जरूरत होती है। यदि खेतिहर मज़दूर वापस गांवों की और खेती की ओर लौटना भी चाहें तो भी ये उनके लिए व्यावहारिक नहीं हो पाता। कुलमिलाकर, सारा चक्र ऐसा है, जिससे दिनों-दिन खेती-किसानी की चुनौतियां बदलती जाती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए कड़ाई से लाल,पीले राशन कार्ड और अन्य लोकलुभावन योजनाओं के पात्रों का सत्यापन अंतरराज्यीय एजेंसियों से कराना चाहिए और भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को दंड देने की प्रक्रिया बदलनी चाहिए। बहुत ही कम मामलों में रंगे हाथ पकड़े जाने वाले अधिकारी भी पैसे और राजनीतिक प्रभाव से बचने के रास्ते निकाल लेते हैं जिसमें अभियोजन की स्वीकृति न देना भी शामिल है। सभी का मिला जुला प्रभाव समाज में पड़ता है और युवाओं को भ्रष्टाचार से आसान रास्ता दिखता है । सबसे बड़ा प्रभाव यह हुआ कि गांवों के स्कूल जो देशभक्त, नैतिकता भरे आदर्श नागरिक पैदा करते थे धीरे धीरे सरकारी नौकरी पाने के साधन बनते जा रहे हैं। गुरुओं का सम्मान गिरा और वे निजी विद्यालयों में सेवा प्रदाता बन गए। देश के अधिकांश युवा परियोजना आधारित बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पुर्जे बन रहे हैं और भारत एक अंधी दौड़ में शामिल हैं जिसमें अपनी चिंता सभी को है देश के भविष्य की मात्र बहुत कम प्रभावशाली लोगों को।

पूर्व रॉ प्रमुख आलोक जोशी होंगे एनएसएबी के अध्यक्ष

- सात सदस्यीय बोर्ड में सशस्त्र बलों, पुलिस और राजनयिक सेवाओं के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी शामिल

नई दिल्ली (हि.स.)

केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड (एनएसएबी) का पुनर्गठन किया है और रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) के पूर्व प्रमुख आलोक जोशी को इसका नया अध्यक्ष नियुक्त किया है। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय तनाव बढ़ने के बीच भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र को मजबूत करना है।

सूत्रों के अनुसार, नए सिरे से गठित सात सदस्यीय बोर्ड में सशस्त्र बलों, पुलिस और राजनयिक सेवाओं के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं। नए सदस्यों में सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी एयर मार्शल पीएम सिन्हा (पूर्व पश्चिमी वायु कमांडर), लेफ्टिनेंट जनरल एके सिंह (पूर्व दक्षिणी सेना कमांडर), रियर एडमिरल मोंटी खन्ना (सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी), राजीव रंजन वर्मा (पूर्व आईपीएस अधिकारी), मनमोहन सिंह (पूर्व आईपीएस अधिकारी) और बी वेंकटेश वर्मा (सेवानिवृत्त आईएफएस) अधिकारी हैं। ज्ञात हो कि राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड (एनएसएबी) भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण संस्था है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक हित के मामलों पर प्रधानमंत्री कार्यालय को सलाह देने का काम करती है। इसकी स्थापना 19 नवंबर 1998 को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ब्रजेश मिश्रा के साथ पहले राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के रूप में की थी।

बाबूलाल ने पूछा, हफिजुल हसन के इस्तीफे की मांग करेंगे खड़गे?

● कहा, कांग्रेस व झामुमो गठबंधन की नींव परिवार-प्रेम का परिणाम है

नवीन मेल संवाददाता

रांची। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने बुधवार को कांग्रेस पार्टी के शीर्ष नेतृत्व पर निशाना साधा। मरांडी ने कहा कि झारखंड में कांग्रेस के 'राष्ट्रीय अध्यक्ष' मल्लिकार्जुन खड़गे जी संविधान बचाने की बात करने आ रहे हैं, तो क्या सबसे पहले आते ही वे सीएम सोरेन से हफिजुल हसन के इस्तीफे की मांग करेंगे? क्योंकि, ऐसे संविधान विरोधी व्यक्ति के साथ गठबंधन में बने रहना और उसी समय संविधान बचाओ रैली करना नैतिक रूप से सही नहीं है। बाबूलाल ने कहा कि यह कोई इत्तेफाक नहीं है कि जैसे-जैसे नेशनल हेराल्ड केस की परतें खुलती जा रही हैं, कांग्रेस पार्टी की संविधान को लेकर चिंता भी बढ़ती जा रही है। कहा कि एक सोची-समझी साजिश के तहत जनता का ध्यान राहुल गांधी और सोनिया गांधी द्वारा किए गए घोटाले से भटकाने के लिए यह सारा आडंबर रचा जा रहा है। नहीं तो, जिस पार्टी में खुद के नियम-कायदे केवल एक ही परिवार के सदस्य तय करते हों, वह पार्टी देश के संविधान की कितनी परवाह करेगी, यह जनता भली-भांति जानती है।

मरांडी ने केंद्रीय कैबिनेट के फैसले का किया स्वागत

नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने केंद्र सरकार द्वारा बुधवार को कैबिनेट में पूरे भारत में जातिगत जनगणना करवाने का निर्णय सराहनीय कदम है। कहा अब वोटबैंक की नहीं, वास्तविक सामाजिक न्याय की बात होगी। कहा दशकों से इस मुद्दे को कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियों ने जातिगत जनगणना का इस्तेमाल केवल चुनावी हथियार की तरह करते आए हैं। अब जातिगत जनगणना समय की मांग बन चुकी है। समय आ गया है कि टुकड़ों में कराई जा रही राज्य स्तरीय, असंगत और अपारदर्शी गणनाओं को छोड़ा जाए और पूरे देश के लिए एक समान, विश्वसनीय व तथ्य-आधारित जातिगत जनगणना को अपनाया जाए। कहा कि सही मायनों में सामाजिक न्याय की ओर कदम बढ़ाते हुए जातिगत जनगणना को स्वीकृति प्रदान करने के लिए पीएम मोदी जी का आभार!

राज्य सरकार डीजीपी को रिटायर कराने पर असहमत

केंद्र सरकार को जवाब भेजने की तैयारी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। राज्य सरकार ने डीजीपी को 30 अप्रैल 2025 के दिन (बुधवार) रिटायर कराने के निर्देश पर असहमति जताने की तैयारी में है। राज्य सरकार केंद्र को पत्र लिखेगी। इसकी तैयारी की जा रही है। केंद्र को भेजे जाने वाले जवाब में राज्य सरकार द्वारा डीजीपी की नियुक्ति के लिए बनाए गए नियम को सही बताया जाएगा।

सूत्रों के मुताबिक राज्य सरकार ने डीजीपी अनुराग गुप्ता की नियुक्ति प्रकरण में केंद्र द्वारा दिए गए दिशा निर्देश के मुद्दे पर कानूनी राय लेने के बाद अपना जवाब भेजने की तैयारी की है। पत्र में केंद्र द्वारा उठाए गए हर बिंदु का जवाब भेजा जाएगा। राज्य सरकार का तर्क है कि डीजीपी नियुक्ति के लिए बनाया गया नियम सुप्रीम कोर्ट के दिशा निर्देश के अनुरूप है।

सरकार का मानना है कि सुप्रीम कोर्ट ने प्रकाश सिंह बनाम केंद्र सरकार के मामले में डीजीपी की नियुक्ति के लिए पैनल बना कर यूपीएससी से अनुमोदित कराने का निर्देश अस्थाई व्यवस्था के तहत दिया है। राज्य सरकार ने पुलिस एक्ट में निहित शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए डीजीपी की नियुक्ति नियमावली बनाई है। सरकार द्वारा बनाया गया नियम सुप्रीम कोर्ट के दिशा निर्देशों के अनुकूल है।

सरकार यह मानती है कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के आलोक में डीजीपी का कार्यकाल दो साल का निर्धारित है। इसलिए इससे पहले राज्य के डीजीपी को पद से हटाना सुप्रीम कोर्ट के दिशा निर्देशों का उल्लंघन होगा।

सरकार की तरफ से यह भी तर्क है कि डीजीपी की नियुक्ति के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट में भी एक मामला विचाराधीन है। न्यायालय द्वारा अभी यह फैसला किया जाना बाकी है कि अनुराग गुप्ता की नियुक्ति नियमानुसार है या नहीं। इसलिए इस मुद्दे पर न्यायालय के फैसले के पहले भी पद से हटाना सही नहीं है।

ब्यूरोक्रेसी में अलग-अलग तरह की चर्चा है

डीजीपी अनुराग गुप्ता के मुद्दे पर लगातार बुधवार को भी अनिश्चितता की स्थिति बनी रही। राज्य सरकार ने डीजीपी अनुराग गुप्ता को पद से हटाने का कोई आदेश जारी नहीं किया ना ही उन्होंने पद त्याग किया। ब्यूरोक्रेसी में अलग-अलग तरह की चर्चा है। कुछ यह मान रहे हैं कि अनुराग गुप्ता केंद्र सरकार के निर्देश के विपरीत डीजीपी के पद पर बने हुए है। उन्हें डीजीपी के पद से हटाने के लिए सरकार की ओर से आदेश जारी करने की बाध्यता है या नहीं। इस मुद्दे पर भी अधिकारियों की अलग अलग राय है। कुछ अधिकारियों का मानना है कि केंद्र सरकार ने अनुराग गुप्ता को रिटायर कराने के आदेश दिया है। किसी अधिकारी के रिटायरमेंट के समय सरकार के स्तर से कोई आदेश नहीं निकला जाता है। रिटायरमेंट की तिथि पर संबंधित अधिकारी द्वारा अपना पद त्याग कर दिया जाता है। दूसरी तरफ़ कुछ अधिकारियों का यह मानना है कि सरकार ने अनुराग गुप्ता को दो साल के लिए डीजीपी के पद पर नियुक्त किया है। इसलिए केंद्र के निर्देश के आलोक में अनुराग गुप्ता को रिटायर कराने के लिए उन्हें डीजीपी के पद से हटाने का आदेश जारी करना जरूरी है।

नरेश टिकैत जनता-किसानों से माफी मांगें : पवन साहू

नवीन मेल संवाददाता

रांची। भाजपा किसान मोर्चा (झारखंड) प्रदेश अध्यक्ष पवन साहू ने नरेश टिकैत के पहलगाम मामले पर देशद्रोही बयानबाजी की कड़े शब्दों में निंदा की है। पवन साहू ने कहा कि पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों द्वारा 26 हिंदू तीर्थयात्रियों की निर्मम हत्या के बाद पूरा देश आक्रोशित है। देश की जनता एकजुट होकर पीएम मोदी के नेतृत्व में पाकिस्तान को करारा जवाब देने की मांग कर रही है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने कठोर निर्णय लेते हुए पाकिस्तान के साथ राजनीतिक संबंध समाप्त कर दिए हैं। पवन साहू ने कहा कि तथाकथित किसान नेता नरेश टिकैत की दुर्भाग्यपूर्ण टिप्पणियां ऐसे समय में आया, जब पूरा देश एकजुट है। कुछ तथाकथित किसान नेता राष्ट्र विरोधी बयान देकर देश के जख्मों पर नमक छिड़कने का कार्य कर रहे हैं। नरेश टिकैत ने कहा कि भारत सरकार को सिंधु जल संधि को रद्द नहीं करना चाहिए था, क्योंकि 'भारत और पाकिस्तान का किसान एक हैं।' साहू ने कहा कि हम नरेश टिकैत से पूछना चाहते हैं - जो देश हमारे निर्दोष नागरिकों की हत्या करवा रहा है, उसके हुक्का-पानी को बंद क्यों न किया जाए? बार-बार भारत की पीठ में छुरा घोंपने वाले पाकिस्तान के प्रति प्रेम का आखिर क्या औचित्य है? यदि पाकिस्तान से इतना ही प्रेम है, तो नरेश टिकैत पाकिस्तान चले जाना चाहिए। नरेश टिकैत का यह बयान शहीदों और उनके परिवारों का अपमान है। उन्हें देश की जनता और किसानों से माफी मांगनी चाहिए। नरेश टिकैत ने तुष्टिकरण की राजनीति करते हुए कहा कि 'आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता।' हम पूछना चाहते हैं कि यदि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं है, तो हर बार पकड़े गए आतंकवादी एक ही धर्म से क्यों होते हैं? उन माताओं-बहनों से जाकर पूछिए, जिनके परिवारजनों को धर्म पूछकर बेरहमी से मारा गया। पवन साहू ने कहा कि भाजपा किसान मोर्चा पूरे देश की जनता की ओर से मांग करता है कि ऐसे तथाकथित किसान नेता नरेश टिकैत को देश और किसानों से सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए। साथ ही, समाज और किसानों को चाहिए कि ऐसे राष्ट्रविरोधी बहरूपियों का सामाजिक बहिष्कार करें, और उनका हुक्का-पानी बंद कर दें। उन्होंने कहा कि आजाद भारत के इतिहास में पहली बार भारत सरकार ने सिंधु जल संधि को निरस्त कर पाकिस्तान को स्पष्ट संदेश दिया है कि अब देश आतंकवाद को किसी भी सूरत में सहन नहीं करेगा।

● कहा, नरेश टिकैत की टिप्पणियां दुर्भाग्यपूर्ण हैं

जातीय जनगणना का जेएमएम ने किया स्वागत

विपक्ष की मांग के आगे झुकी केंद्र सरकार : सुप्रियो

नवीन मेल संवाददाता

रांची। जेएमएम के प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि यह निर्णय केंद्र सरकार को पहले ही ले लेने थे। जेमएमए के अलावे और भी भाजपा की जो विरोधी पार्टीयां बिहार हो, कर्नाटक या तेलंगाना हो, ने मांग रखी थी कि जातिगत जनगणना हो। उस समय पीएम और भाजपा के बड़े नेताओं ने इसका खुलकर विरोध किया था। मगर अब जन-दबाव के आगे केंद्र सरकार को झुकना पड़ा है। भारत सरकार के राजनीतिक मामलों पर कैबिनेट समिति ने जनसंख्या की जनगणना में जातीय जनगणना को स्थान दिया है। भारत सरकार के इस निर्णय का झामुमो ने स्वागत किया है, उन्होंने कहा है कि यह हमारी नैतिक जीत है। वहीं श्री भट्टाचार्य ने कहा कि अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ है कि झारखंड राज्य के आदिवासियों को सरना धर्म कोड मिलेगा या नहीं। उन्होंने कहा कि जनसंख्या जनगणना के बाद ही जातीय जनगणा होनी चाहिए ताकि परिसीमन करना असान हो। 2025 में हमलोग महिला आरक्षण देने की बात कर रहे हैं ऐसे में परिसीमन से पहले जातीय जनगणना होनी चाहिए।

न्यूज़ बॉक्स

आजसू ने नाइजर में फंसे पांच श्रमिकों की रिहाई की मांग की

रांची। अफ्रीकी देश नाइजर में तंकवादियों के शिकार झारखंड के गिरिडीह जिले के बगोदर क्षेत्र के पांच श्रमिकों की रिहाई को लेकर आजसू पार्टी ने गृह मंत्रालय को पत्र लिखा है। आजसू पार्टी के नेता संजय मेहता ने बुधवार को विदेश मंत्री एस जयशंकर और नाइजर में भारत के राजदूत सीताराम मीना को पत्र लिखकर त्वरित कार्रवाई की मांग की है। ज्ञात हो कि विगत 25 अप्रैल को नाइजर की राजधानी नियामे से लगभग 115 किलोमीटर दूर तिल्लाबेरी में आतंकवादियों ने एक पावर ट्रांसमिशन साइट पर हमला किया। इस हमले के बाद 12 सुरक्षाकर्मियों की जान चली गई और बगोदर के पांच मजदूरों संजय महतो, चंद्रिका महतो, फलजीत महतो, राजू कुमार और उत्तम महतो का अपहरण कर लिया गया। ये मजदूर कल्पतरु प्रोजेक्ट्स इंटरनेशनल लिमिटेड (केपीआईएल) के प्रोजेक्ट में काम कर रहे थे। संजय मेहता ने पत्र में सभी मजदूरों के पासपोर्ट विवरण और संपर्क जानकारी भी मंत्रालय को दी है। साथ ही, उनके परिजनों की चिंता और व्यथा को रेखांकित किया है। उन्होंने विदेश मंत्री और भारत के राजदूत से इस गंभीर मामले में तत्काल हस्तक्षेप कर मजदूरों की सकुशल वतन वापसी सुनिश्चित करने का अनुरोध किया है। संजय मेहता ने बताया की नाइजर में भारत के एंबेसडर सीता राम मीना को सूचित करने के बाद उनके कार्यालय ने हमें सूचित किया है कि भारतीय दूतवास ने कार्रवाई शुरू कर दी है।

वर्ष का दूसरा राष्ट्रीय लोक अदालत 10 मई को, डालसा जुटी तैयारी में

रांची। झालसा के निर्देश पर वर्ष का दूसरा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 10 मई को होना सुनिश्चित हुआ है। राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन के लिए समझौतापूर्व बैठक 10 मार्च से शुरू हो चुका है। इसी के मद्देनजर जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के द्वारा भी तैयारी शुरू कर दिया गया है। सभी न्यायालयों से वादकारियों को नोटिस भेजने का कार्य भी शुरू कर दिया गया है। जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के कार्यरत सभी पीएलवी को अपने-अपने कार्यक्षेत्र में आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता के लिए जोर-शोर से प्रचार-प्रसार करने को कहा गया है। उन्होंने कहा कि जागरूकता कार्यक्रम के आयोजन के पश्चात ग्रामीणों व जरूरतमंदो को आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में जानकारी दें, ताकी लोग जागरूक हो, वादकारी राष्ट्रीय लोक अदालत का फायदा उठा सके और अपने वादों का निस्तारण निशुल्क करा सकें। ज्ञात हो कि 10 मई को आयोजित होनेवाले राष्ट्रीय लोक अदालत में आपराधिक सुलहनीय मामले, दीवानी से संबंधित मामले, श्रम से संबंधित वाद, वैवाहिक वाद, पारिवारिक वाद, उत्पाद से संबंधित मामले, चेक बाउंस के मामले, वन विभाग के मामले, बिजली से संबंधित मामले, ट्रैफिक चालान से संबंधित मामले साथ ही साथ भूमि अधिग्रहण, मोटरयान, माप-तौल से संबंधित वाद एवं वैवाहिक से संबंधित मामलों का निस्तारण मध्यस्थों व अधिवक्ताओं के माध्यम से किया जायेगा।

जातीय गणना कराना ऐतिहासिक और क्रांतिकारी कदम : राजेंद्र प्रसाद

रांची। मूलवासी सदान मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद ने केंद्र सरकार की ओर से जातीय जनगणना कराने के निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ओबीसी के सच्चे हितैषी हैं। प्रसाद ने प्रधानमंत्री के प्रति आभार प्रकट किया है। राजेंद्र प्रसाद ने जातीय जनगणना कराने के निर्णय को ऐतिहासिक और क्रांतिकारी कदम बताया है। कहा कि जातीय जनगणना की मांग लंबे समय से होते रही है। राजेंद्र प्रसाद ने यह भी कहा कि जातीय जनगणना नहीं होने से देश में पिछड़ी जातियों के आंकड़े को लेकर देश में भ्रम की स्थिति बनी हुई है। प्रसाद ने कहा कि जातीय जनगणना से ओबीसी की आबादी के अनुसार हिस्सेदारी तय होगी।

रिम्स निदेशक और स्वास्थ्य मंत्री की टकराहट से मचा भूचाल

डॉ राजकुमार ने की हाईकोर्ट की अवमानना : इरफान अंसारी

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड के स्वास्थय मंत्री डा इरफान अंसारी के लिए फैसले पर नाराजगी जताते हुए रिम्स निदेशक डा राजकुमार ने झारखंड हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी जिसपर सुनवाई कर झारखंड हाईकोर्ट ने डा राजकुमार के हटाए जाने के आदेश पर रोक लगा दी थी और विस्तृत सुनवाई 6 मई को निर्धारित किया था। इस फैसले के आलोक में डॉ. राजकुमार ने 29 अप्रैल को दोबारा से रिम्स निदेशक का पदभार ग्रहण कर लिए थे और उसके बाद रिम्स फैकल्टी के लंबित 81 चिकित्सा शिक्षकों के पदोन्नति की सूची जारी की थी, वहीं सीटी स्कैन मशीन खरीद का भी पत्र जारी किया था, इसके साथ साथ उन्होंने एक रास्ते को भी खुलवा दिया था। अब स्वास्थ्य मंत्री और अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य ने रिम्स निदेशक के इन तीनों फैसले को गलत बताते हुए जल्द जीबी की बैठक बुलाने की बात कही है। स्वास्थय मंत्री डा इरफान अंसारी ने कहा कि रिम्स में नेतागिरी का कोई स्थान नहीं है। सेवा स्थल पर नेतागिरी नहीं होने देंगे इससे रिम्स की व्यवस्था बिगड़ती है और मरीजों का नुकसान होता है।

29 अप्रैल को लिए गए सभी फैसले अमान्य : स्वास्थ्य मंत्री

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने कहा कि 29 अप्रैल को रिम्स निदेशक डॉ. राजकुमार का लिया सभी फैसला अमान्य होगा, क्योंकि ये सभी असंवैधानिक हैं। मंत्री ने कहा कि रिम्स के 81 चिकित्सक शिक्षकों को प्रमोशन देने से बाकी बचे 19 डॉक्टर्स शिक्षक हड़ताल करने जा रहे थे, जिन्हें उन्होंने आग्रह कर रुकवाया है। मंत्री ने कहा कि अपर मुख्य सचिव ने भी साफ कर दिया है कि अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस संबंध में राष्ट्रीय नवीन मेल के संवाददाता ने झारखंड के स्वास्थय मंत्री डा इरफान असारी से सवाल पूछे तो उन्होंने बताया कि डा राजकुमार ने झारखंड हाईकोर्ट के 6 मई को होने वाली विस्तृत सुनवाई का इंतजार न करते हुए कोर्ट की अवमानना की है और कोर्ट का अवमानना जुर्म है।

मीडिया में आकर बयानबाजी ठीक नहीं : अपर मुख्य निदेशक

अपर मुख्य निदेशक (स्वास्थ्य) अजय कुमार सिंह ने कहा कि जब रिम्स के एसोसिएट और असिस्टेंट प्रोफेसर की पदोन्नति का मामला रिम्स शासी परिषद की बैठक में पास ही नहीं हुआ तो फिर निदेशक ने कैसे यह फैसला ले लिया। अपर मुख्य सचिव ने यह भी कहा कि पिछले कुछ दिनों से रिम्स निदेशक डॉ. राजकुमार मीडिया में आकर बयानबाजी कर रहे हैं, यह ठीक नहीं है.

अदालत के फैसले का सम्मान डा इरफान अंसारी

नेपाल हाउस मंत्रालय में संवाददाता सम्मेलन के दौरान स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने कहा कि जब कोर्ट ने अगले 06 मई को सुनवाई की तारीख रखी है, तब तक उन्हें (डॉ. राजकुमार को) इंतजार करना चाहिए था। मैं न्यायालय के हर फैसले का सम्मान करता हूं।

आंगनबाडी केंद्रों को घटिया मोबाइल देने की होगी जांच : जेपी

रांची। झारखंड समाज कल्याण कर्मचारी संघ के संयोजक जय प्रकाश पांडेय की शिकायत पर आंगनबाड़ी केंद्रों को घटिया मोबाइल देने के मामले की जांच होगी। इस संबंध में कल्योाण विभाग के संयुक्त सचिव राजेश प्रजापति ने बुधवार को आश्वासन दिया है। इसके अलावा सचिव ने आंगनबाडी केंद्रों को पोषाहार में मिलावट, लगभग 10 माह से मानदेय बंद होने और केंद्रों के बकाया मकान किराया सहित अन्य समस्याओं का जल्द समाधान करने की बात कही है। संघ के संयोजक जय प्रकाश पांडेय ने आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ और सभी संगठनों से संयुक्त रूप से शक्तिशाली बनाने का आग्रह किया है। उन्होंने बताया कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर केंद्र सरकार भी वेतन सुविधाओं को बढ़ाने पर विचार कर रही है।

आईसीएसई रिजल्ट

10वीं बोर्ड में स्कूल टॉपर रहे रचित अग्रवाल

रांची। रचित अग्रवाल जिसने सहयाद्री स्कूल पुणे से 10th आईसीएसई बोर्ड के एग्जाम में एक विषय में 98% और बाकी पांचों विषय में 99% और अंक प्राप्त कर स्कूल टॉपर हुआ और उसने अपने स्कूल के भी रिकॉर्ड तोड़े। रचित रांची निवासी सन्तोष अग्रवाल का पोता और आशीष मेघा का बेटा है। पूरे परिवार में खुशी का माहौल बन गया। यह एक उदाहरण इस बात का भी है कि उसने अपने परिवार वालों की सलाह पर पढ़ाई और मार्क्स का तनाव रखा ही नहीं।

सीयूजे-एमबीए में आठ छात्रों का कैंपस प्लेसमेंट

नवीन मेल संवाददाता। रांची

सीयूजे-एमबीए (व्यवसाय प्रबंधन विभाग) के 2023-25 बैच के आठ विद्यार्थियों का जीईपीएल कैपिटल में कैंपस प्लेसमेंट हुआ। एनआईएसएम और सीयूजे के बीच हुए एमओयू के तहत यह कैंपस प्लेसमेंट आयोजित किया गया था। एनआईएसएम, सेबी का एक अंग है। जिन आठ लोगों का चयन किया गया है, उनमें संगम कुमार, लक्ष्मी कुमारी, नूतन प्रभात, स्मृति, गौरव कुमार सिंह, कुंदन कुमार, सुमित कुमार कुशवाहा, मनीष कुमार महतो शामिल हैं।

कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने सारे विद्यार्थियों को बधाई दी और भविष्य में बेहतर कार्य करके विश्वविद्यालय और देश का नाम गौरवान्वित करने का आशीर्वाद दिया। डॉ नितेश भाटिया, प्लेसमेंट अफसर ने कहा कि विश्वविद्यालय का एमबीए विभाग हर साल अच्छा प्लेसमेंट देता है। इस बार भी अब तक 62 में से 34 विद्यार्थियों का चयन कैंपस प्लेसमेंट में हुआ है। इनमें से कई विद्यार्थियों का एक से अधिक कंपनियों में चयन हुआ है। प्रो डीबी लाटा, प्लेसमेंट प्रमुख ने सभी विद्यार्थियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के अलग-अलग विभागों में कई कंपनियां अब तक आई हैं। इनमें अमूल, एक्सिस बैंक, सेंट गोबैन, एचडीएफसी लाइफ, पैंटालूंस, त्रिवेणी अलमारी प्राईवेट लिमिटेड, ऐमीप्रो, लॉन्चड, प्लैनेट स्पार्क, ईएसएल वेदांता, बजाज फिनसर्व, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन आदि प्रमुख हैं।

शिक्षा क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों की भूमिका महत्वपूर्ण : डीडीसी

नवीन मेल संवाददाता। रांची

उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी, रांची मंजूनाथ भजन्त्री के निर्देश पर बुधवार को समाहरणालय ब्लॉक स्थित सभागार में उप विकास आयुक्त रांची, दिनेश कुमार यादव ने 30 अप्रैल 2025 को सेवानिवृत्त होने वाले सात शिक्षकों को ससम्मान विदाई दी। उप विकास आयुक्त (डीडीसी) दिनेश कुमार यादव ने इन सभी को ससम्मान विदाई देते हुए उन्हें आगे की जीवन की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सभी शिक्षकों से कहा कि शिक्षा क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन्हें समाज के सबसे आखिरी पायदान पर खड़े बालक को भी शिक्षित करने की जिम्मेदारी दी गई है। कहा कि सेवानिवृत्त शिक्षकों को भविष्य में अपना समय निकाल कर अपने आसपास के विद्यालयों में समय देना चाहिए। ऐसा करने से उनके अनुभवों का लाभ हमारे विद्यालयों को मिलता रहेगा। साथ ही, उनके लिए भी अपने समय का सदुपयोग होगा। मौके पर जिला शिक्षा अधीक्षक (डीएसई) बादल राज ने विभागीय निर्देश एवं उपायुक्त, रांची के सतत मार्गदर्शन में ऐसे कार्यक्रम निरंतर कराए जाने की बात कही। उन्होंने कहा कि प्रत्येक माह सेवानिवृत्त होने वाले शिक्षकों को रांची जिले से सेवानिवृत्ति के दिन ही सारी पावनाओं को भुगतान करते हुए विदा किया जा रहा है।

इन शिक्षकों को दी गई विदाई

जिन शिक्षकों को आज ससम्मान विदाई दी गई, उनमें सुमन तेरेसा तिर्की, सेवानिवृत शिक्षिका, रामवि हरमू हाउसिंग कॉलोनी, रांची, अल्का बर्गन, सेवानिवृत्त शिक्षिका, रामवि हरमू हाउसिंग कॉलोनी, रांची, परवीन अख्तर, सेवानिवृत्त शिक्षक, राप्रादि इरया उर्दू कन्या, ओरमांझी, मालती एक्का, सेवानिवृत्त शिक्षिका, रालक्ष्मी गजेंद्र मध्य विद्यालय इटकी, रांची, संजय टोप्पो, सशि राप्रावि पीपरदाग, सिल्ली, जे तोपनो, सशि मिस व्हिफम बालिका मध्य विद्यालय चुटिया, रांची एवं सुरेंद्र कुमार, सशि श्रद्धानंद सेवाश्रम मध्य विद्यालय रातू रोड रांची शामिल हैं।

अक्षय तृतीया पर बाबा श्याम को कराया गया महास्नान

नवीन मेल संवाददाता। रांची

राजधानी रांची के हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में बुधवार को विशेष दिन अक्षय तृतीया होने के करण प्रातः काल से ही भक्तों का तांता लगा रहा। अक्षय तृतीया के अवसर पर बाबा श्याम का महास्नान कराया गया। मंडल के मंत्री श्यामसुंदर शर्मा के नेतृत्व में मंदिर के आचार्य के साथ मिलकर बाबा श्याम को दूध, दही, गुलाब जल, घी के मिश्रण से महास्नान करा कर गुलाब रूह का मालिश कर वैदिक मंत्रों के साथ नवीन बागा पहनाकर फूलों की मोटी-मोटी मालाओं से सजाया गया। कोलकाता से मंगाए गए फूलों और मालाओं से बाबा श्याम के श्यामल रूप का श्रृंगार किया गया। इस अवसर पर श्रीश्याम मंदिर में बाबा श्याम का विशेष श्रृंगार करके उन्हें विभिन्न फल, ककड़ी, पंचमेवा, मिष्ठान, नमकीन, चना दाल आदि का महाप्रसाद अर्पित किया गया। आज के दिन खाटूनरेश को प्राकृतिक पंखा लगाया गया। श्रृंगार आरती में सैकड़ों भक्त उपस्थित थे। सुबह की आरती के बाद सभी भक्तों के बीच में शीतल पेय, सत्तू का वितरण भी किया गया। सभी श्याम प्रेमियों को मंदिर में चढ़े हुए फल प्रसाद एवं अन्य मेवा-मिष्ठान का वितरण किया गया। इस अवसर पर मंडल के उपाध्यक्ष श्रवण ढानढनिया, गोपाल मुरारका, श्यामसुंदर शर्मा, गौरव अग्रवाल मोनू, दिनेश अग्रवाल, कौशल चौधरी एवं सैकड़ों भक्त उपस्थित थे।

आज होगा तिलक श्रृंगार

खाटूनरेश का केसर-चंदन तिलक श्रृंगार गुरुवार (01 मई) को दोपहर के बाद किया जाएगा। भक्तगण संध्या 4:30 बजे के बाद बाबा का विशेष श्रृंगार का दर्शन कर पाएंगे। खाटूनरेश को नवीन पोशाक (बागा) पहनाकर उन्हें सुंदर फूलों के गजरा से सजाया जाएगा। ये जानकारी मंडल के मंत्री गौरव अग्रवाल मोनू ने दी।

मां अगूंठा लगाती थी और पिता केवल नाम लिख पाते थे

निचले पायदान पर खड़े लोगों का दर्द समझता हूं बखूबी : रामदास सोरेन

- पढ़ने के विषय पर समाज ने सोचा नहीं
- बस सेवा शुरू करने के सवाल को मंत्री ने भविष्य पर छोड़ा

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद् के माध्यम से सिनी द्वारा राज्यस्तरीय कार्यक्रम शिक्षा संगम 2025 का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में राज्य के शिक्षा मंत्री, रामदास सोरेन स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखंड सरकार थे। इस कार्यक्रम में सचिव स्कूली शिक्षा तथा राज्य परियोजना निदेशक सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

डा मनीषा प्रियम जो आस्ट्रेलिया के मोन्हास यूनिवसिर्टी की प्रोफेसर हैं ने कहा कि यहां सीखने आई हूं। सामान्यतः होता यह है कि मंत्री भाषण देते और चले जाते हैं दूसरे के विचारों से परीचित नहीं हो पाते। इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी बात यह है कि मंत्री ने सबकी बातों को सुना है।

वहीं टाटा ट्रस्ट की ऐजुकेशन हेड अग्रीता पटवर्धन ने कहा कि सबको मिलकर काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि राजस्थान में वीआरसी मॉडल की लाइब्रेरी है, हमें भी इस दिशा में काम करना चाहिए। समुदाय, सरकार और एजेंसी को मिलकर विकास मॉडल बनाने की बात उन्होंने कही।

स्कूली शिक्षा तथा राज्य परियोजना के निदेशक शशि रंजन ने कहा कि 36000 के आस पास स्कूल हैं कोई भी बच्चा ड्राप-आउट न हो, किसी का भी पढ़ाई न छूटे इस दिशा में कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि अपने कार्यों में सहयोग के लिए कई संस्थानों से सहयोग लेते हैं जिसमें से टाटा ट्रस्ट भी एक है।

वहीं कार्यक्रम में शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन ने कहा कि मैं गरीब परिवार से आता हूं,मां अगूंठा लगाती और पिता केवल नाम लिख पाते हैं। पढ़ाने की जगह समाज वाले सोचते थे कि कोई काम करेगा, पढ़ लिखकर क्या करेगा। वैसे समाज से निकलकर यहां तक पहुंचा हूं इसलिए निचले पायदान में खड़े लोगों का दर्द बखूबी समझता हूं। स्कूल प्रबंधन समिति प्रत्येक विद्यालय में अनिवार्य रूप से गठित होनी चाहिएः प्रबंधन समिति के अलावे गांव प्रधान, सभी समाज के उच्च लोगों से भी ड्राप आउट रेट शून्य करने का आग्रह किया।

प्रतियोगिता में झारखंड के पिछड़ने का हवाला देते हुए मंत्री रामदास ने कहा कि झारखंड से बहुत कम लोग आईएएस और आईपीएस या अन्य बड़े नौकरी में चयनित हो पाते हैं। गहराई से अध्ययन पर पाया गया है कि सीबीएसई बोर्ड की पढ़ाई से प्रतियागिता परीक्षाओं में अधिकांश प्रश्न आते हैं और झारखंड के गांव-घर के लोग यह महंगी पढ़ाई नहीं कर पाते और शिक्षा में पिछड़ जाते हैं। शिक्षा में आमूल परिवर्त्तन सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंसे ने किया है। गरीब बच्चे भी अब सीबीएसई बोर्ड की पढ़ाई कर सकेंगे इसके लिए राज्य भर में 80 स्कूल खोले गए हैं और नए स्कूल खोलने की तैयारी में हैं। कॉपी, किताब, जूता-मोजा, ड्रेस से लेकर सभी सुविधाएं निःशुल्क दिए जा रहे हैं, अच्छी गुणवत्ता की पढ़ाई पाकर गांव के गरीब, पिछड़े, आदिवासी, दलित सभी खुश हैं। सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस में बस सेवा शुरू करने के संबंध में राष्ट्रीय नवीन मेल के संवाददाता ने शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन से सवाल किया कि एक तरफ प्राइवेट स्कूल की तर्ज पर सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस में तमाम सुविधाएं दी जा रही है तो प्राइवेट स्कूलों की तरह बस सेवा भी दी जाएगी क्या। सेवा दी जाएगी तो बस भी निःशुल्क होगा? इस पर उन्होंने कहा कि आगे-आगे देखिए सरकार क्या करती है।

एक नजर

मोदी सरकार के नेतृत्व में जातीय जनगणना का निर्णय ऐतिहासिक

सिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्रीय कैबिनेट ने जनगणना में जातिगत आधारित जनगणना को भी सम्मिलित कराने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। उक्त निर्णय का भाजपा ग्रामीण जिला अध्यक्ष विनय महतो धीरज ने ऐतिहासिक करार देते हुए स्वागत किया है।जिला अध्यक्ष विनय महतो धीरज ने कहा कि ये निर्णय आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक स्तर पर पिछड़ी हुई जातियों को मुख्यधारा में लाने तथा लंबे समय से अपने हक और अधिकार से अछूते लोगों को उनका सम्मान वापस लौटाने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। कांग्रेस ने लंबे समय तक जातियों के बीच वैमनस्यता बढ़ाने तथा उन्हें वोटबैंक का साधन बनाकर अपने राजनीतिक स्वार्थ को सिद्ध किया है।

टीचर नीड्स एसेसमेंट की परीक्षा नहीं देने वालों को मिलेगा मौका

लापुंग। लापुंग प्रखंड में स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के निदेर्शानुसार टीएनए की परीक्षा का पहला चरण मंगलवार को सम्पन्न हो गया। इस मौके पर लापुंग इंटर कॉलेज के परीक्षा केंद्र में दर्जनों शिक्षक शिक्षिकाओं टीएनए की परीक्षा दी। केंद्र में बीआरपी सीआरपी की देखरेख में परीक्षा का आयोजन किया गया। पांच अलग-अलग चरणों में आयोजित परीक्षा के दौरान दर्जनों शिक्षक शिक्षिकाओं ने परीक्षा में हिस्सा लिया। सभी शिक्षक शिक्षिकाओं की परीक्षा सेंटा एप में मोबाइल और टैब के माध्यम से ऑनलाइन लिया गया। इस मौके पर बीआरपी लालकेश्वर यादव, रेशम शाहदेव, सीआरपी सुनील कुमार गुप्ता, मनोज कुमार साहु, लाल मिथिलेश कुमार सिंह, फ्रांसिस पन्ना सहित अन्य बीआरपी सीआरपी सहित परियोजना कर्मियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बच्चों को अपना समय दें अभिभावक, नहीं होगा भटकाव

खलारी। उर्सुलाइन कान्वेंट स्कूल खलारी में कक्षा सात और आठ के विद्यार्थियों के माता-पिता एवं अभिभावकों के लिए पैरेंट्स टीचर्स मीटिंग का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम प्राचार्या डा सिस्टर निर्मला सैमुअल, उप-प्राचार्या सिस्टर नेली तथा अभिभावकों द्वारा दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरूआत की गई। शिक्षक शशि कुमार ने एनईपी 2020 तथा शिक्षिका सुबीकुमारी सिंह ने अकैडमी संबंधी जानकारी दी। इसके बाद शिक्षिका नारबर्टा टोप्पो एवं शिक्षक प्रभाकर शर्मा ने अनुशासन तथा विद्यालय के नियमों से सभी का परिचय कराया। वहीं अभिभावकों ने विभिन्न प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा एवं शंकाओं का समाधान किया तथा विद्यालय की ओर से दिए गए जवाबों से पूर्णतः संतुष्ट हुए। अभिभावकों ने एकमत होकर विद्यालय द्वारा आयोजित पैरेंट्स टीचर्स मीट की प्रशंसा की तथा कहा कि बच्चों के विकास में हम सभी एक साथ हैं।

ठाकुरगांव में मंडा पूजा का आयोजन

मेला जतरा हमारी सांस्कृतिक धरोहर इसे जोड़कर रखना जरूरी : सन्नी टोप्पो

नवीन मेल संवाददाता। इटकी मांडर विधानसभा के अंतर्गत इटकी प्रखंड के ठाकुरगांव में शिव मंडा पूजा का आयोजन किया गया ,भक्ति और आस्था का परिचय देने वाला यह पारंपरिक पूजा का आयोजन हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 29 एवं 30 अप्रैल को किया गया।29 को भक्तों ने अंगारों पर चल कर भक्ति का परिचय दिया, तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं भक्ति जागरण का आयोजन किया जिसका उद्घाटन सन्नी टोप्पो एवं अन्य अतिथियों ने किया।कार्यक्रम में गायक दलजीत सिंह, चंटू शर्मा गायिका स्वीटी बंसल एवं कोमल छाया ने लोगों को गीतों पर झुमाया लोगों ने भक्ति और श्रद्धा के साथ कार्यक्रम का लुप्त उठाया,30 अप्रैल को झूलन एवं मेला का आयोजन किया जाएगा। मौके पर संबोधित करते हुए सन्नी टोप्पो ने कहा कि मेला जतरा हमारे सांस्कृतिक धरोहर हैं इससे लोग एक दूसरे से जुड़ते हैं और मेला से सामाजिक एकजुटता और सहभागिता बढ़ती है। इससे बचाकर रखना हम सबकी जिम्मेवारी है।इस आयोजन में अध्यक्ष मनोज लोहरा कोषाध्यक्ष अर्पण कुमार संरक्षक लाल रामेश्वर नाथ शाहदेव ,राजकुमार तिर्की ,देवेंद्र महतो, आयु शाहदेव, पंचम महतो, सुशील मेटल, कृष्णा तिवारी,प्रकाश महतो, जनमजय गोप, कृष्णा बर्मन, गौरव शाहदेव जीतेंद्र महतो, अश्विनी शाहदेव .. सहित समस्त क्षेत्र वासियों एवं ग्राम के युवा सहित ग्रामवासियों की सहभागिता रही।

वर्ष का दूसरा राष्ट्रीय लोक अदालत 10 को

तैयारी में जुटा डालसा

नवीन मेल संवाददाता। रांची झालसा के निर्देश पर वर्ष का दूसरा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 10 मई को होना सुनिश्चित हुआ है। राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन के लिए समझौतापूर्व बैठक 10 मार्च से शुरू हो चुका है। इसी के मद्देनजर जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के द्वारा भी तैयारी शुरू कर दिया गया है। सभी न्यायालयों से वादकारियों को नोटिस भेजने का कार्य भी शुरू कर दिया गया है। जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के कार्यरत सभी पीएलवी को अपने-अपने कार्यक्षेत्र में आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता के लिए जोर-शोर से प्रचार-प्रसार करने को कहा गया है। उन्होंने कहा कि जागरूकता कार्यक्रम के आयोजन के पश्चात ग्रामीणों व जरूरतमंदो को आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में जानकारी दें, ताकी लोग जागरूक हो, वादकारी राष्ट्रीय

जागरूकता कार्यक्रम के आयोजन के पश्चात ग्रामीणों व जरूरतमंदो को आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में जानकारी दें

लोक अदालत का फायदा उठा सके और अपने वादों का निस्तारण निःशुल्क करा सकें। ज्ञात हो कि 10 मई को आयोजित होनेवाले राष्ट्रीय लोक अदालत में आपराधिक सुलहनीय मामले, दीवानी से संबंधित मामले, श्रम से संबंधित वाद, वैवाहिक वाद, पारिवारिक वाद, उत्पाद से संबंधित मामले, चेक बाउंस के मामले, वन विभाग के मामले, बिजली से संबंधित मामले, ट्रैफिक चालान से संबंधित मामले साथ ही साथ भूमि अधिग्रहण, मोटरयान, माप-तौल से संबंधित वाद एवं वैवाहिक से संबंधित मामलों का निस्तारण मध्यस्थों व अधिवक्ताओं के माध्यम से किया जायेगा।

न्यूज बॉक्स

संविधान गौरव और संविधान बचाओ मात्र नौटंकी : नायक

रांची। आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष विजय शंकर नायक ने बुधवार को कहा कि आजाद भारत से मनमोहन सिंह के कार्यकाल तक कांग्रेस ने 80 संशोधन संविधान किए और अटल बिहारी बाजपेयी से नरेंद्र मोदी तक 24 बार संविधान में संशोधन हुए हैं। इन पार्टियों का ह्यसंविधान बचाओह्व और ह्यसंविधान गौरव आंदोलन महज एक नौटंकी है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कांग्रेस) द्वारा ह्यसंविधान बचाओ और ह्यसंविधान गौरव जैसे नारे केवल वोट की लामबंदी और जनता को भ्रमित करने की नौटंकी भर हैं। दोनों दलो ने संविधान को अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने का हथियार बना चुके हैं, जबकि उनके कार्य और इतिहास संवैधानिक मूल्यों के साथ छेड़छाड़ के सबूतों से भरे हैं। ये बातें उन्होंने कांग्रेस की ओर से 6 मई को आयोजित ह्यसंविधान बचाओ आंदोलन करने पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया में कही।

नायक ने कहा कि कांग्रेस की ह्यसंविधान बचाओह्व का ढोंग मात्र वोट पाने के लिए है। उन्होंने कहा कि ह्यसंविधान गौरवह्व का दिखावा भाजपा की नौटंकी भर है। नायक ने देश की जनता से अपील की कि भाजपा का ह्यसंविधान गौरव और कांग्रेस का संविधान बचाओ केवल वोट प्राप्त करने का एक साधन है। दोनों दल समाज को बांटकर सत्ता की मलाई खाना चाहते हैं।

राज स्पोर्ट्स बुंडू ने डीटी तमाड़ को 4 -0 से किया पराजित

तमाड़। पांच परगना का एकमात्र बहुचर्चित फुटबॉल लीग ग्रुप ए का 24वां मैच दो मजबूत टीम राज स्पोर्ट्स बुंडू और डी टी तमाड़ के बीच जी एल चर्च आमलेशा मैदान मे खेला गया। दोनों टीम बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया। राज स्पोर्ट्स बुंडू को 5वे मिनट पर पेनाल्टीक मिला जिसको गुरुवा मुंडा ने नेट पर डालकर टीम के लिए पहला गोल किया वही 30वे मिनट पर मुकेश महली ने दुसरा, 38वे मिनट पर गोखेन मुंडा ने तीसरा और अंतिम 90वे मिनट पर प्रशांत मुंडा द्वारा चौथा गोल मारकर टीम को 4 - 0 का अंतर से शानदार जीत के साथ ही राज स्पोर्ट्स बुंडू अंकतालिका मे शीर्ष पर बने हुए है। डी टी तमाड़ को भी कई बार मौका मिला लेकिन मौके फायदा नहीं उठा पाए। मैन ऑफ द मैच का खिताब अच्छा प्रदर्शन करने वाले राज स्पोर्ट्स के स्टार खिलाडी गोखेन मुंडा को पी पी एस के संरक्षक हीरालाल दास ने मेडल पहनाकर स्वागत किया। मैच का संचालन रास्ट्रीय रेफरी निशांत भेंगरा, करम मुंडा और महावीर पुराण ने किया। लीग का 25वा मैच ग्रुप बी रॉयल एफ सी और एफ सी हेमरम के बीच 01/05/2025 दिन बृहस्पतिवार सुबह 7 बजे खेला जायेगा।

समावेशी विकास के लिए जाति जनगणना स्वागत योग्य : संजय सेठ

रांची। जनगणना करवाने का निर्णय का केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ ने स्वागत किया है । रक्षा राज्य मंत्री श्री सेठ ने कहा यह वंचित वर्ग तक उनका वास्तविक अधिकार पहुँचाने में सहायक होगी तथा देश के सामाजिक और आर्थिक ढांचे को मजबूती प्रदान करेगी।आजादी के इतने वर्षों के बाद भी कभी कांग्रेस ने जाति जनगणना नहीं करवाई और केवल जातिगत राजनीति करती रही, जबकि मोदी सरकार हर वर्ग का अधिकार सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस निर्णय के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रति आभार प्रकट करता हूं।इस जनगणना का उपयोग सरकार, नीति निमार्ताओं, शिक्षाविदों और अन्य लोगों द्वारा भारतीय आबादी का आकलन करने, संसाधनों तक पहुँच बनाने, सामाजिक परिवर्तन की रूपरेखा तय करने और परिसीमन अभ्यासों के लिये किया जाएगा। इसका लाभ समाज के उस बड़े तबके को मिलेगा जो अब तक वंचित है। समावेशी विकास के लिए जाति जनगणना स्वागत योग है इससे संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित होगा।

वरिष्ठ डाकपाल सिद्देश्वर गोराई हुए सेवा निवृत्ति

रांची। रांची प्रधान डाकघर के वरिष्ठ डाकपाल सिद्देश्वर गोराईं ने सेवा निवृत्ति ग्रहण की। झारखंड राज्य के डाक विभाग में दशकों तक अपनी सेवा देकर उन्होंने न सिर्फ प्रशासनिक कार्यों में उत्कृष्टता प्राप्त की, बल्कि हजारों कर्मचारियों और आम जनता के दिलों में एक विशेष स्थान बना लिया। उन्होंने डाक सेवाओं के आधुनिकीकरण, कर्मचारियों के कल्याण, सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन और संकट के समय (विशेषकर कोरोना काल) में अद्भुत नेतृत्व से एक प्रेरणास्पद उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके मार्गदर्शन में रांची जीपीओ ने अनेक उपलब्धियाँ हासिल कीं, और वे हमेशा एक कर्मठ, विनम्र और संवेदनशील अधिकारी के रूप में याद किए जाएंगे। सभी की कामना थी कि उनका आगे का जीवन भी उतना ही गौरवपूर्ण और सुखमय हो जितना उनका सेवाकाल रहा है।

स्कूटी की डिक्की से अफीम बरामद, एक गिरफ्तार

खूंटी। बुधवार को गुप्त सूचना के आधार पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी खूंटी के नेतृत्व में अड़की थाना सशस्त्र बल के द्वारा मारंगबुरु राजा बाजार सड़क पर वाहन चेंकिग अभियान चलाया गया। जिसमें एक स्कूटी सवार व्यक्ति दुगा गुंडा उर्फ दुगा टुटी पे०-चंबरा मुंडा सा०-रायतोडांग भुसुटोला थाना अड़की जिला खूंटी को उसकी स्कूटी के डिक्की में रखे 1.024 कि० ग्रा० अवैध अफीम के साथ गिरफ्तार किया गया है। अड़की थाना में सुसगत धाराओ के तहत कांड दर्ज कर अग्रत्तर कार्रवाई की जा रही है।

श्रीलक्ष्मी वेंकटेश्वर मंदिर में वैशाख शुक्ल तृतीया पर महाभिषेक कराया गया

रांची। दिव्यदेशम श्रीलक्ष्मी वेंकटेश्वर (तिरुपति बालाजी) मंदिर में वैशाख शुक्ला तृतीय तिथि के पावन त्योहार को ले पद्मावतीवल्लभ श्रीनिवास भगवान समेत श्रीश्रीदेवी, श्रीभूमि देवी एवं भगवान के उत्सव विग्रह, भोग विग्रह और श्रीपति (शालीग्राम) भगवान सहित चक्रराज सुदर्शन का दूध ,दधि, हरिद्राचूर्ण,चंदन ,शहद,गंगाजल, केसर और डाभयुक्त जल से क्रमानुसार महाभिषेक कराया गया । इसके बाद रोज-रोज उत्सव दर्शनार्थ आए हुए मनुष्यों पर ही नहीं देवताओं आदि पर भी अनुग्रह बरसाने वाले भगवान श्रीमन्नारायण दंपति को वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके दिव्य सुवासित पुष्पों के समुदाय से भव्य श्रृंगार निवेदन हुआ। फिर अपने भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए आकुल रहने वाले भगवान का सत्ताइस दीपों के प्रकाश पुंज से युक्त नक्षत्र आरती , कुम्भ आरती और कर्पूर की बाती से महाआरती हुई। तदनंतर प्रार्थी लोगों के अभीष्ट पूर्ण करने वाले भगवान का देशिक स्तोत्राणि, उपनिषद और श्रुतिसम्मत स्तुतियों से स्तवन किया। सूजी का हलवा , आलू पकोड़ा, फल और मेवा का बालभोग लगा ।

चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का एक शिष्टमंडल राज्यपाल से की मुलाकात

शिष्टमंडल ने इसे मानवता के विरुद्ध एक जघन्य अपराध बताया

नवीन मेल संवाददाता। रांची राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से बुधवार को फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का एक शिष्टमंडल ने राज भवन में मुलाकात्त की। शिष्टमंडल ने भेंट के क्रम में हाल ही में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले की कड़ी निंदा की। शिष्टमंडल ने इसे मानवता के विरुद्ध एक जघन्य अपराध बताते हुए कहा कि यह न केवल कश्मीर में शांति एवं पर्यटन को बाधित करने का कुत्सित प्रयास है, बल्कि वहां के स्थानीय लोगों की आजीविका पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला है। ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया कि अनुच्छेद 370 के हटने के बाद से जम्मू-कश्मीर में पर्यटकों की संख्या में ऐतिहासिक वृद्धि हुई थी। इस हमले से कश्मीर के पर्यटन विकास के साथ-साथ इस सेक्टर से जुडे लोगों की आजीविका भी प्रभावित हुई है। शिष्टमंडल ने इस सुनियोजित आतंकी घटना में शामिल दोषियों एवं उनके सहयोगियों के विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई की बात कही। शिष्टमंडल ने राज्य की गिरती विधि-व्यवस्था की ओर भी राज्यपाल महोदय का ध्यान आकृष्ट कराया।

स्वतंत्रता सेनानी परिवार ने अपनी मांगों को लेकर राज्यपाल को सौंपा ज्ञापन

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से बुधवार को स्वतंत्रता सेनानी परिवारगण का एक शिष्टमंडल ने राज भवन में भेंट की तथा विभिन्न मांगों से संबंधित एक ज्ञापन सौंपा। शिष्टमण्डल ने कहा कि वे लोग स्वतंत्रता संग्राम के शहीद के परिवार से आते है और उनके पूर्वज देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में सन् 1857 ई. भारतीय प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में झारखण्ड से मुख्य भूमिका निभाई थी। वे लोग कई समस्याओं से जुझ रहे हैं। ज्ञापन में स्वतंत्रता सेनानी आयोग का गठन करने, स्वतंत्रता संग्राम के परिवारों को निःशुल्क शिक्षा, स्वास्थ्य सरकार की ओर से उपलब्ध कराने, स्वतंत्रता संग्राम के परिवारों को जीवनयापन के लिए सम्मानजनक पेंशन देने आदि विभिन्न मांगों का उल्लेख किया गया।

झारखंड राज्य ग्राम प्रधान संघ का एक शिष्टमंडल राज्यपाल से मिला

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से बुधवार को झारखण्ड राज्य ग्राम प्रधान संघ का एक शिष्टमंडल ने राज भवन में भेंट की तथा राज्य में पेशा एक्ट लागू कर ग्राम सभा/ ग्राम प्रधानों को शशक्त करने के संबध में ज्ञापन समर्पित किया। ज्ञापन के माध्यम से ग्राम प्रधानों को दी जाने वाली सम्मान राशि में वृद्धि कर नियमित रूप से इसे प्रदान करने का आग्रह किया गया।

दक्षिणी छोटानागपुर मांडर का एक शिष्टमंडल राज्यपाल से की मुलाकात

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से आज ग्राम सभा (खुखरा परगणा परंपरागत पड़हा), दक्षिणी छोटानागपुर मांडर, रांची का एक शिष्टमंडल ने राज भवन में भेंट की तथा 13 अप्रैल 2025 से झारखण्ड राज्य के भीतर अनुसूचित क्षेत्रों (राज्य) में पांचवीं अनुसूची प्रशासन और नियंत्रण करने के लिए ज्ञापन समर्पित किया।

एक राष्ट्र एक चुनाव विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन

मांडर । दयानंद आर्य विद्या पब्लिक स्कूल मांडर में 'एक राष्ट्र एक चुनाव' विषय पर बुधवार को विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्वलन कर किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए पूर्व विधायक गंगोत्री कुजूर ने कहा कि लोकसभा और विधानसभा का चुनाव एक साथ करने से बहुत सारे खर्चों से बचा जा सकता है। साथ ही जो प्रशासनिक गतिविधियां होती है उनमें भी आसानी होती है। बार बार आचार संहिता लगने से जनहित से जुड़े मुद्दे को भी करने में परेशानी होती है। एक साथ चुनाव होने से इन सब परेशानियों से बचा जा सकता है। वहीं निदेशक राजेश दत्त ने भी कहा कि एक ही साथ चुनाव करने को लेकर के लोगों में जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष आरती कुजूर, नेहा सिंह, राम बालक ठाकुर ने भी अपने विचार रखा। कार्यक्रम का संचालन रेहाना ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रज्ञा भारती तथा डॉ राजेश दत्त ने किया।

समर्पण और सेवा के गौरवशाली सफर को सलाम

आप सभी का योगदान अविस्मरणीय है : मिश्र

नवीन मेल संवाददाता

रांची। सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) के मुख्यालय में बुधवार को एक भव्य ह्यसम्मान समारोहह्व का आयोजन किया गया। इसमें अप्रैल 2025 में सेवानिवृत्त होने वाले 74 कर्मियों को सम्मानपूर्वक विदाई दी गई। इनमें मुख्यालय में कार्यरत सात कर्मी, कुणाल, मुख्य प्रबंधक (खनन), खनन विभाग, राम कुमार सिंह, मुख्य प्रबंधक (खनन), वन विभाग, अरुण कुमार श्रीवास्तव, कार्यालय अधीक्षक, सुरक्षा एवं बचाव विभाग, तारा कुजूर, मैट्रन, गांधीनगर अस्पताल, श्याम सुंदर माजी, वरीय डीईओ, मार्केट एंड सेल्स विभाग, सेख तोफिर, कूक, वेलफेयर कैंटीन एवं जयंती चौधरी, जूनियर डीईओ, सिक्योरिटी विभाग भी शामिल थे। समारोह में सीसीएल के निदेशक (मा.सं.) हर्षनाथ मिश्र एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी पंकज कुमार

❑ सीसीएल ने सेवानिवृत्त कर्मियों को दी भावभीनी विदाई

विशेष रूप से उपस्थित रहे। साथ ही, विभिन्न विभागों के महाप्रबंधक, अधिकारी, कर्मचारी एवं सेवानिवृत्त कर्मियों के परिजन भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण एक शॉर्ट फिल्म रही, जिसमें सेवानिवृत्त कर्मियों के कार्यकाल की झलकिया, उनके अनुभव एवं योगदान को दशार्या गया। इस फिल्म में सेवानिवृत्त कर्मियों ने अपनी कार्ययात्रा साझा करते हुए सीसीएल परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया और कंपनी की निरंतर प्रगति की कामना की। निदेशक (कार्मिक) हर्षनाथ मिश्र ने अपने संबोधन में कहा कि सेवानिवृत्त कर्मी हमारे संगठन की आधारशिला रहे हैं। वर्षों के कठिन परिश्रम, समर्पण और निष्ठा से इन्होंने सीसीएल को ऊंचाइयों तक पहुंचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आप सभी का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। आपकी कार्यकुशलता और अनुभव ने इस संगठन को मजबूत किया है। सेवानिवृत्ति केवल एक औपचारिकता है, लेकिन आप सभी सीसीएल परिवार का अभिन्न अंग बने रहेंगे। हम आपके सुखद, स्वस्थ एवं समृद्ध भविष्य की कामना करते हैं। मुख्य सतर्कता अधिकारी पंकज कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, मैं आज एक भावुक क्षण का साक्षी हूं, क्योंकि हमारे बीच से वे साथी सेवानिवृत्त हो रहे हैं, जिनके साथ हमने दशकों तक कंधे से कंधा मिलाकर काम किया है। आपकी मेहनत, प्रतिबद्धता और लगन ने कंपनी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपकी नई यात्रा सुखद एवं समृद्ध हो। सेवानिवृत्त कर्मियों को स्मृति चिह्न एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया।

झारखंड आंदोलनकारियों की मान्यता रद्द हो : डॉ. सूरज

नवीन मेल संवाददाता। रांची बुधवार को पूर्व सांसद, पूर्व जैक उपाध्यक्ष, झारखण्ड मजदूर मोर्चा के अध्यक्ष, भाजपा नेता और अखिल भारतीय सम्पूर्ण क्रांति राष्ट्रीय मंच के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. सूरज मंडल ने कहा है कि कठिन संघर्ष के बाद अलग झारखण्ड प्रदेश का गठन किया गया और इसकी पृष्ठभूमि में अनेक आंदोलनकारियों का सक्रिय योगदान है. लेकिन वर्तमान सरकार जिस रूप में झारखण्ड आंदोलनकारी चिन्हितिकरण आयोग के माध्यम से जिस अवान्छित तरीके आंदोलनकारियों की पहचान कर रही है उससे एक आंदोलनकारी होने के नाते उनके मन में गंभीर चिन्ता है. राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार के साथ आज राजभवन में डॉ. मंडल ने एक प्रतिनिधि मंडल के साथ मुलाकात की. डॉ. मंडल ने इस संदर्भ में उन्हें एक ज्ञापन एक सौंपा. अपने ज्ञापन में पूर्व सांसद डॉ. मंडल ने मांग की है कि झारखण्ड राज्य आंदोलनकारी चिन्हितिकरण आयोग में नरसिंह मुर्मू और भुवनेश्वर महतो सदस्य हैं और इन दोनों की एक समिति भी काम कर रही है जो किसी व्यक्ति की पहचान कर उसे आंदोलनकारी होने का प्रमाण पत्र देती है जिसके आधार पर उन्हें सरकार की ओर से पेंशन एवं अन्य सुविधायें दी जाती है. इसके अतिरिक्त पुष्कर महतो के द्वारा भी आंदोलनकारियों को ऐसा ही प्रमाण पत्र निर्गत किया जा रहा है. डॉ. मंडल ने कहा कि इन सभी लोगों के द्वारा जिन लोगों को तथाकथित आंदोलनकारी होने के मामले में जिस प्रकार से अपेक्षित अहताओं और सभी प्रक्रियाओं को नजरअंदाज कर मान्यता दी जा रही है वह गंभीर चिंता और अफसोस की बात है.

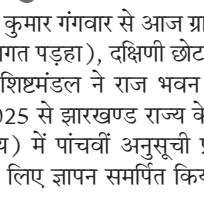

झारखंड टीम के खिलाड़ियों ने पोल पिरामिड का किया निर्माण

नवीन मेल संवाददाता। रांची खेलकूद एवं युवा कार्य निदेशालय , झारखंड सरकार एवं झारखंड राज्य मलखंब एसोसिएशन के तत्वावधान में आठ दिवसीय खेलो इंडिया यूथ गेम्स के तहत झारखंड मलखंब टीम का प्रशिक्षण शिविर बी.एस.पी.उच्च विद्यालय, सेक्टर-2,धुर्वा ,राँची में आयोजित हो रहा है। प्रशिक्षण शिविर के छठे दिन झारखंड टीम के बालक-बालिका द्वारा कई आकर्षक पिरामिड का निर्माण किया गया। प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए सभी खिलाड़ियों को पोल मलखंब, रोप मलखंब, हैंगिंग मलखंब और पिरामिड निर्माण का अभ्यास कराया जा रहा है। प्रशिक्षण शिविर के दौरान सहायक प्रशिक्षक निखिल कुमार, दिव्या कुमारी एवं शुभम सिंह का अहम योगदान दे रहें हैं। झारखंड बालक-बालिका मलखंब टीम की घोषणा खेलों इंडिया यूथ गेम्स झारखंड के नोडल पदाधिकारी सह जिला खेल पदाधिकारी, चतरा श्री तुषार राय एवं झारखंड राज्य मलखंब एसोसिएशन के महासचिव डॉह्व अजय झा ने संयुक्त रूप से किया। झारखंड मलखंब टीम खेलों इंडिया यूथ गेम्स-2025 में खेलने के लिए 3 मई को राँची से गया (बिहार) के लिए प्रस्थान करेगी। गया में यह प्रतियोगिता 5 मई से 8 मई तक आयोजित होगी।

झारखंड बालक-बालिका मलखंब टीम इस प्रकार है :

बालक वर्गः- रोहण कुमार (कप्तान), आर्यन महतो (उपकप्तान) ,सत्यवीर कुमार दास, रणवीर कुमार दास,संदीप कुमार गोप, बिबेक गोराई । प्रशिक्षकः- निखिल कुमार बालिका वर्गः- अमिका कुमारी (कप्तान) , हंसिका कुमारी (उपकप्तान) , अन्नु कुमारी, लवली कुमारी, गुड़िया कुमारी, अनुराधा कुमारी।

एक नजर

विधायक ने गिद्दी कुजू सड़क निर्माण कराने की मांग की

गिद्दी। मांडू विधायक निर्मल महतो उर्फ तिवारी महतो ने बुधवार को गिद्दी नया मोड़ कुजू सड़क निर्माण करने की मांग की है। विधायक निर्मल महतो उर्फ तिवारी महतो ने बुधवार को पथ निर्माण विभाग प्रधान सचिव रांची से मिलकर मांग किया। विधायक तिवारी महतो ने पथ निर्माण विभाग प्रधान सचिव को बताया गिद्दी नया मोड़ कुजू सड़क का निर्माण होने के बाद कभी मरम्मत नहीं किया गया है। जिसके कारण सड़क में अनेकों बड़े बड़े गढ्ढे हो गए हैं जिससे वहनों के आवागमन में परेशानी होती है। साथ ही बाइक सवार के हमेशा दुर्घटनाग्रस्त होने का भय बना रहता है। इसलिए इस सड़क का अतिशीघ्र निर्माण कराया जाए। माडू विधायक ने बताया वार्ता के दौरान पथ निर्माण विभाग प्रधान सचिव ने सड़क निर्माण कराए जाने का आश्वासन दिया है।

विश्व कल्याण तभी होगा जब गौ माता की सेवा करें: राहुल

रामगढ़। मारवाड़ी युवा मंच रामगढ़ कैंट शाखा की ओर से बुधवार को बारह महीने बारह कार्यक्रम के अंतर्गत रामगढ़ गौशाला में गौवंशों को गुड लपसी एवं हरा चारा खिला कर गौसेवा का कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम से पूर्व युवा मंच के सदस्यों ने गौ माता को पुष्पार्पण कर पूजन किया। साथ ही गौ माता की परिक्रमा की। इस कार्यक्रम के बतौर संयोजक रौनक अग्रवाल, रितिक परसरामपुरिया व साकेत चौधरी थे। उन्होंने बताया भारतीय संस्कृति में गाय को माता कहा गया है। उन्हें समस्त शुभ कार्यों एवं धार्मिक कृत्यों की सम्पूर्ति में सहायक माना गया है। अध्यक्ष धीरज बंसल व सचिव श्रींजय मेवाड़ ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के गाय प्रेम को सभी भारतवासी अच्छी तरह से जानते हैं।

गोला पॉलिटेक्निक कॉलेज में कैंपस प्लेसमेंट का आयोजन

गोला। गोला पॉलिटेक्निक कॉलेज में मंगलवार को प्रेमसंस मोटर उद्योग प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मैकेनिकल, ऑटोमोबाइल और इलेक्ट्रिकल डिप्लोमा इंजीनियरिंग के छात्रों के लिए कैंपस प्लेसमेंट का आयोजन किया। जिसमें 50 छात्रों में दर्जन भर छात्रों का कैंपस प्लेसमेंट किया गया। कंपनी के लोगों ने बताया कि प्रेमसंस मोटर झारखंड की एक प्रतिष्ठित ऑटोमोबाइल सर्विस प्रोवाइडर कंपनी है। जिसमें दो हजार से ज्यादा कर्मचारी कार्यरत हैं। इस प्लेसमेंट ड्राइव में मैकेनिकल में बादल कुमार यादव, ऑटोमोबाइल में दो राहुल कुमार व चांद सेन और इलेक्ट्रिकल के आठ मुस्कान कुमारी, अम्बिका भारती, मो अरशद, राहुल कुमार, अभिषेक राज, सत्यम कुमार, रोशन कुमार, आयुष रंजन सहित ग्यारह छात्रों का चयन किया गया।

सीआरसी कन्या मध्य विद्यालय में संकुल स्तरीय बैठक का हुआ आयोजन

विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों पर की गई चर्चा

नवीन मेल संवाददाता। बरकट्ठा प्रखंड अंतर्गत संकुल संसाधन केंद्र राजकीय कन्या मध्य विद्यालय बरकट्ठा में बुधवार को संकुल स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। इस निमित संकुलाधीन विद्यालय के शिक्षकों ने भाग लिया। बैठक का आयोजन संकुल संचालक महेश प्रसाद चौधरी की देखरेख में किया गया तथा संचालन संकुल साधन सेवी रामकृष्ण पांडेय ने किया। वहीं विद्यालयों में संचालित विभिन्न गतिविधियों पर विस्तृत चर्चा की गई। मौके पर उपस्थित संकुल संचालक महेश प्रसाद चौधरी ने बैठक में सर्वप्रथम पहलगाम हमले में शहीद हुए भारत के वीर सपूतों की आत्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन रखवाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा सभी उपस्थित शिक्षकों से हर माह बैठक में ससमय उपस्थित होने का आग्रह किया। तत्पश्चात विषय वस्तु में प्रवेश करते हुए रूम टू रीड के प्रखंड समन्वयक मनीष कुमार लाल ने ज्ञानसेतु तथा नूपुर, एसए2,कक्षा वन और टु में बचे हुए सप्ताह की रणनीति, फ्लिपबुक का प्रयोग, कक्षा रूटीन, पुस्तकालय आदि पर चर्चा कर शिक्षकों को आवश्यक जानकारी दी। सीआरपी रामकृष्ण पांडेय ने स्कूल रुआर कार्यक्रम पर विस्तृत चर्चा किया तथा असेंबली के विषय वस्तु पर जानकारी साझा करते हुए कहा कि विभाग द्वारा प्रतिदिन व्हाट्सएप के माध्यम से असेंबली के विषय वस्तु भेजे जाते हैं ,जिन्हें हर हाल में प्रति विद्यालय को असेंबली सभा में बच्चों के साथ साझा किया जाना आवश्यक है। बैठक में शिक्षक छत्रु राम महतो, मधु लाल यादव ,रामचंद्र साव,संजय कुमार, तुलसी प्रजापति, सुखदेव नायक,कविता कुमारी, गौतम सिंह, शिवराम मांझी, प्रभु सिंह, चरका टुडू, अनिल कुमार सेमत दर्जनों शिक्षक उपस्थित थे।

पीसीसी पथ निर्माण कार्य का शिलान्यास

गिद्दी। बड़का चुम्बा उच्चरिंगा में बुधवार को पीसीसी पथ निर्माण कार्य का शिलान्यास किया गया। बतौर मुख्य अतिथि जिप सदस्य दयावंती देवी, ज्योतेन्दर प्रसाद, मुखिया राजेंद्र प्रसाद, पंसस मनोज कुमार ने पीसीसी पथ का संयुक्त रुप से शिलान्यास किया। यह पीसीसी पथ जिला परिषद मद से कालि चरण महतो के घर से संजय महतो के घर तक बनेगा। इस अवसर पर योगेन्द्र रजक, तुलसी प्रसाद, हरेंद्र प्रसाद, मछिंद्र प्रसाद, रामचंद्र महतो, सुदामा प्रसाद, सरजू महतो, विरेंद्र महतो, छुनू प्रजापति, जगदेव महतो, मुकेश महतो, प्रकाश महतो, कालिचरण महतो, हरि महतो उपस्थित थे।

न्यूज बॉक्स

मंडा पूजा झारखंड की सांस्कृतिक की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है : रमेश कुमार

रामगढ़। रामगढ़ जिला के रामगढ़ प्रखंड अंतर्गत रामगढ़ ग्रामीण के गंडके गांव में मंडा पूजा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 1 मई को होना सुनिश्चित हुआ है । झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के प्रदेश मीडिया प्रभारी रमेश कुमार महतो ने कहा कि यह गांव मेरा पैतृक गांव है । इस गांव में मंडा पूजा बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। मंडा पूजा एक अनोखी और पारंपरिक पूजा है। जो झारखंड की संस्कृति और धार्मिक आस्था का प्रतीक है। मंडा पूजा की सबसे खास बात यह है कि भक्त भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए जलते अंगारों पर चलते हैं। जो भक्त अंगारों पर चलने के लिए तैयार होते हैं उन्हें भोक्ता कहा जाता है। मंडा पूजा के दौरान भक्त निर्जला उपवास रखते हैं। भक्त उस पूजा के दौरान भगवान शिव से मन्नते मांगते हैं। मंडप पूजा एक सामुदायिक उत्सव है, जिसमें लोग एक साथ मिलकर भगवान शिव की आराधना करते हैं ।मंडा पूजा झारखंड की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मंडा पूजा को सफल बनाने के लिए सर्वसम्मति से कमेटी का गठन किया गया है। जिसमें अध्यक्ष पद के लिए अरविंद मुंडा, सचिव चंद्रमोहन महतो उपाध्यक्ष शंकर भोक्ता, कोषाध्यक्ष होरिल महतो,उप सचिव योगेंद्र भोक्ता,उप कोषाध्यक्ष जयराम महतो,संरक्षक जतरू महतो, प्रयाग महान ,गिरधारी भोक्ता, मायाराम महतो,प्रदीप महतो को बनाया गया है। जबकि कार्यकारिणी सदस्य के रूप में राजेश महतो, हीरालाल महतो, संजय महतो, विनय महतो, विजय महतो, केदार महतो ,मनोज महतो को शामिल किया गया है।

लोकल सेल मजदूरों की लड़ाई को तेज करने का किया आह्वान

गिद्दी। भाकपा माले ने लोकल के मजदूरों की लड़ाई को तेज करने का आह्वान किया है। भाकपा माले के नेताओं ने बुधवार को रेलीगढ़ा में लोकल सेल संचालन समिति के मजदूरों के सभा को संबोधित करते हुए आह्वान किया है। भाकपा माले नेता पच्चू राणा, आरडी मांझी, राजेंद्र गोप आदि ने सभा संबोधित करते हुए कहा रेलीगढ़ा कोलियरी प्रबंधन क्षेत्रीय प्रबंधन के सोची समझी रणनीति के तहत ईऑक्शन का डीओ नहीं लगाकर यहां रोड सेल में काम करने वाले 248 दंगल के मजदूरों के रोजगार छीनने का कार्य कर रहा है। नेताओं ने कहा क्षेत्रीय प्रबंधन रेलीगढ़ा ईऑक्शन का डीओ नहीं लगा कर मजदूरों के रोजी रोगजगार छीनने की शुरूआत किया है। इसके बाद क्षेत्र के अन्य कोलियरी के रोड सेल में भी ईऑक्शन का डीओ नहीं लगा कर वहां सेल में कार्यरत मजदूरों को रोजगार छीनने का कार्य करेगा। इसलिए क्षेत्र के सभी कोलियरी के रोड सेल के मजदूरों को एकजूट होकर आंदोलन करना होगा। सभा की अध्यक्षता सुंदरलाल बेदिया ने की। सभा में आरडी मांझी, राजेन्द्र गोप, पचु राणा, अशोक गुप्ता, शइद अंसारी, अमृत राणा, इस्लाम अंसारी, मनीश किस्कू, राम किशुन मुर्मू आजाद अंसारी, गोपाल राम, हरी प्रसाद, महेश बेदिया, फागू बेदिया, कैलाश महतो, जैनुल अंसारी, हरखू बेदिया, धनराज महतो, कजरी देवी, उमेश राम, तूफानी राम आदि उपस्थित थे। इधर रेलीगढ़ा में भाकपा माले के नेतृत्व में लोकल सेल संचालन समिति का चक्का जाम आंदोलन पांचवे दिन भी जारी है।

टाटा स्टील वेस्ट बोकारो का अत्याधुनिक फायर स्टेशन बनकर तैयार

रामगढ़। टाटा स्टील वेस्ट बोकारो डिवीजन में अत्याधुनिक फायर स्टेशन बनकर तैयार है. घाटो थाना के समीप लाल और नीले ईंटों से बना फायर स्टेशन भवन न केवल वास्तुकला की दृष्टि से विशेष है, बल्कि सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है. पुराना फायर स्टेशन को स्थानांतरित करने का निर्णय इसलिए लिया गया क्योंकि इसका पुराना स्थान क्वैरी एबी के पास था, जो अब एक सक्रिय खनन क्षेत्र के रूप में विकसित किया जा रहा है. करीब 1,600 वर्ग मीटर में फैले इस आधुनिक फायर स्टेशन में वह सभी सुविधाएं मौजूद हैं, जो किसी भी आपात स्थिति में त्वरित और प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करती हैं. इसमें फायर टेंडर पार्किंग व रिफिलिंग स्टेशन, अत्याधुनिक कंट्रोल रूम, प्रभारी अधिकारी का कार्यालय, अग्निशमन उपकरणों का संग्रहण केंद्र, 30 कर्मियों के लिए डॉर्मिट्री तथा एक सुव्यवस्थित किचन व डाइनिंग एरिया शामिल हैं. रणनीतिक रूप से चुने गए इस नए स्थान से फायर यूनिट वेस्ट बोकारो के किसी भी क्षेत्र तक केवल 10 मिनट में पहुंच सकती है. यह स्टेशन दो शक्तिशाली फायर टेंडरों से सुसज्जित है, जिनमें प्रत्येक की क्षमता 5000 लीटर पानी और 500 लीटर मैकेनिकल फोम की है.

पैसे के अभाव में अब खिलाड़ी नहीं रहेंगे पीछे

जिले के सभी खिलाड़ियों को मिलेगा प्रोत्साहन : उपायुक्त

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़ जिले के खिलाड़ियों को खेल के क्षेत्र में बढ़ावा देने के उद्देश्य से उपायुक्त चंदन कुमार ने की बड़ी पहल जिला अन्तर्गत खिलाड़ियों को चिन्हित कर सीएसआर मद से खेल सामग्री/खेल कीट/अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने का दिया निर्देश। उपायुक्त चंदन कुमार ने कहा कि वैसे खिलाड़ी जो अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के किसी भी स्पर्धा/प्रतियोगिता में चयनित होते हैं लेकिन पैसे के अभाव में भाग नहीं ले पाते हैं उन खिलाड़ियों को बढ़ावा देने के लिए खिलाड़ियों को आने-जाने के लिए आर्थिक मदद भी सीएसआर से उपलब्ध कराया जाएगा। इसी के तहत खेल पदाधिकारी रामगढ़ मारकस हेमरोम द्वारा पत्र जारी कर रामगढ़ जिला के सभी खिलाड़ियो को सूचित किया कि जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय/भारतीय ओलंपिक संघ से मान्यता प्राप्त खेलों में विगत पांच वर्ष (2021 से 2025) में अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय स्तर खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिये हो एवं वर्त्तमान मे खेल रहे है। वैसे सभी खिलाड़ी योजना का लाभ लेने हेतु जिला एनआईसी के वेबसाइटएचटीटीपी:/ /रामगढ़.एनआइसी.इन पर आवेदन फॉर्म प्राप्त कर सकते हैं। खिलाड़ी आवेदन पत्र के साथ अपनी सम्पूर्ण विवरणी, सर्टिफिकेट, आधार/आवासीय प्रमाण पत्र आदि) को जिला खेल कार्यालय, समाहरणालय, भवन ए- ब्लॉक, द्वितीय तल कमरा सं0- 303 छत्तरमाण्डू, रामगढ़ अथवा ईमेलआउडी रामगढ़-स्पोर्टस झारखंडमेल. गोव.इन, डीएसओरामगढ़ 48 जेमेल.कॉम पर उपलब्ध करायेंगे। ताकि खिलाड़ियों को जिला प्रशासन रामगढ़ के द्वारा सीएसआर मद से खेल सामग्री/खेल कीट/अन्य सुविधाएं उपलब्ध करायी जा सकें। अधिक जानकारी के लिए विकास कुमार गोप, जिला खेल समन्वयक के मोबाईल नं0-7484914066 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

चतुर्थ पुण्यतिथि पर समाजसेवी अजय साहू को दी गई भावपूर्ण श्रद्धांजलि

रामगढ़। स्वर्गीय अजय साहू के स्मृति में शहर के डिवाइन ओंकार मिशन के प्रांगण में प्रत्येक माह की तीस तारीख को पिछले चार साल से लगातार अटूट लंगर सह प्रसाद का कार्यक्रम चल रहा है। डिवाइन ओंकार मिशन के प्रांगण में स्वर्गीय अजय साहू के तैल चित्र पर उनकी चतुर्थ पुण्यतिथि पर 30 अप्रैल को पुष्पांजलि अर्पित कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम में डिवाइन ओंकार मिशन के सचिव राजेश नेगी, अमित साहू, सरोज साहू, कुमार अक्षत साहू, गीता कुमारी, हसनैन बारसी, समेत अनेकों गणमान्य लोग शामिल हुए ।

युवा आजसू नेता ने विदेश मंत्रालय को लिखा पत्र, गुमशुदा मजदूरों को वापसी की मांग की

बरही। नाइजर में फंसे बगोदर के 5 मजदूरों की सकुशल वापसी को लेकर युवा आजसू नेता सह हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के संजय मेहता ने विदेश मंत्रालय को पत्र लिखा है.पत्र में उन्होंने मंत्रालय से झारखंड के गिरिडीह जिलांतगर्त बगोदर क्षेत्र के पांच मजदूरों का पश्चिमी अफ्रीका के नाइजर में आतंकवादियों द्वारा अपहरण करने का जिक्र किया है. जिन्हे सुरक्षित अपने वतन व घर लाने की मांग किया है. इस संबध में श्री मेहता ने भारत सरकार के विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर और नाइजर में भारत के राजदूत सीता राम मीना को पत्र लिखकर त्वरित कार्रवाई की मांग की है. अपने पत्र में उन्होंने जानकारी दी है कि 25 अप्रैल 2025 को नाइजर की राजधानी नियामे से लगभग 115 किलोमीटर दूर तिल्लाबेरी में आतंकवादियों ने एक पावर ट्रांसमिशन साइट पर हमला किया. इसमें 12 सुरक्षाकर्मियों की जान चली गई और बगोदर के पांच मजदूर संजय महतो, चंद्रिका महतो, फलजीत महतो, राजू कुमार और उत्तम महतो का अपहरण कर लिया गया. ये सभी मजदूर कल्पतरु प्रोजेक्ट्स इंटरनेशनल लिमिटेड (केपीआईएल) में कार्यरत थे. उन्होंने पत्र के साथ सभी मजदूरों के पासपोर्ट विवरण और संपर्क जानकारी भी मंत्रालय को उपलब्ध करवाया है।

पायल कुमारी ने आत्मदाह कर आत्महत्या करने का प्रयास किया था

रामगढ़। रामगढ़ के महिला थाना में दर्ज कांड संख्या 6/25 की पीड़ित (आवेदिका) पायल कुमारी ने 25 अप्रैल को आत्मदाह कर आत्महत्या का प्रयास किया था। पायल कुमारी ने रिम्स में इलाज के दौरान तनाव में जाकर तेल छिड़क कर खुद को आग लगाने की बात बताई। पायल कुमारी के घर वाले भी पेट्रोल छिड़क कर आग लगाने की बात कह रहे हैं। पायल की मेडिकल रिपोर्ट कुछ अलग ही कहानी बयां कर रही है। वहीं पायल का इलाज करने वाले डॉक्टरों का आग लगने के संदर्भ में अलग राय है। पायल कुमारी को सबसे पहले परिजन इलाज के लिए नई सराय के सीसीएल अस्पताल ले गए थे। जहां पायल का इलाज करने वाले डॉक्टर ने प्रिस्क्रिप्शन (इलाज पर्ची) में कुकिंग गैस से पायल के जल जाने का जिक्र किया है। सीसीएल अस्पताल से बेहतर इलाज के लिए पायल को सदर अस्पताल रामगढ़ रेफर किया गया था। वहां भी इलाज कर रहे डॉक्टर ने पायल के कुकिंग गैस से जल जाने की बात पर्ची में लिखी है।

कांग्रेस नेता की सक्रियता से बिजली संकट का हुआ समाधान

हमारा लक्ष्य समस्याओं का समाधान करना : मुन्ना सिंह

नवीन मेल संवाददाता। हजारीबाग कटकमदाग प्रखंड के बेस पंचायत के फुटानी चौक में 63 केवीए के जले हुए ट्रांसफार्मर को बदलकर 100 केवीए का नया ट्रांसफार्मर स्थापित किया गया। यह कार्य कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह के नेतृत्व और सक्रियता के कारण संभव हो सका। उनके अथक प्रयासों से इलाके के सैकड़ों ग्रामीणों को लंबे समय से चले आ रहे बिजली संकट से राहत मिली है। इससे पहले, पुराने ट्रांसफार्मर की खराबी के कारण कई दिनों तक बिजली की आपूर्ति बाधित रहती थी, जिससे ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। अब नए ट्रांसफार्मर की स्थापना के साथ बिजली आपूर्ति की स्थिति में सुधार हुआ है और इससे इलाके में खुशी की लहर दौड़ गई है।मौके पर निजी मीडिया प्रतिनिधि विक्की कुमार धान ने ट्रांसफार्मर को ग्रामीणों के हवाले किया और यह कार्य मुन्ना सिंह जी के निरंतर नेतृत्व में संपन्न हुआ। स्थानीय ग्रामीणों ने मुन्ना सिंह के प्रयासों का आभार व्यक्त किया और कहा कि इस पहल से न केवल बिजली की समस्या हल हुई है, बल्कि उनके जीवन स्तर में भी सुधार होगा।

नगर भवन में आयोजित हुआ रुआर कार्यशाला

10 मई तक चलेंगे कार्यक्रम

नवीन मेल संवाददाता। बरही विद्यालय से ड्रॉप आउट रोकने के उद्देश्य से नगर भवन में रुआर कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में मुख्य रूप से बीडीओ जयपाल महतो, बीईईओ किशोर कुमार, बीपीएम अरुण कुमार सहित भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, सहायक अध्यापक संघ के प्रदेश अध्यक्ष संजय दुबे, प्रखंड प्रमुख मनोज कुमार रजक, उप प्रमुख देवलाल कुशवाहा, जिप सदस्या प्रीति गुप्ता, मुखिया मोतीलाल चौधरी, मुखिया मनोज कुमार, आदि शामिल हुए. जिसका शुभारंभ उपस्थिति अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया. कार्यक्रम का संचालन मथुरा प्रसाद व तुलसी कुमार दास ने संयुक्त रूप से किया. जिसमें विभिन्न 118 विद्यालय के शिक्षक मौजूद थे. कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों की संख्या को स्थिर रखते हुए वंचित बच्चों को विद्यालय में नामांकित करवाना था. बीईइओ ने बताया की आगामी 10 मई तक पूरे राज्य में रुआर कार्यक्रम के तहत ग्राम स्तरीय कार्यक्रम कर अभिभावकों को जागरूक करते हुए बच्चों को विद्यालय से जोड़ना है. इसके लिए उन्होंने सभी शिक्षकों को ग्राम स्तरीय कार्यक्रम आयोजित करने की बात कही. बीडीओ ने भी उपस्थित शिक्षकों को ड्रॉप आउट रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाने की बात कही. उन्होंने घर घर जाकर विद्यालय नहीं आने वाले बच्चों को नामांकित करवाने की बात कही. भाजपा जिला उपाध्यक्ष श्री ठाकुर ने कहा कि हम सबों का दायित्व है कि अपने क्षेत्र के सभी 5 से 15 वर्ष के बच्चे का नामांकन के साथ विद्यालय में उनकी नियमित उपस्थिति करवाएं. इसके लिए उन्होंने रिमोट क्षेत्र में विशेष ध्यान देने की बात कही. प्रमुख श्री रजक ने भी सभी शिक्षकों से रुआर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील करते हुए उपस्थित जनप्रतिनिधियों व समाजसेवियों से सार्थक सहयोग की अपील किया.

चेंबर ने बिजली की समस्यों को लेकर अधीक्षण अभियंता को सौंपा ज्ञापन

विभाग ने शीघ्र बिजली समस्याओं को हल करने की बात कही

भुरकुंडा बाजार में बिजली तारों की स्थिति काफी जर्जर अवस्था में है जिसके कारण लगातार विद्युतआपूर्ति बाधित होती रहती है

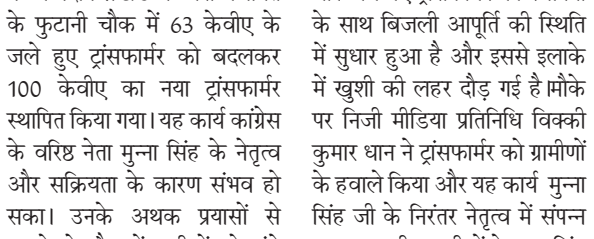

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़ रामगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष मंजीत सहानी के नेतृत्व में मंगलवार को चेंबर के एक प्रतिनिधिमंडल ने रामगढ़ शहर एवं आस पास के क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति व्यवस्था में सुधार के संबंध में अधीक्षण अभियंता रामगढ़ अंचल से मुलाकात की एवं पावरकट की मेंटेनेंस के लिए निर्धारित समय ओवरहेड वायर सहित स्मार्ट मीटर से जुड़ी परेशानियां को बताया, साथ ही इन विषयों को लेकर एक ज्ञापन सौंपा । जिसमें बताया कि रामगढ़ शहर का विद्युतापूर्ति बाधित होने पर पूरे रामगढ़ का विद्युतापूर्ति बाधित कर दी जाती है, जबकि पांच (5)ए वी स्विच लगा हुआ है जिसका उपयोग नहीं किया जाता है। स्मार्ट मीटर लगने के बाद भी बिल निर्गत नहीं हो रहा है। बिजली विभाग के अधिकारियों का बैठने का समय सुनिश्चित हो ताकि उपभोक्ता का कार्य बाधित न हो। रामगढ़ शहर एवं आस पास के क्षेत्रों में बिजली के तारों की स्थिति जर्जर अवस्था में है जो हल्के हवा के झोंके में भी टूट जाते हैं उसे अविलंब बदला जाय। पूरे रामगढ़ शहर में 33 हजार केबीए के तार कहीं अंडरग्राउंड है तो कहीं पर ओवर हेड है। ओवर हेड तार को अंडरग्राउंड किया जाए। चेंबर और जेबीभीएनएल रामगढ़ का वॉट्सएप ग्रुप में बिजली ब्रेकडाउन या लोड शेडिंग के बारे में जानकारी दी जाती थी यह भी अभी बंद है उसे प्रारंभ कर दिया जाए। भुरकुंडा बाजार में बिजली तारों की स्थिति काफी जर्जर अवस्था में है जिसके कारण लगातार विद्युतआपूर्ति बाधित होती रहती है जल्द से जल्द जर्जर तारों को बदला जाए।

जैन धर्म में अक्षय तृतीया का दिन बहुत ही पूजनीय है : मानिक चंद जैन

जैन धर्म की मान्यताओं के अनुसार भगवान आदिनाथ ने सबसे पहले समाज में दान के महत्व को समझाया था और दान की शुरूआत की थी

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़ श्री दिगंबर जैन समाज रामगढ़ के पूर्व अध्यक्ष मानिक चंद जैन ने 30 अप्रैल को विज्ञप्ति जारी कर बताया कि जैन धर्म की मान्यता के अनुसार भगवान आदिनाथ स्वामी ने 1 वर्ष की तपस्या करने के बाद वैशाख माह की शुक्ल पक्ष की तृतीय तिथि अर्थात अक्षय तृतीया के दिन एक इक्षु रस (गन्ना रस) से अपनी तपस्या का पारण किया था । इसी कारण जैन समुदाय में यह दिन विशेष माना जाता है। उन्होंने बताया कि जैन धर्म की मान्यताओं के अनुसार भगवान आदिनाथ ने सबसे पहले समाज में दान के महत्व को समझाया था और दान की शुरूआत की थी। श्री जैन ने बताया कि जैन धर्म में अक्षय तृतीया के दिन लोग आहार दान, ज्ञान दान, औषाधि दान या फिर मंदिरों में दान करते हैं। विदित हो कि जैन धर्म की मान्यता के अनुसार भगवान आदिनाथ ने इस दुनिया को असि-मसि-कृषि के बारे में बताया था। इसे आसान भाषा में समझें तो असि यानि तलवार चलाना, मसि यानि स्याही से लिखना, कृषि यानी खेती करना होता है। भगवान आदिनाथ ने ही लोगों को इन विद्याओं के बारे में समझाया और लोगों को जीवन यापन के लिए इन्हें सीखने का उपदेश दिया.

राधा गोविंद पब्लिक स्कूल में अभिनंदन समारोह का आयोजन

शिक्षा ही व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करता है : संजीव बेदिय

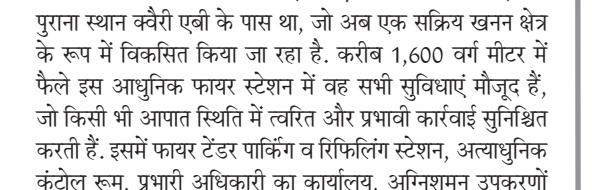

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़ राधा गोविंद पब्लिक स्कूल के सभागार में मंगलवार को अभिनंदन समारोह आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि समाजसेवी संजीव बेदिया, विशिष्ट अतिथि राजनीतिज्ञ सी.पी. संतन और पीयूष कुमार बेदिया उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर एवं राधा-गोविंद शिक्षण स्वास्थ्य ट्रस्ट के संस्थापक स्व गोविंद साह एवं स्व राधा देवी के तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्पार्चण कर किया गया। अभिनंदन समारोह में अतिथियों को पुष्प गुच्छ, अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। उनके स्वागत में विद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि संजीव बेदिया ने कहा शिक्षा व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करता है । यह न केवल ज्ञान देता है बल्कि अच्छे नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी सिखाता है।उन्होंने यह भी कहा कि सफलता पाने के लिए समय प्रबंधन भी अति आवश्यक है। विद्यालय के चेयरमैन बी. एन. साह की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि आपने ऐसे विद्यालय रूपी वृक्षारोपण किया है जिसमें विभिन्न छात्र/छात्राओं को ज्ञान रूपी फल हमेशा मिलता रहेगा। मौके पर विद्यालय सचिव प्रियंका कुमारी , वित्तलेखा पदाधिकारी संजय कुमार, ट्रस्टी अजय कुमार, प्राचार्य डॉ० सुजीत कुमार मोहंती, प्रशासक के एन सिंह ,विद्यालय एवं राधा गोविंद इंटर कॉलेज के समस्त शिक्षक वृंद एवं छात्रगण उपस्थित थे। विद्यालय के चेयरमेन वी एन साह ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। कहा कि आपने अपने बहुमूल्य समय से अपना समय दिया इसके लिए पूरा विद्यालय परिवार आपका आभारी रहेगा।

नीट परीक्षा 4 मई को, सिमडेगा जिला बनेंगे 01 केन्द्र, 75 परीक्षार्थी होंगे शामिल

राष्ट्रीय स्तर की इस परीक्षा में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं : डीसी

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। जिला प्रशासन ने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी नई दिल्ली द्वारा आयोजित नीट के सुचारू, निष्पक्ष एवं कदाचारमुक्त आयोजन को लेकर बुधवार को समाहरणालय सभागार में बैठक की गई। जिले में परीक्षा केंद्र, पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय, सिमडेगा को बनाया गया है। यहा परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसमें 75 परीक्षार्थी शामिल होंगे। परीक्षा अपराह्न 2:00 बजें से 5:00 बजे तक परीक्षा होगी। केन्द्र में परीक्षार्थियों का प्रवेश पूर्वाह्न 11:00 बजे से शुरू हो जाएगा और दोपहर 1:30 बजे के बाद प्रवेश पर रोक लग जाएगी। उपायुक्त अजय कुमार सिंह एवं पुलिस अधीक्षक सौरभ ने बैठक के दौरान जिले के वरीय अधिकारियों को नीट परीक्षा की निष्पक्षता एवं पारदर्शिता बनाए रखने पर विशेष बल दिया। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि परीक्षा केंद्रों पर सख्त निगरानी रखी जाए और किसी भी प्रकार की अनुचित गतिविधि को रोकने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएं। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी परीक्षा केंद्र पर सीसीटीवी कैमरे की व्यवस्था हो और सतत निगरानी के अलावा प्रवेश द्वार पर कड़ी जांच और पहचान पत्र का अनिवार्य रूप से सत्यापन करें। उन्होंने प्रश्न पत्र खोलने एवं सीलबंद करने की प्रक्रिया सहित अन्य सभी गतिविधि की वीडियोग्राफी सुनिश्चित कराने का निर्देश दिये। परीक्षा केन्द्रों के निर्धारित दायरे में धारा 144 लागू कर भीड़ नियंत्रण सुनिश्चित करने समेत मेडिकल व आपातकालीन सुविधाओं की उपलब्धता तथा परीक्षा की गोपनीयता सुनिश्चित करने की बात कहीं। परीक्षा केंद्र परिसर में ही मोबाइल केंद्र बनाने का निर्देश दिया। कहां कि वहां कार्य करने वाले कर्मी एवं पदाधिकारियों का मोबाइल स्टॉल में जमा की जाएगी। किसी भी पदाधिकारी को परीक्षा केंद्र भवन में मोबाइल ले जाने की अनुमति नहीं होगी। उपायुक्त ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर की इस परीक्षा में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि सभी परीक्षार्थियों को बिना किसी असुविधा के परीक्षा में सम्मिलित होने का अवसर मिलना चाहिए, इसके लिए आवश्यकतानुसार हेल्प डेस्क की स्थापना और समुचित सूचना बोर्ड लगाए जाएं। इसके अलावा उपायुक्त ने बैंक से प्रश्न पत्र बुकलेट लाने एवं उसे सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने हेतु पुलिस बल की प्रति नियुक्ति करने की बात कहीं। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि सुरक्षा व्यवस्था के लिए परीक्षा केंद्र पर पर्याप्त संख्या में पुलिस बल तैनात किए जाएंगे। जिला नियंत्रण कक्ष के अलावा परीक्षा केन्द्रों में भी नियंत्रण कक्ष स्थापित होंगे। परीक्षा संचालन का कंट्रोल रूम से भी विशेष निगरानी रखी जाएगी। उन्होंने परीक्षा केंद्र के बाहर 100 मीटर की दूरी तक पुलिस बल की प्रतिनिधि करते हुए विशेष निगरानी रखने का निर्देश दिया। बैठक में अपर समाहर्ता -सह-नोडल पदाधिकारी, नोडल पुलिस पदाधिकारी, उड़नदस्ता दण्डाधिकारी, पर्यवेक्षक -सह-स्टैटिक दंडाधिकारी, एस.बी. आई. सिमडेगा के वरीय दंडाधिकारी, नियंत्रण कक्ष दण्डाधिकारी, जिला नजारत उप- समाहर्ता अन्य पदाधिकारी गण उपस्थित थे।

सिमडेगा जिले का 25वां स्थापना दिवस महापुरुषों को किया गया नमन

सिमडेगा। सिमडेगा जिला के 25वें स्थापना दिवस को गरिमामय ढंग से मनाया। इस अवसर पर जिला प्रशासन द्वारा शहर में स्थापित महापुरुषों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत उपायुक्त अजय कुमार सिंह और पुलिस अधीक्षक सौरभ के नेतृत्व में हुई। उनके साथ अन्य प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित थे।शहर के विभिन्न स्थानों पर स्थित महापुरुषों - स्वामी विवेकानंद, डॉ. भीमराव अंबेडकर, रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, भगवान बिरसा मुंडा, वीर कुंवर सिंह, तेलंगा खड़िया, महात्मा गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी - की प्रतिमाओं पर अधिकारियों ने माल्यार्पण किया। यह कार्यक्रम जिले के गौरवशाली इतिहास और प्रेरणादायक व्यक्तित्वों को स्मरण करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपायुक्त अजय कुमार सिंह ने जिलेवासियों को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए जिले के सर्वांगीण विकास में सभी की भागीदारी का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि खेल शिक्षा कृषि सहित सभी क्षेत्रों में लगातार सिमडेगा जिला आगे बढ़ रहा है।

न्यूज बॉक्स

अतिक्रमण हटाओ अभियान पर पूर्व मंत्री विमला प्रधान की आपत्ति, उपायुक्त से की बात

सिमडेगा। सिमडेगा शहर में लगातार चल रहे अतिक्रमण हटाओ अभियान को लेकर पूर्व मंत्री विमला प्रधान ने चिंता जताई है। उन्होंने इस मुद्दे पर सिमडेगा के उपायुक्त से दूरभाष पर वार्ता की और अपनी बातों को स्पष्ट रूप से रखा। विमला प्रधान ने कहा कि शहर में विगत एक वर्ष से छोटे फुटपाथ दुकानदारों को अतिक्रमण के नाम पर लगातार परेशान किया जा रहा है, जबकि अब तक उनके पुनर्वास या स्थायी समाधान के लिए कोई ठोस पहल नहीं की गई है। पूर्व मंत्री ने कहा कि इस प्रकार की कार्रवाई से गरीब दुकानदारों की रोज़ी-रोटी पर संकट उत्पन्न हो रहा है। उन्होंने कहा कि प्रशासन को चाहिए कि वह अतिक्रमण हटाने के साथ-साथ उन दुकानदारों के लिए एक स्थायी और व्यवस्थित समाधान भी सुनिश्चित करे, ताकि वे सम्मानपूर्वक जीविका चला सकें। उन्होंने उपायुक्त से आग्रह किया कि ऐसे गरीब एवं मेहनतकश लोगों को अतिक्रमणकारी समझकर एकतरफा कार्रवाई न की जाए, बल्कि उनकी स्थिति को समझते हुए समावेशी नीति के तहत समाधान निकाला जाए। विमला प्रधान ने प्रशासन से आग्रह किया कि नगर क्षेत्र में स्थान चिन्हित कर व्यवस्थित रूप से फुटपाथ दुकानदारों को स्थान दिया जाए। इस विषय पर उपायुक्त सिमडेगा ने भी आश्वासन दिया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए उचित कार्रवाई की जाएगी।

जिला शिक्षा अधीक्षक के कार्यालय में सादे समारोह कर शिक्षकों को दी गई विदाई

सिमडेगा। जिला शिक्षा अधीक्षक सिमडेगा के कार्यालय में बुधवार को सचिव स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के आदेश अनुसार जिला शिक्षा अधीक्षक सिमडेगा दीपक राम के द्वारा एक सादे समारोह का आयोजन कर अप्रैल 2025 में सेवानिवृत्ति होने वाली शिक्षिका प्रभा प्रमोदित बाड़ा प्राथमिक विद्यालय मधुबन सिमडेगा,बेरोनिका लकड़ा उर्सुलाइन कॉन्वेंट रेगारी,कुसुम लुगुन जी ई एल मध्य विद्यालय तितलिंगा जलडेगा से सेवानिवृत हुई । मौके पर जिला शिक्षा अधीक्षक के द्वारा सभी सेवानिवृत शिक्षकों को शॉल, माला, बुके एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया इस अवसर पर इन्हें विभागीय लाभ जैसे पेंशन की अंतिम स्वीकृति हेतु आदेश महालेखाकार रांची को भेजा गया पत्र,जीपीएफ,ग्रुप बीमा,अर्जित अवकाश की स्वीकृति से संबंधित आदेश पत्र मौके पर दिया गया इस अवसर पर जिला शिक्षा अधीक्षक ने सभी सेवानिवृत शिक्षिकाओं को उनके उज्ज्वल भविष्य एवं बेहतर स्वास्थ्य की कामना की । उन्होंने कहा कि आपका सेवाकाल का समय शिक्षा विभाग के लिए अति महत्वपूर्ण था जो बच्चे एवं शिक्षा हित के लिए जाना जाएगा । इस अवसर पर उन्होंने जिले के सभी शिक्षकों से एवं शिक्षक संघ से अपील किए कि वैसे शिक्षक जो सेवा निवृत हो रहे हैं।

सिमडेगा में अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में दो लोगों की मौत

सिमडेगा। जिले में सड़क दुर्घटनाएं लगातार हो रही हैं और इन घटनाओं में जान-माल की हानि थमने का नाम नहीं ले रही है। मंगलवार को सिमडेगा जिले में हुई दो अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में दो लोगों की मौत हो गई।पहली घटना बानो थाना क्षेत्र के बेलकरघा के समीप घटी, जहां एक बाइक और टेम्पो की आमने-सामने की टक्कर हो गई। इस दुर्घटना में बाइक सवार बांकी निवासी जस्टिन डांग और दीपक डांग के साथ टेम्पो सवार बुरूहोंजर निवासी उदेश्वर सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को तत्काल इलाज के लिए सिमडेगा सदर अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान उदेश्वर सिंह की मौत हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए।वहीं दूसरी दुर्घटना घुटबहार झिरपानी के पास हुई, जहां एक ऑटो अनियंत्रित होकर पलट गया। इस हादसे में ऑटो में सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को स्थानीय लोगों की मदद से सिमडेगा सदर अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक की पहचान पंडरीपानी प्रधान टोली गांव निवासी 32 वर्षीय दिलीप प्रधान के रूप में की गई है।

पाकरटांड में प्रखंड कांग्रेस कमिटी की बैठक सम्पन्न, 12 सदस्यीय नई टीम का गठन

पाकरटांड। पाकरटांड प्रखंड कांग्रेस कमिटी की एक महत्वपूर्ण बैठक बुधवार को प्रखंड अध्यक्ष अजित लकड़ा की अध्यक्षता में आयोजित की गई।इस बैठक में संगठन सृजन वर्ष-2025 के तहत संगठन के सशक्तिकरण पर जोर देते हुए 12 सदस्यीय प्रखंड कमिटी का विस्तार सर्वसम्मति से किया गया।नई कमिटी में अजित लकड़ा को अध्यक्ष, समीर किंडो और सुरेश केरकेट्टा को उपाध्यक्ष, बसंत सुरीन को महासचिव नियुक्त किया गया। इसके अलावा शीतल लकड़ा, आलम खान, प्रकाश टेटे, प्रफुल्लित कुजूर, हेमंत खलखो, जॉनी अशसिस एन बाखला, सलोमी तिग्गा और अल्बिना केरकेट्टा को भी समिति में शामिल किया गया।बैठक का मुख्य उद्देश्य 6 मई को रांची में आयोजित 'संविधान बचाओ अभियान' और 8 मई को 'सिमडेगा चलो' कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा करना था। इन कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए रणनीति तैयार की गई और कार्यकर्ताओं से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आग्रह किया गया। बैठक के दौरान प्रखंड पर्यवेक्षक मो. एजाज ने कहा कि आज देश की स्वतंत्र संस्थाओं ईडी, इनकम टैक्स, सीबीआई और चुनाव आयोग, की निष्पक्षता खतरे में है और उन्हें दुरुपयोग कर लोकतंत्र को कमजोर किया जा रहा है।

पुलिया क्षतिग्रस्त होने के बाद प्रशासन की रास्ते की हुई व्यवस्था ,जांच में पहुचे विधायक

बानो। बानो कामडारा बाकुटोली रोड में सोय नाला में पुल क्षतिग्रस्त होने के बाद प्रशासन की पहल पर वैकल्पिक रास्ते की व्यवस्था की गई। वैकल्पिक व्यवस्था क्षतिग्रस्त पुल के बगल से समाजसेवी विकास साहू के सहयोग से पूर्व में बने छोटे पूल के अगल-बगल मिट्टी भरकर तथा जेसीबी के माध्यम से सड़क बनाया गया ताकि चार पंचायत के ग्रामीण आराम से आ जा सकते हैं तथा छोटे दो पहिया और छोटे चार पहिया वाहन आराम से आना-जाना कर सकते हैं। मालूम होकी सोय नाला पर स्थित उच्चस्तरीय पुल क्षतिग्रस्त होने के बाद जान माल की क्षति ना हो इसको देखते हुए डीसी के निर्देशानुसार प्रखंड प्रशासन ने सोय नाला पर स्थित उच्च स्तरीय पूल में आवागमन बंद कर दिया है। वैकल्पिक व्यवस्था होने पर आवागमन आरंभ हो गया है मामले की जानकारी होने पर तोरपा विधायक सुदीप गुड़िया सोय नाला पर उच्च स्तरीय पूल का निरीक्षण किया तथा ग्रामीण विकास के मंत्री से मुलाकात का मामले की जानकारी देते हुए निदान कराने की बात कही वहीं वैकल्पिक रास्ता निर्माण कर रहे लोगों को भी आवश्यक दिशा निर्देश दिया, उन्होंने कहा जल्द ही वे ग्रामीण विकास मंत्री से मुलाकात करेंगे और जितना जल्दी हो सके सोय नाला पर पुणे नई पुलिया निर्माण करने का मांग करेंगे।

जिला स्थापना दिवस पर प्रखण्ड कार्यालय में चला सफाई अभियान

कुरडेग। सिमडेगा जिले के 25 वां स्थापना दिवस पर बुधवार को सुबह में बीडीओ नैमन कुजूर के नेतृत्व में प्रखण्ड सह अंचल कार्यालय के परिषर एवं आस पास में साफ सफाई का काम घण्टो तक चला । सफाई अभियान में प्रखण्ड एवं अंचल कार्यालय के दर्जनो कर्मी शामील थे । इस दौरान बीडीओ नैमन कुजूर ने कहा कि अभियान का उद्देश्य प्रखण्ड कार्यालय को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाना है साथ ही लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करना है । इस अभियान में बी डी ओ श्री नैमन कुजूर, लखन गुप्ता, कृष्णा प्रसाद , राजेश महतो,वार्ड पार्षद अयुब अंसार मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

पाकरटांड में फिया फाउंडेशन ने वन पट्टा ज्ञान केंद्र का किया उद्घाटन

पाकरटांड। फिया फाउंडेशन द्वारा पाकरटांड प्रखंड में वन पट्टा विषय पर जागरूकता और जानकारी के प्रसार हेतु बुधवार को एक ज्ञान केंद्र की स्थापना की गई। इसका उद्घाटन प्रखंड कार्यालय के कक्ष संख्या-2 में अंचल अधिकारी नितिन गुप्ता के कर कमलों द्वारा किया गया।फाउंडेशन के ब्लॉक समन्वयक समीर किसपोटा ने ज्ञान केंद्र की उपयोगिता और उद्देश्य पर जानकारी दी। सीओ नितिन गुप्ता ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि इस केंद्र से वन पट्टा से संबंधित सभी जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि पट्टा प्राप्त करने के बाद ग्रामीणों को जंगल के संरक्षण और संवर्धन की जिम्मेदारी ईमानदारी से निभानी चाहिए तथा जंगल से गांव की आय कैसे बढ़ाई जाए, इस पर भी योजना बनानी चाहिए।कार्यक्रम में आसनबेड़ा, कुसकेला, केशलपुर, कैरबेड़ा, सिकरीयाटांड व पाकरटांड पंचायत के वन अधिकार समिति के अध्यक्ष और सचिव उपस्थित रहे। इस मौके पर फिया फाउंडेशन के कम्युनिटी मोबिलाइजर धनुर्जय सिंह, अरुणिमा मिंज, क्तारा मिंज और लोकल डेमोक्रेसी कार्यकर्ता जॉन डुंगडुंग भी मौजूद थे।

झामुमो जिला समिति सिमडेगा की बैठक आयोजित

केंद्रीय समिति में चयनित सदस्यों का स्वागत कर उन्हें सम्मानित किया

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। झारखंड मुक्ति मोर्चा जिला समिति सिमडेगा की एक आवश्यक बैठक आज परिसदन भवन सिमडेगा में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष अनिल कांडुलना ने की। इस अवसर पर हाल ही में रांची के खेलगांव में आयोजित झामुमो केंद्रीय महाधिवेशन में सिमडेगा जिला से केंद्रीय समिति में चयनित सदस्यों का स्वागत कर उन्हें सम्मानित किया गया। केंद्रीय समिति में नोवस केरकेट्टा, मो. इरशाद, फिरोज अली, बिरजू कुंडलना, संजीव डांग, जुसफ लुगुन, सुनील खेस, नुसरत खातून, प्रफुल्लित डुंगडुंग और धर्मदास टोपनो को स्थान मिला है। बैठक में जिलाध्यक्ष अनिल कांडुलना ने कहा कि महाधिवेशन के बाद अब पार्टी को संगठनात्मक रूप से और मजबूत करना प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं और उपलब्धियों को हर वर्ग तक पहुंचाना कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है।जिला सचिव मो. सफीक खान ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे गांव-गांव जाकर पार्टी की नीति और सिद्धांतों को लोगों तक पहुंचाएं और अधिक से अधिक लोगों को पार्टी से जोड़ें।बैठक में जिला उपाध्यक्ष रितेश बड़ाइक, मो. सरफराज, जिला कोषाध्यक्ष राजेश टोप्पो, झामुमो नेत्री रोज प्रतिमा सोरेंग, किशोर डांग, अनिल तिर्की, मो. साबिर अंसारी, नगर अध्यक्ष मो. अनस आलम, नगर समिति व विभिन्न प्रखंडों के अध्यक्ष, सचिव एवं प्रखंड समिति के सदस्यगण उपस्थित रहे।

विधायक कोंनगाड़ी ने ठेठईटांगर प्रखंड और अंचल कार्यालय का किया दौरा

नवीन मेल संवाददाता

ठेठईटांगर। विधायक नमन बिक्सल कोंनगाड़ी ने बुधवार को ठेठईटांगर प्रखंड कार्यालय का दौरा कर अंचलाधिकारी और प्रखंड विकास पदाधिकारी से मिल कर जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, जमीन से संबंधित समस्या ,अबूवा आवास योजना, मईया सम्मान योजना,जल नल योजना, मनरेगा, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता, राशन कार्ड, कल्याण, संखिकी, श्रम प्रवर्तन, छात्रवृति, आंगनबाड़ी, राजस्व विभाग व अन्य विभाग के द्वारा प्रखंड और पंचायतों में चलाई जा रही सभी योजनाओं की जानकारी ली। विधायक नमन बिक्सल कोनगाड़ी ने कहा कि गांव की जनता दूर दराज के आते हैं तो उनका काम होना चाहिए ताकि लोगों को परेशानियों का सामना करना ना पड़ें साथ ही उन्होंने आगे कहा कि जनता ने जिस उम्मीद से सरकार बनाया है, उसी उम्मीद से उनका काम भी हो पंचायत से लेकर प्रखंड तक सभी काम सही तरीका से करने को कहा जब से झारखंड में गठबंधन की सरकार आई है ।सभी जाती धर्म के लोगो को साथ लेकर चलने का काम किया है। महागठबंधन सरकार झारखंड की जनभावना के अनुरूप जनकल्याणकारी योजनाओं को योग्य लाभुकों तक पहुचाना ही हमारा संकल्प है।मौके पर मौजूद जिला विधायक प्रतिनिधि रावेल लकड़ा,विधायक प्रतिनिधि मोहम्मद कारू मंडल अध्यक्ष जॉनसन डांग, पंचायत अध्यक्ष अतुल बारला, सीपरियान कुंडलना , सुनील जोजो, रेने टेटे, मोहम्मद वाहिद, मुखिया सुषमा बिलुंग, पूर्व प्रमुख रेखा मिंज, आदि मौजूद थे।

संविधान बचाओ अभियान को लेकर कांग्रेस की बैठक

नवीन मेल संवाददाता

● 6 और 8 मई को रैली में बड़ी भागीदारी का आह्वान

सिमडेगा। जिला कांग्रेस कमेटी की एक महत्वपूर्ण बैठक बुधवार को जिला कार्यालय, प्रिंस चौक सिमडेगा में जिला अध्यक्ष डेविड तिर्की की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में झारखंड प्रदेश कांग्रेस कार्यकारिणी की हाल ही में हुई बैठक के निर्णयों के आलोक में आगामी 6 मई 2025 को रांची और 8 मई 2025 को सिमडेगा में आयोजित होने वाली संविधान बचाओ अभियान की रैली को सफल बनाने पर विशेष चर्चा की गई।जिला अध्यक्ष डेविड तिर्की ने कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार लगातार संवैधानिक और लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर कर रही है। संसदीय प्रक्रियाओं की अवहेलना, महंगाई, बेरोजगारी, सामाजिक-आर्थिक असमानता और न्यायपालिका पर दबाव जैसी घटनाएं लोकतंत्र के लिए खतरा हैं।उन्होंने बताया कि 6 मई को पुराना विधानसभा मैदान, धुर्वा, रांची में और 8 मई को सरना स्थल फरसाबेड़ा, सिमडेगा में राज्य स्तरीय व जिला स्तरीय रैली का आयोजन किया जाएगा। इन रैलियों में जल, जंगल, जमीन की रक्षा, सरना धर्म को मान्यता, जातिगत जनगणना, पेसा कानून, वन अधिकार अधिनियम, वक्फ संशोधन रद्द करने समेत कई मुद्दों को लेकर सरकार से जवाब मांगा जाएगा।श्री तिर्की ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे बड़ी संख्या में रैली में भाग लें और आम जनता को भी जागरूक कर इस जन आंदोलन में शामिल करें।इस अवसर पर प्रदेश महासचिव पुष्पा कुल्लू, प्रदेश सचिव नॉमिता बा, जोनसन मिंज, प्रदीप केशरी, मो. समी आलम, कौशल किशोर रोहिल्ला, शिशिर मिंज, बिपिन पंकज मिंज, कई प्रमुख नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सिमडेगा के धर्मगुरुओं ने लिया संकल्प, नहीं होने देंगे बाल विवाह

सिमडेगा। छोटानागपुर कल्याण निकेतन संस्था द्वारा आयोजित एक महत्वपूर्ण बैठक में सिमडेगा जिले के विभिन्न धर्मों के धर्मगुरुओं ने बाल विवाह के खिलाफ एकजुट होकर आवाज़ उठाई।'चाइल्ड मैरिज फ्री इंडिया' अभियान के तहत आयोजित इस पहल में हिंदू, मुस्लिम और क्रिश्चियन समुदायों के धर्मगुरुओं ने यह संकल्प लिया कि वे अपने स्तर पर किसी भी नाबालिग लड़के या लड़की का विवाह नहीं होने देंगे।बैठक में धर्मगुरुओं ने बाल विवाह को सामाजिक कुरीति और दंडनीय अपराध बताते हुए इसे समाप्त करने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि बाल विवाह को रोकने के लिए वे समाज में जागरूकता फैलाएंगे और यदि किसी भी स्थान से इस तरह की जानकारी मिलती है, तो तत्परता से हस्तक्षेप करेंगे। धर्मगुरुओं ने यह भी कहा कि जो व्यक्ति बाल विवाह में शामिल होगा, उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए, जिसमें सजा और आर्थिक दंड दोनों शामिल हों।

डालमिया मार्चा के विकास के लिए हर संभव प्रयास : सुदीप गुड़िया

नवीन मेल संवाददाता

बानो। प्रखंड के बांकी पंचायत के डालियामार्चा में तोरपा विधायक का स्वागत समारोह का आयोजन किया गया तथा ग्रामीणों ने गांव की समस्या से विधायक को अवगत कराया।ग्रामीणों ने विधायक को बताया कि बानो प्रखंड के बांकी के डालिया मार्चा तक जाने के लिए सड़क का अभाव है, पेयजल के लिए काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है वही गांव में बिजली का अभाव रहने से बच्चों के पठन-पाठन करने में असुविधा होती है।इससे पूर्व विधायक का स्वागत पारंपरिक ढोल नगाड़ा तथा बुके देकर किया गया। विधायक ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि डालमिया मार्चा के विकास के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा।गांव में पक्की सड़क बिजली और पेयजल की सुविधा उपलब्ध हो इसके लिए पहल की जाएगी। विकास योजनाओं को धरातल में लाया जाएगा ताकि गांव का सर्वांगीण विकास हो उन्होंने प्रखंड विकास पदाधिकारी को जेरेडा से सोलर पावर प्लांट हेतु पत्र प्रेषित करते हुए सोलर के माध्यम से बिजली गांव में उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।जिला परिषद और प्रमुख मद से पहाड़ी रास्ते पर जहां पीसीसी और पेयजल उपलब्ध कराने की बात कही। उन्होंने कहा कि वरीयता के आधार पर गांव की समस्याओं का निदान किया जाएगा। इस अवसर पर प्रखंड प्रमुख सुधीर डांग, जिला परिषद सदस्य बिरजो कंडुलना, प्रखंड विकास पदाधिकारी नईमुद्दीन अंसारी,बीपीओ चारू मांझी पीए अवास समन्वयक नितेश साहू, बांकी मुखिया अजय डांग, महाबुआंग थाना प्रभारी अमरनाथ कुमार सोनी, बेड़ाइरगी मुखिया हेलेना कंडुलना, अरमान तोपनो, अनिल लुगुन, तनवीर हुसैन, अन्य लोग उपस्थित थे।

पतिअम्बा में आयोजित तीन दिवसीय श्रीमद भागवत कथा का समापन

जलडेगा। प्रखंड के पतिअम्बा स्थित साहु बस्ती में रोड अन्नप्रासन संस्कार के उपलक्ष में हो रहे तीन दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा का सफल समापन किया गया। तीन दिवसीय भागवत में कथा व्यास महाराज श्री दिनेशानंद मृदुल द्वारा 3 दिनों तक भागवत महिमा के साथ-साथ सतयुग, द्वापर युग एवं कलयुग के विभिन्न विषयों पर प्रवचन देते हुए प्रभु की लीलाओं के बारे में बताया गया। तीसरे एवं अंतिम दिन कृष्ण जन्म, बाल लीलाएं, कंश वध, रुक्मणी विवाह जैसे कई विषयों पर बताते हुए सभी श्रोताओं को भक्ति रस में डुबकी लगवाई तथा बीच-बीच में महाराज श्री दिनेशानंद मृदुल जी द्वारा गाए गए भक्तिमूलक भजन पर लोगों एवं महिलाओं ने जमकर झूमते हुए आनंद लिया। महाराज श्री दिनेशानंद मृदुल जी ने कहा कि भागवत कथा श्रवण मात्र से भक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

सिमडेगा के डांडगुरडा में डीलर पर गंभीर आरोप, अंचल अधिकारी ने की जांच

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। सिमडेगा सदर प्रखंड के तामड़ा पंचायत स्थित डांडगुरडा गांव में सार्वजनिक वितरण प्रणाली से जुड़े एक गंभीर मामले में ग्रामीण महिलाओं ने महिला स्वयं सहायता समूह डीलर पर केवाईसी के नाम पर राशन न देने और राशन कार्ड छपवाने के नाम पर 200 की अवैध वसूली का आरोप लगाया है। इस संबंध में पीड़ित महिलाओं ने प्रखंड कार्यालय पहुंचकर अंचल अधिकारी सह प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी इम्तियाज अहमद से शिकायत की थी।शिकायत को गंभीरता से लेते हुए अंचल अधिकारी इम्तियाज अहमद ने बुधवार सुबह स्वयं गांव पहुंचकर मामले की जांच की। मौके पर मौजूद लाभुकों से बातचीत के क्रम में महिलाओं ने एक के बाद एक शिकायतें रखीं। जांच के दौरान सभी आरोप सही पाए गए। कई लाभुकों ने बताया कि उन्हें महीनों से राशन नहीं मिला है और कार्ड छपवाने के नाम पर रुपए लिए गए हैं। जांच के दौरान राशन दुकान बंद पाई गई। साथ ही, दुकान में स्टॉक पंजी नहीं मिला और अन्य कई अनियमितताएं भी सामने आईं। इन सबको देखते हुए अंचल अधिकारी ने डीलर को कड़ी फटकार लगाई और निर्देश दिया कि सभी लाभुकों को समय पर और बिना किसी परेशानी के राशन उपलब्ध कराया जाए।इम्तियाज अहमद ने स्पष्ट किया कि गरीबों के अधिकार से किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ बर्दाश्त नहीं की जाएगी और दोषी महिला स्वयं सहायता समूह डीलर पर शीघ्र ही कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रशासन की प्राथमिकता है कि प्रत्येक जरूरतमंद तक सरकारी योजनाओं का लाभ निष्पक्ष रूप से पहुंचे। ग्रामीणों ने प्रशासन की तत्परता के लिए आभार जताया।

84 बच्चे बच्चियों का हुआ दृढ़ीकरण संस्कार कार्यक्रम का आयोजन

बानो। जी एल चर्च बानो में दृढ़ीकरण संस्कार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष मिस्सा पूजा का आयोजन किया गया। मिस्सा पूजा पेरिस चैयरमैन पादरी उम्बलन तोपनो के नेतृत्व में हुई । इस अवसर 84बच्चे बच्चियों ने प्रथम परम प्रसाद ग्रहण किया । पादरी सी एस जड़िया नेअपने सन्देस में कहा कि परम प्रसाद संस्कार लेने से पवित्र आत्मा का वरदान मिलता है।उन्होंने ने कहा कि इस संस्कार को ग्रहण करने से अच्छे जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है।आज जिसने दृढ़ीकरण संस्कार लिया उसके दिल में ईश्वर वास करता है । उन्होंने कहा कि दृढ़ीकरण संस्कार पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों के जीवन में आशीष, कृपा का वरदान देता है। कलीसिया के सात संस्कारों में से यह एक संस्कार है। सबसे पवित्र एवं मूल्यवान वरदान ख्रीस्त में विश्वास करना है। उन्होंने कहा कि सशक्त विश्वास से ही ख्रीस्त का जीवन मजबूत होता जाता है।

जिला स्थापना दिवस के मौके पर सीएम उत्कृष्ट विद्यालय में हुआ सांस्कृतिक कार्यक्रम

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। जिला स्थापना दिवस सिमडेगा के अवसर पर बुधवार को जिला मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय सिमडेगा में सांस्कृतिक कार्यक्रम ,लेखन प्रतियोगिता तथा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन जिला शिक्षा पदाधिकारी जिला एवं जिला शिक्षा अधीक्षक सिमडेगा के द्वारा किया गया। स्वागत भाषण विद्यालय के प्रधानाध्यापक अब्राहम केरकेट्टा के द्वारा दिया गया। जिला शिक्षा पदाधिकारी ने अपने संबोधन में कहा कि सिमडेगा जिलावासी सरल एवं सद्गुणों से भरे हुए हैं। भौगोलिक परिदृश्य अन्य जिलों से प्यार और अनोखा है। झारखंड की मूल संस्कृति जो हमें हमारे पूर्वजों जैसे भगवान बिरसा मुंडा एवं सिद्धू कान्हो से प्राप्त है वह सिमडेगा जिला में दिखाई देता है। शिक्षा के माध्यम से हम समाज और देश में बदलाव ला सकते हैं और प्रधानमंत्री महोदय का 2047 तक देश को सुपर पावर बनाने की जो सोच है उसको आगे बढ़ाने में अपना सहयोग दे सकते हैं।जिला शिक्षा अधीक्षक ने कहा कि सिमडेगा का प्राकृतिक परिदृश्य जितना अच्छा है उससे कहीं ज्यादा अच्छा यहां के लोग हैं। अन्य जगहों की तुलना में यहां कार्य करना अच्छा लगता है। सिमडेगा जिला ने विभिन्न क्षेत्रों में पिछले 24 वर्षों में उत्तरोत्तर विकास किया है परंतु इसकी गति को और तेज करने के लिए आज हम सब प्रण लें की सभी अपने-अपने क्षेत्र में ईमानदारी पूर्वक कार्य करेंगे। बच्चों ने विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया। लेखन प्रतियोगिता में प्रथम सपना कुमारी ,द्वितीय नेहा कुमारी और तृतीय आरती कुमारी तथा चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम करण कुमार ठाकुर, द्वितीय शाहिद नायक और तृतीय स्थान सुमंती प्रधान को मिला। विजेताओं को पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया। पीपीटी के माध्यम से बच्चों को सिम देगा की विभिन्न पर्यटक स्थलों को दिखलाया गया। मंच संचालन शिक्षक संजीव कुमार एवं छात्र शुभेच्छा दास ने किया। सत्यजीत कुमार ने अतिथियों, मीडिया कर्मी एवं विद्यालय के शिक्षक शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का आभार प्रकट किया।

अक्षय तृतीया पर दिगंबर जैन मंदिरों में गन्ने का रस किया गया वितरित

मंदिरों में दिनभर भक्ति और श्रद्धा का वातावरण बना रहा

नवीन मेल संवाददाता। हजारीबाग
अक्षय तृतीया (अखा तीज) के पावन अवसर पर मंगलवार को हजारीबाग नगर क्षेत्र के दोनों प्रमुख दिगंबर जैन मंदिर – बड़ा बाजार और बॉडम बाजार – में प्रातः काल से ही धार्मिक वातावरण श्रद्धा और भक्ति से परिपूर्ण रहा। श्रद्धालुओं ने शांतिधारा, अभिषेक एवं विशेष पूजा-अर्चना कर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) के प्रथम आहार दान दिवस को श्रद्धापूर्वक मनाया। जैन परंपरा के अनुसार, भगवान ऋषभदेव ने दीक्षा लेने के पश्चात छह माह तक उपवास किया और फिर नियमपूर्वक आहार की प्रतीक्षा करते हुए नगर-नगर विचरण करते रहे। वे केवल शुद्ध भावना से और विधिपूर्वक दिए गए आहार को ही स्वीकार करने के लिए तत्पर थे। अंततः तेरहवें मास के अंत में, अक्षय तृतीया के दिन, हस्तिनापुर के राजा सुमित्र के पुत्र श्रेयांस कुमार को अपने पूर्व जन्म की स्मृति जाग्रत हुई, जिसके प्रभाव से उन्हें यह ज्ञान हुआ कि मुनिराज को किस विधि से आहार दिया जाता है। उन्होंने नियमपूर्वक गन्ने का रस (इक्षुरस) अर्पित किया, जिसे भगवान ऋषभदेव ने स्वीकार किया। यही ऐतिहासिक घटना जैन इतिहास में प्रथम आहार दान के रूप में प्रसिद्ध हुई, जिसे आज आहार दान दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज इस परंपरा को जीवंत करते हुए, हजारीबाग के दोनों मंदिरों में गन्ने का रस भक्तों के बीच वितरित किया गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने इस रस का पान कर भगवान ऋषभदेव के प्रथम आहार ग्रहण की स्मृति को आत्मसात किया। मंदिरों में दिनभर भक्ति और श्रद्धा का वातावरण बना रहा। इस अवसर पर मीडिया प्रभारी श्री राजेश लुहाड़िया ने बताया कि अक्षय तृतीया केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जैन संस्कृति के जीवंत मूल्यों – त्याग, तप, दान, संयम और सेवा – की प्रेरक स्मृति है। यही वह ऐतिहासिक दिन है जब जैन धर्म में दान तीर्थ की परंपरा का प्रवर्तन हुआ। प्रथम आहार दान की यह घटना हमें यह सिखाती है कि शुद्ध भाव से दिया गया आहार न केवल मुनिराज के लिए बल्कि दाता के लिए भी आत्मकल्याण का माध्यम बनता है। इसी कारण आज के दिन कुछ न कुछ दान देने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है, जो पुण्य, परोपकार और आत्मशुद्धि का प्रतीक है।

धनबाद पुलिस ने 8.43 लाख में की पुराने वाहनों की नीलामी की

धनबाद। धनबाद पुलिस लाइन में बुधवार को पुलिस विभाग के पुराने व खराब हो चुके वाहनों की नीलामी की गई. नीलामी की प्रक्रिया एसएसपी एचपी जनार्दनन, ग्रामीण एसपी कपिल चौधरी, डीएसपी डीएन बंका व मोटरयान निरीक्षक की निगरानी में संपन्न हुई. नीलामी खुले डाक के माध्यम से की गई जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया. इस नीलामी से पुलिस विभाग को कुल 8 लाख 43 हजार 600 रुपये की आमदनी हुई है. नीलाम किए गए 51 वाहनों में बोलेरो, जिप्सी, जीप व बाइक शामिल हैं. एसएसपी ने बताया कि सभी वाहन 15 वर्ष से अधिक पुराने थे. अब इन वाहनों का परिचालन नहीं किया जा सकेगा. यदि कोई नीलाम वाहन सड़क पर चलता हुआ पाया गया तो वाहन मालिक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी.

न्यूज बॉक्स

पूर्व कर्नल ने पीएम से मांगी सेना में दोबारा बहाली की अनुमति

धनबाद। पहलगाम आतंकी हमले ने देशभर में आक्रोश की लहर पैदा कर दी है. धनबाद निवासी सेना से रिटायर्ड कर्नल जेके सिंह भी इस हमले से मर्माहत हैं. उन्होंने पएम मोदी को पत्र लिखकर एक बार फिर सेना में बहाल किए जाने की अनुमति मांगी है. कर्नल जेके सिंह सेना की कैवेलरी यूनिट से रिटायर्ड अधिकारी हैं. उन्होंने अपने पत्र में लिखा है कि 31 वर्षों तक भारतीय सेना में सेवा की है, जिनमें से 14 वर्ष जम्मू-कश्मीर में बिताए हैं. इस दौरान वे उत्तर कश्मीर में पैरा कमांडो के रूप में और बाद में दक्षिण कश्मीर के संवेदनशील इलाकों अनंतनाग, कुलगाम, शोपियां और पहलगाम में आतंकवाद विरोधी अभियानों का नेतृत्व करते रहे. वर्दी पहनते समय उन्होंने देश के लिए जीने-मरने की कसम खाई थी और आज भी उनका यह प्रण उनके हृदय में ज्यों का त्यों जीवित है. पहलगाम में हुए कायराना आतंकी हमले ने उन्हें झकझोर दिया है और वह एक बार फिर मातृभूमि की रक्षा के लिए सेना में शामिल होने को तैयार हैं.

माओवादी एरिया कमांडर सलूका के घर पुलिस ने चिपकाया इश्तेहार

चाईबासा। पश्चिमी सिंहभूम जिला पुलिस ने माओवादी एरिया कमांडर सालूका कायम की गिरफ्तारी के लिए अभियान तेज कर दिया है.पुलिस की टीम जिले के बंदगांव क्षेत्र स्थित सलूका कायम के घर ढोल-नगाड़े के साथ पहुंची और उसके घर के बाहर इश्तेहार चिपकाया. माओवादी एरिया कमांडर सालूका कायम के खिलाफ जिले के कराईकेला थाना में कांड संख्या 08/20 व 04/23 के तहत प्राथमिकी दर्ज है. दोनों मामलों में वह प्राथमिक अभियुक्त है. मिली जानकारी के अनुसार, कराईकेला थाना की पुलिस सोनुवा थाना क्षेत्र के कुदाबुरू गांव स्थित सालूका कायम के घर में छापेमारी की. लेकिन वह फरार था. इसके बाद पुलिस की टीम ने ढोल-नगाड़ा बजाते हुए उसके घर के बाहर इश्तेहार चिपकाया. कराईकेला थाना प्रभारी अंकित कुमार ने माओवादी सालूका के परिवार वालों से बातचीत भी की. साथ ही सालूका को जल्द आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी.

राखा कॉपर माइंस चालू करने से पूर्व कर्मियों का बकाया दें : सनातन भक्त

जादूगोड़ा। हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड और इंडियन कॉपर कॉम्प्लेक्स (क्ठउ) द्वारा राखा कॉपर माइंस यूनिट को दोबारा शुरू करने की तैयारी की जा रही है. इसको लेकर अगले महीने जनसुनवाई होना है. इसके पहले भूतपूर्व कर्मचारियों ने कंपनी से अपने बकाया भुगतान की मांग की है. भूतपूर्व कर्मचारियों का कहना है कि हर कर्मचारी का लगभग तीन लाख रुपये बकाया है, जिसे कंपनी को जल्द से जल्द भुगतान करना चाहिए. इस मुद्दे को लेकर 4 मई को राखा कॉपर दुर्गा पूजा मैदान में एक बैठक बुलाई गयी है, जिसमें आगे की रणनीति तय की जायेगी. भूतपूर्व कर्मचारियों के नेता सनातन भक्त ने कहा कि वे माइंस खुलने का स्वागत करते हैं, लेकिन पुराने कर्मचारियों की अनदेखी बर्दाश्त नहीं की जाएगी. उन्होंने यह भी मांग की कि माइंस में नई नियुक्तियों में भूतपूर्व कर्मचारियों के बेटे-बेटियों या नोमनी को प्राथमिकता दी जाये, ताकि स्थानीय लोगों को रोजगार मिले और क्षेत्र में बेरोजगारी कम हो.

जादूगोड़ा में मनी पूर्व विधायक सनातन मांझी की पुण्य तिथि

जादूगोड़ा। जादूगोड़ा से सटे बालीजुडी में पोटका के पूर्व विधायक और झारखंड आंदोलनकारी सनातन माझी की चौथी पुण्यतिथि मनाई गई. लोगों ने बालीजुडी चौक स्थित सनातन माझी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी. समारोह को संबोधित करते हुए सुशील हांसदा ने कहा कि शिक्षा व सामाजिक क्षेत्र में स्वर्गीय सनातन माझी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता. सरल व मृदुभाषी स्वभाव की वजह से वह सभी के चहेते थे.

मेडिकल कैंप में 130 मरीजों का इलाज, बांटी गयी दवाईयां

आनंद कुशल चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से लगाया गया कैंप

जादूगोड़ा। आनंद कुशल चैरिटेबल ट्रस्ट जमशेदपुर की ओर से आदिवासी बालिका उच्च विद्यालय गोपालपुर में आज मेडिकल कैंप लगाया गया. इस कैंप में 130 ग्रामीणों समेत स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य की जांच कर मुफ्त में दवा बांटी गयी. कार्यक्रम को सफल बनाने में आनंद कुशल चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से बादल चंद्र भक्त, चित्तरंजन भक्त, डॉक्टर अजीत राय, डॉक्टर नंदिता नाग, विनय कुमार ठाकुर (प्रबंधन) और भूदेव भक्त ने अहम योगदान दिया. इस बाबत ट्रस्ट के सदस्य विनय कुमार ठाकुर ने कहा कि यह संस्था उपयोगी शिक्षा और ट्राइबल आर्ट्स जैसे क्षेत्रों में भी काम कर रही है. इसका उद्देश्य है कि पैसे की कमी के कारण कोई भी प्रतिभा दब न जाये. संस्था ऐसे बच्चों की पहचान कर रही है, जिन्हें आर्थिक सहायता की जरूरत है, ताकि उन्हें आगे बढ़ने में मदद मिल सके.

नावाडीह के समीप पिकअप वाहन के धक्के से अधेड़ की मौत

बोकारो। बोकारो जिले के नावाडीह के समीप पिकअप वाहन के एक अधेड़ व्यक्ति की मौत हो गई. घटना सोमवार की रात डुमरी-नावाडीह मुख्य पथ पर सुरही बोरवाडीह मोड़ के पास घटी. मृतक की पहचान वोरवाडीह गांव निवासी 47 वर्षीय जगदीश महतो के रूप में हुई. बताया गया कि जगदीश महतो सब्जी खरीद कर सुरही हाट बाजार से लौट रहे थे. तभी फुसरो की ओर से आ रहे तेज रफ्तार पिकअप वैन ने उसे धक्का मार दिया. सूचना मिलते ही नावाडीह थाना के एएसआई मिथिलेश कुमार सिंह दलबल के साथ पहुंचे और ग्रामीणों के सहयोग से घायल को नावाडीह सीएचसी पहुंचाया. वहां डाक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे बोकारो रेफर कर दिया. बोकारो ले जाते समय रास्ते में ही उसकी मौत हो गयी. घटना के बाद मृतक की पत्नी चिंता देवी, पुत्र पंकज महतो, प्रकाश महतो व साजन कुमार का रो-रो कर बुरा हाल है. मुखिया संघ के अध्यक्ष विश्वनाथ महतो, नरेश गुप्ता, राजेंद्र महतो, संतोष महतो, विजय कुमार, निर्मल महतो आदि ने घर पहुंचकर परिजनों को ढांढस बंधाया. विश्वनाथ महतो ने नावाडीह सीओ अभिषेक कुमार को फोन कर हिट एंड रन के तहत मृतक के परिवार को मुआवजा देने की मांग की है.

बीआरसी भवन में स्कूल रुआर कार्यशाला कार्यक्रम आयोजित

बच्चों को स्कूल से जोड़ना मुख्य उद्देश्य : बीडीओ

नवीन मेल संवाददाता। बेंगाबाद
बेंगाबाद बीडीओ सुनील कुमार मुर्मू ने कहा कि समग्र शिक्षा अभियान के तहत स्कूल रूआर सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है। इस योजना के तहत बच्चों को स्कूल से जोड़ना मुख्य उद्देश्य है। बेंगाबाद के बीआरसी कार्यालय के सभागार में स्कूल रूआर कार्यक्रम के तहत बुधवार आयोजित एक दिवसीय प्रखंड स्तरीय कार्यशाला में बीडीओ ने अपने संबोधन में उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि किसी कारण वश विधालय से बच्चे छिजित हैं, उन्हें स्कूल से जोड़ने और विधालय में उसके ठहराव के लिए पंचायत प्रतिनिधियों एंव शिक्षकों को प्रेरित किया गया है। उन्होंने कहा कि पांच से लेकर छह वर्ष के बच्चों को स्कूल से जोड़ने के लिए आंगनबाडी सेविका से बच्चों की सूचि लेना है। ताकि आंगनबाडी सेंटर के बाद बच्चे स्कूल से जुडं सकें और कोई नामांकन से छुट नहीं सके। इसके आलावे स्कूल में बच्चों को मिलने वाली एमडीएम के तहत पौष्टिक आहार और विधालय के रंग रोगन पर भी चर्चा की गई।

ड्रॉप आउट शिक्षा का सबसे बड़ा बाधक

सीओ प्रियंका प्रियेदर्शी ने कहा कि ड्रॉप आउट बच्चों को स्कूल से जोड़ना जरूरी है। ताकि उसकी शिक्षा पुरी हो सके। स्कूल से दूर रहने वाले बच्चों की शिक्षा अपूर्ण रह जाती है लेकिन स्कूल रूआर कार्यक्रम के तहत ड्रॉप आउट बच्चों को स्कूल से जोडकर आंगबीडी से लेकर बारहवीं तक की शिक्षा पूर्ण करना है। मौके पर बीस सूत्री के प्रखंड अध्यक्ष नुनूराम किष्कु टाइगर ने कहा कि गरीबों के उत्थान के लिए समग्र शिक्षा अभियान के तहत स्कूल रूआर सरकार की महत्वाकांक्षी योजना है। शत प्रतिशत ड्रॉप आउट बच्चों को स्कूल से जोडने के लिए इसे अभियान के रूप में लेना होगा। बीडीओ सुनील कुमार मुर्मू ने कार्यक्रम की अध्यक्षता किया। मौके पर प्रमुख मीना देवी, सीओ प्रियंका प्रियदर्शी, बीस सूत्री प्रखंड अध्यक्ष नुनूराम किष्कु टाइगर, बीईईओ स्वप्न कुमार मंडल, बीपीओ के डी सिंह, वार्डेन सुनिता सिंह, कुमारी पूनम, बीआरपी निशा कुमारी, आशीष सुमन, बैजनाथ प्रसाद यादव, लालजीत प्रसाद यादव, मो हनीफ अंसारी, लेखा पाल संजय कुमार यादव, शाहिद अंजुम, रामदेव प्रसाद वर्मा सहित कई अन्य शिक्षक उपस्थित थे।

फंदे से लटकता मिला विवाहिता का शव, जांच में जुटी पुलिस

नवीन मेल संवाददाता। चक्रधरपुर
चक्रधरपुर प्रखंड के टोकलो थाना क्षेत्र के होयोहातु पंचायत के माईलपीढ़ गांव में एक विवाहिता का उसके ससुराल में फांसी के फंदे से लटकता हुआ शव मिला. इस पर मृतका के पिता ने हत्या का आरोप लगाया है. बुधवार दोपहर मृतका के मायके व ससुराल पक्ष के लोग चक्रधरपुर अनुमंडल अस्पताल में शव का पोस्टमार्टम कराने पहुंचे थे. यहां मृतका के पति दिलीप हेम्ब्रम ने बताया कि वह मुंबई में राजमिस्त्री का काम करता है. सोमवार को मुंबई से वह अपने गांव लौटा था. मंगलवार रात मैं अपनी पांच साल की बेटी के साथ घर के एक कमरे में मोबाइल पर फिल्म देख रहा था. मेरी पत्नी सोनामुनी हेम्ब्रम दूसरे कमरे में थी. सुबह जब मेरी नींद खुली तो मेरे कमरे का दरवाजा बाहर से बंद था. इसके बाद मैंने आवाज लगाई तो मेरी मां ने दरवाजा खोला. वहीं जब मैं घर के दूसरे कमरे में गया तो मेरी पत्नी को घर के छज्जे की बिम्ब में दुप्ट्टा से फांसी लगा लटकते हुये देखा. मैंने इसकी जानकारी स्थानीय ग्रामीणों को दी. वहीं सूचना मिलने पर टोकलो थाना के अधिकारी व जवान घर पहुंचे और शव को पोस्टमार्टम के लिए अनुमंडल अस्पताल ले गये. वहीं मृतका के पिता जगमोहन सिंह हांसदा ने बताया कि मेरी बेटी सोनामुनी की हत्या उसके पति दिलीप ने ही की है. किसी को शक न हो, इसे लेकर आत्महत्या दर्शाया जा रहा है. उन्होंने बताया कि दिलीप मेरी बेटी के साथ शराब के नशे में अक्सर झगड़ा करता था. जिसकी जानकारी बेटी द्वारा दी जाती थी. उन्होंने कहा कि मेरा गांव होयोहातु ही है जो कि माइलपीढ़ से कुछ ही दूरी पर है. इसके बावजूद आनन-फानन में शव को फांसी के फंदे से नीचे उतार दिया. वहीं पूर्व मुखिया जागेन सिंह हांसदा ने कहा कि मृतका मेरी भतीजी थी. पति अक्सर लड़ाई झगड़ा करता था. उसने ही हत्या कर शव को फांसी के फंदे से लटका दिया होगा. इसे लेकर थाने में मामला दर्ज कराया जाएगा. इधर चक्रधरपुर अनुमंडल अस्पताल में शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया गया. वहीं टोकलो थाना के अधिकारियों ने बताया कि मामले की जांच पड़ताल की जा रही है. पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पूरा मामला स्पष्ट हो पाएगा.

> *मृतका के पिता जगमोहन सिंह हांसदा ने बताया कि मेरी बेटी सोनामुनी की हत्या उसके पति दिलीप ने ही की है. किसी को शक न हो, इसे लेकर आत्महत्या दर्शाया जा रहा है*

गिरिराज सेना के शिविर में 165 यूनिट रक्त संग्रह

चक्रधरपुर। गिरिराज सेना के संस्थापक दिवंगत कमलदेव गिरि के जन्मदिन पर बुधवार को 14वां रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ. चक्रधरपुर की श्याम नारायण शौंडिक धर्मशाला में आयोजित शिविर का उद्घाटन अनुमंडल अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अंशुमान शर्मा, शिक्षक श्रीकांतो मजूमदार व भाजपा नेता तीरथ जामुदा ने स्व. कमलदेव गिरि की तस्वीर पर फूल माला चढ़ाकर किया. शिविर में शाम पांच बजे तक 188 लोगों ने रक्तदान के लिए रजिस्ट्रेशन कराया, जबकि कुल 165 यूनिट रक्त संग्रह किया गया. 12 महिलाओं ने भी रक्तदान किया. पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा, पूर्व विधायक शशिभूषण सामड, गीता कोड़ा, भाजपा के जिला मंत्री सुरेश साव,टाइगर क्लब जमशेदपुर के अध्यक्ष आजाद गिरि, भाजपा विधायक सरयू राय के प्रतिनिधि धर्मेंद्र प्रसाद रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाया. मधु कोड़ा ने कहा कि युवा नेता कमल देव गिरि भले ही हम लोगों के बीच नहीं हैं, लेकिन समाज के लिए उन्होंने जो सपना देखा था उसे गिरिराज सेना परिवार पूरा कर रहा है. इस मौके पर गिरिराज सेना की ओर से सभी रक्तदाताओं को अंग वस्त्र, मोमेंटो व स्मृति पत्र देकर सम्मानित किया गया. इस अवसर पर कमलदेव गिरि के बड़े भाई उमाशंकर गिरि, फुलनदेव गिरि, बहन पूजा गिरि, मनोज जिंदल, धीरज ठाकुर रिक्की छाबड़ा, सतीश अग्रवाल आदि मौजूद थे.

संस्कृति की रक्षा के लिए युवा पीढ़ी को जागरूक करें :जगत मांझी

चाईबासा। पश्चिमी सिंहभूम जिले के आनंदपुर स्थित सद बमड़ी में बुधवार को झंडा पुनर्स्थापना कार्यक्रम आयोजित किया गया. कुडुख सरना पड़हा समिति के तत्वावधान में हुए इस आयोजन में बतौर मुख्य अतिथि मनोहरपुर विधायक जगत मांझी शरीक हुए. विधायक ने पूजा स्थल में पूजा-अर्चना कर और क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की. विधायक ने अपने संबोधन में कहा कि आदिवासी संस्कृति की रक्षा के लिए युवा पीढ़ी को जागरूक करें. सामाजिक विकास के लिए एकजुटता जरूरी हैं. उन्होंने कहा कि क्षेत्र से बहुत सारे लोग रोजगार के सिलसिले में दूसरे प्रदेश में पलायन कर जाते हैं. लेकिन जब वापस लौटते हैं तो अपनी संस्कृति, रीति रिवाज और सभ्यता को भूल जाते हैं. उन्होंने समाज के बुद्धिजीवियों से आग्रह किया कि भाषा-संस्कृति और सभ्यता की रक्षा के लिए युवा पीढ़ी को जागरूक करने का काम करें. बच्चों के शिक्षा पर भी विशेष ध्यान देने की अपील की. कहा कि शिक्षा के बिना समाज आगे नहीं बढ़ सकता है. कार्यक्रम में कलाकारों ने भजन व जतरा गीत प्रस्तुत किये. सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले बच्चों को विधायक व अन्य अतिथियों ने पुरस्कृत किया. मौके पर कुडुख सरना जागरण मंच के अध्यक्ष रोबी लकड़ा, बुधेश्वर धनवार, सुनील तिर्की, कैलाश कुजूर, धर्मेंद्र बरूवा, जगरा तिर्की, मंगल सिंह एक्का, इदन उरांव, मनीष उरांव, अजय कच्छप, संजीव गंताइत, राजू सिंह आदि उपस्थित थे.

घर पर काम कर रहे मजदूरों के साथ बाबूलाल ने बैठकर लगाया खपड़ा, कहा

आप कहीं भी पहुंच जाएं, अपने संघर्ष को कभी नहीं भुलाएं

नवीन मेल संवाददाता। तिसरी
कभी खेतों में हल चलाते तो कभी पैदल ही कई किलोमीटर का सफर तय करते, कभी कुदाल लेकर काम करते तो कभी घर की छप्पर पर खपड़ा लगाते। जी हां, सुबे के पहले मुख्यमंत्री, पूर्व केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री, कई दफा सांसद और विधायक रहे साथ ही वर्तमान में नेता प्रतिपक्ष के पद पर आसीन बाबूलाल मरांडी अपनी शालीनता के लिए जाने जाते हैं। इतने बड़े-बड़े पदों पर रहने के बावजूद कई दफा उन्हें खेतों में काम करते तो कभी हल चलाते देखा गया है। एक बार फिर बाबूलाल को कुछ ऐसा ही करते देखा गया है। दरअसल बाबूलाल मरांडी अपने पैतृक आवास कोदईबांक आए हुए थे। जहां उनके घर की छप्पर पर खपड़ा लगाने का कार्य चल रहा था। संघर्षों से निकले व मिट्टी से जुड़े बाबूलाल भला इसे देख कैसे खुद को रोक पाते। वे स्वयं ही लकड़ी की सीढ़ियों से होते हुए घर की छप्पर पर चढ़ गए और काम कर रहे लोगों के साथ बैठकर खपड़ा लगाने लगे। इस दौरान उनके कुछ शुभचिंतकों ने कड़ी धुप को देखते हुए उनसे नीचे उतर जाने का आग्रह भी किया लेकिन बाबूलाल तो ठहरे किसान आदमी, वे भला इतनी जल्दी कैसे उतर जाते। उन्होंने थोड़ी देर तक खपड़ा फेरा फिर वहां से उतरे। बाबूलाल का मानना है कि व्यक्ति को हमेशा मिट्टी से जुड़े रहना चाहिए, भले ही आप कहीं भी पहुंच जाएं लेकिन अपने संघर्ष अपनी शालीनता को कभी नहीं भूलनी चाहिए।

नीट परीक्षा 4 को, डीसी व एसएसपी ने परीक्षा केंद्रों का लिया जायजा

नवीन मेल संवाददाता। धनबाद
देश के मेडिकल कॉलेजों नामांकन के लिए नीट परीक्षा 4 मई को होगी. परीक्षा को लेकर धनबाद जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क है. परीक्षार्थियों को शांतिपूर्ण और पारदर्शी माहौल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से डीसी माधवी मिश्रा व एसएसपी एचपी जनार्दनन ने बुधवार को जिले के विभिन्न परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया. उन्होंने केंद्राधीक्षकों को निर्देश दिया कि परीक्षा केंद्रों में सीसीटीवी कैमरे, पानी, बिजली व शौचालय की व्यवस्था सुनिश्चित करें. एनटीए की गाइडलाइन का अक्षरशः पालन करने का भी निर्देश दिया. अधिकारियों ने बताया कि परीक्षा दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक आयोजित की जाएगी. सभी परीक्षा केंद्रों पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाएंगे. प्रवेश के समय पुरुष और महिला परीक्षार्थियों की सघन जांच की जाएगी. केंद्रों पर पुलिस बल और दंडाधिकारियों की तैनाती सुनिश्चित की गई है. साथ ही अफवाह फैलाने वालों पर सख्त निगरानी रखी जाएगी और आवश्यक कार्रवाई भी की जाएगी. निरीक्षण के दौरान सिटी एसपी अजित कुमार, एडीएम लॉ एंड ऑर्डर पीयूष सिन्हा, एसडीएम राजेश कुमार, एनटीए सिटी कोऑर्डिनेटर शैलेन्द्र शर्मा और जिला जनसंपर्क पदाधिकारी सुनील कुमार सिंह मौजूद थे.

उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी का कार्यालय, रामगढ़।
(जिला खेल शाखा)
दूरभाष : ..... Email ID : ramgarh-sports@jharkhandmail.gov.in
dsoramgarh48@gmail.com
प्रेस–विज्ञप्ति

रामगढ़ जिला अन्तर्गत खिलाड़ियों को CSR मद से खेल सामग्री/खेल कीट/अन्य सुविधाएं दी जाने की योजना है।

रामगढ़ जिला के सभी खिलाड़ियो को सूचित किया जाता है कि जिन्होने अन्तर्राष्ट्रीय/भारतीय ओलम्पिक संघ से मान्यता प्राप्त खेलों में विगत पाँच वर्ष (2021 से 2025) में अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय स्तर खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिये हो एवं वर्त्तमान मे खेल रहे है। वैसे सभी खिलाड़ी अपनी सम्पूर्ण विवरणी (यथा–आवेदन पत्र https://ramgarh.nic.in पर उपलब्ध हैं, सर्टिफिकेट, आधार/आवासीय प्रमाण पत्र आदि) को जिला खेल कार्यालय, समाहरणालय, भवन A- Block, द्वितीय तल कमरा सं0– 303 छत्तरमाण्डू, रामगढ़ अथवा Email ID : ramgarh-sports@jharkhandmail.gov.in, dsoramgarh48@gmail.com पर उपलब्ध करायेंगे। ताकि खिलाड़ियों को जिला प्रशासन, रामगढ़ के द्वारा CSR मद से खेल सामग्री/खेल कीट/अन्य सुविधाएं उपलब्ध करायी जा सकें। अधिक जानकारी हेतु श्री विकास कुमार गोप, जिला खेल समन्वयक के मोबाईल नं0–7484914066 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

ह०/–
जिला खेल पदाधिकारी,रामगढ़।
PR 351479 District(25-26)D

सुप्रभात

विचार प्रवाह

गर्व अंधा करने वाला है, यह महान आत्माओं की विशालता की दृष्टि से हमें वंचित रखता है। विनम्रता वह खुला द्वार है जिससे होकर ईश्वर की दया एवं शक्ति की दिव्य बाढ़, ग्रहणशील आत्माओं में प्रेमपूर्वक प्रवाहित होती है। **- श्री श्री परमहंस योगानंद**

संपादकीय

बढ़ती मांग से वैश्विक बिजली संकट

हमारे कथित आदर्श पश्चिमी देशों स्पेन और पुर्तगाल में पूरी तरह और यूरोप के कुछ हिस्सों में जो अभूतपूर्व बिजली संकट पैदा हुआ और जिससे इन यूरोपीय देशों के करोड़ों लोगों की जिंदगी अचानक अंधेरे में डूब गई, उससे जनजीवन तो अस्त-व्यस्त हुआ ही, यह भी उजागर हुआ कि हमारी आधुनिक जीवनशैली स्थिर और भरोसेमंद ऊर्जा आपूर्ति पर किस कदर निर्भर है। इस पूर्ण ब्लैकआउट की स्थिति स्पेन और पुर्तगाल में पूरी तरह और यूरोप के कुछ हिस्सों में जो अभूतपूर्व बिजली संकट पैदा हुआ और जिससे इन यूरोपीय देशों के करोड़ों लोगों की जिंदगी अचानक अंधेरे में डूब गई, उससे जनजीवन तो अस्त-व्यस्त हुआ ही, यह भी उजागर हुआ कि हमारी आधुनिक जीवनशैली स्थिर और भरोसेमंद ऊर्जा आपूर्ति पर किस कदर निर्भर है। इस पूर्ण ब्लैकआउट की स्थिति में इन देशों में वायु यातायात, रेल और मेट्रो सेवाएं तो थमी ही, ट्रैफिक सिग्नलों व स्वास्थ्य सेवा में व्यवधान से मचीअफरा-तफरी की कल्पना भी की जा सकती है। इस संकट का कारण अब तक स्पष्ट नहीं है, लेकिन असामान्य मौसमी घटना को इसकी एक वजह बताया जा रहा है। मुमकिन है कि ज्यादा गर्मी की वजह से मांग बढ़ गई हो, और ग्रिड उसे झेल न सकी हो। दक्षिणी-पश्चिमी फ्रांस में लगी आग को भी इसकी संभावित वजह बताया जा रहा है, हालांकि फ्रांस ने इससे इन्कार किया है। डिजिटल युग में बिजली ग्रिड साइबर अपराधियों के लिए एक आकर्षक लक्ष्य बन सकती है। हालांकि, ऐसी किसी आशंका को फिलहाल खारिज ही किया जा रहा है। फिर भी, अगर यह साइबर हमला साबित होता है, तो यह यूरोप के ऊर्जा बुनियादी ढांचे की सुरक्षा पर सवाल उठाएगा। 2006 में भी ग्रिड में आई तकनीकी समस्या के चलते पूरे यूरोप में ब्लैकआउट की स्थिति पैदा हो गई थी, लेकिन तब ऐसा केवल दो घंटे के लिए हुआ था। ऐसी घटनाएं हमें पहला सबक तो यही देती हैं कि बढ़ती मांग को देखते हुए ऊर्जा ग्रिड को मजबूत और सुरक्षित बनाने की तत्काल आवश्यकता है और दूसरा यह कि इस तरह के संकटों से निपटने के लिए बेहतर आपातकालीन योजनाओं और बैकअप सिस्टम की जरूरत है। कहा जा रहा है कि बिजली की आपूर्ति को सामान्य होने में छह से दस घंटे या उससे भी ज्यादा लग सकते हैं। जब आप ये पंक्तियां पढ़ रहे होंगे, तब तक स्थितियां सामान्य हो भी गई हों, तो भी यह एक झटका जरूर था, जो हमें बता गया कि जिंदगी कितनी नाजुक हो सकती है। यूरोप का ब्लैकआउट हमें सोचने पर मजबूर करता है कि जो बिजली हमारे रोजमर्रा की जिंदगी को आसान बनाती है, वह एकदम से गायब हो जाए, तो हमारी कमजोरियां किस तरह से सामने आने लगती हैं और जिंदगी थमने लगती है। आज जब हम स्वच्छ ऊर्जा, स्मार्ट ग्रिड और भविष्य की तकनीकों की ओर बढ़ रहे हैं, तो यूरोप की स्थिति ऊर्जा विविधीकरण और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर निवेश की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है। बिजली की रोशनी लौटने पर हर कोई राहत की सांस लेता ही है, लेकिन यूरोप में सोमवार को जैसी स्थितियां बनीं, वे इस रोशनी की कीमत का एहसास कराने के लिए काफी होनी चाहिए।में इन देशों में वायु यातायात, रेल और मेट्रो सेवाएं तो थमी ही, ट्रैफिक सिग्नलों व स्वास्थ्य सेवा में व्यवधान से मची अफरा-तफरी की कल्पना भी की जा सकती है।

डिजिटल युग में बिजली ग्रिड साइबर अपराधियों के लिए एक आकर्षक लक्ष्य बन सकती है।

अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस : वो लोग जो शहर बनाते हैं, पर खुद शहर के बाहर रहते हैं

वह सुबह किसी अलार्म से नहीं, हथौड़े की पहली चोट से जागती है। न दिन होता है, न रात-बस एक लंबा सिलसिला होता है काम का, जो सूरज की रौशनी से पहले शुरू होता है और अंधेरे के बाद भी थमता नहीं। जो हाथ छाले सहते हैं, वही देश की नींव मजबूत करते हैं। जो पसीना ज़मीन पर गिरता है, उसी से ऊँचाई की इमारतें खड़ी होती हैं। फिर भी इन हाथों को इतिहास ने पन्नों में कम, फ़र्शों में ज्यादा जगह दी है। इन्हें गिना नहीं गया-गिराया गया, झुकाया गया। पर 1 मई वह दिन है जब मज़दूर ने अपनी कमर सीधी की और दुनिया से कहा- अब और नहीं। यह दिन सिर्फ कैलेंडर की तारीख नहीं, बल्कि एक ऐसी चेतना का प्रतीक है जो सदियों से कुचली गई आवाज़ों को एकजुट करती है। यह उस ताकत की गूंज है जो मेहनतकशों के पसीने में छिपी है-वह ताकत जो नदियों को मोड़ सकती है, पहाड़ों को चीर सकती है, और सबसे ज़रूरी, समाज की सोच को बदल सकती है। मज़दूर सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, एक विचार है। वह विचार जो कहता है कि मेहनत ही सृष्टि का आधार है। कोई यूनिफॉर्म नहीं, कोई पद नहीं, कोई ओहदा नहीं-फिर भी ये दुनिया के सबसे असली लोग हैं। इनके पास दिखाने के लिए डिग्री नहीं, लेकिन हर ईंट की सीध इनकी काबिलियत का प्रमाण है। ये वो लोग हैं जो शहरों को बसाते हैं, लेकिन खुद अक्सर शहर के किनारों में खो जाते हैं। जिन्हें मॉल में घुसने की इजाज़त नहीं, लेकिन मॉल बनाने वाले वही होते हैं। मज़दूरी महज़ काम नहीं, यह एक अनकही कविता है-जो छाले, पसीने, और अनदेखी थकान की पंक्तियों में लिखी जाती है। यह जंग है-जंग अस्तित्व की, इज़्ज़त की, और उस पहचान की, जो हर बार 'अनस्किल्ड' कहकर कुचली जाती है। लेकिन सच तो यह है कि सबसे जरूरी 'स्किल' तो वही लोग रखते हैं जिनके बिना यह दुनिया रुकी हुई मशीन बन जाए। एक पल के लिए सोचिए-अगर एक दिन मज़दूर काम पर न जाएं, तो क्या होगा? शहर थम जाएंगे, सड़कें सूनी हो जाएंगी, और हमारी तथाकथित आधुनिकता का ढांचा चरमरा जाएगा। फिर भी, हम उनकी मेहनत को कितनी बार सलाम करते हैं?

आज का युग टेक्नोलॉजी और नवाचार का युग है। हम डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप्स, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बात करते हैं, लेकिन क्या हम यह भूल जाते हैं कि इन सबका इंजन अभी भी एक इंसान की मेहनत से चलता है? वह डिलीवरी बॉय, जो आपका सामान लाने के लिए तपती दोपहर में साइकिल चलाता है, क्या उसकी मुस्कान में छिपी थकावट को हम देख पाते हैं? वह वेल्डर, जिसकी आँखों में चिंगारी सिर्फ धातु को नहीं, बल्कि भविष्य को जोड़ती है, क्या हम उसकी कला को सम्मान देते हैं? श्रम अब सिर्फ कारखानों की बात नहीं—यह हर उस व्यक्ति की कहानी है जो 'जॉब' नहीं, बल्कि 'जूनून' से ज़िंदा है, भले ही वह जूनून पेट भरने का क्यों न हो। यह उस रिक्शा चालक की कहानी है जो अपने पैरों की ताकत से परिवार का बोझ ढोता है। यह उस घरेलू कामगार की कहानी है जो अपने बच्चों के लिए सपने बुनती है, भले ही उसे खुद कभी स्कूल नसीब न हुआ हो। ये लोग हमारे समाज की रीढ़ हैं, फिर भी हम उन्हें कितनी बार सिर्फ 'मज़दूर' कहकर खारिज कर देते हैं?

आज की बात

प्रो. आरके जैन

मज़दूरों की लड़ाई सिर्फ वेतन या काम के घंटों की नहीं, बल्कि उस सम्मान की है जो उनकी मेहनत का हक है। वे अक्सर अपनी लड़ाई खुद लड़ते हैं—कभी आवाज़ बनकर, कभी आंसू बनकर, और कभी चुप रहकर। लेकिन जब वे एक साथ खड़े होते हैं, तो इतिहास बदलते हैं। 1886 का वह दिन, जब शिकागो में मज़दूरों ने आठ घंटे के कार्यदिवस के लिए आवाज़ उठाई, सिर्फ एक घटना नहीं थी-वह एक चिंगारी थी जिसने पूरी दुनिया में श्रमिक आंदोलनों को जन्म दिया। आज भी, जब मज़दूर सड़कों पर उतरते हैं, तो उनकी आवाज़ सिर्फ उनकी नहीं, बल्कि हर उस इंसान की होती है जो अन्याय के खिलाफ खड़ा होता है। कोई लॉ, कोई सरकार, कोई नीति उनकी सामूहिक चेतना से बड़ी नहीं होती। यह मज़दूर दिवस सिर्फ कैलेंडर पर लाल निशान नहीं, यह चेतावनी है उन सभी व्यवस्थाओं को जो मानती हैं कि मेहनतकश सिर्फ आदेश मानते हैं। वे सवाल भी पूछते हैं, और जब वे पूछते हैं, तो दुनिया को जवाब देना पड़ता है।

हमें एक ऐसे समाज की ज़रूरत है जहाँ मेहनत को वर्ग नहीं, मूल्य माना जाए। जहाँ ईमानदार काम को हेय दृष्टि से नहीं देखा जाए। जहाँ कोई बच्चा जब यह कहे कि "मैं भी अपने पिता की तरह मज़दूर बनूंगा," तो लोग उसे दया नहीं, सम्मान की नज़र से देखें। यह तभी संभव होगा जब हम मज़दूरी को सिर्फ जीविका का साधन नहीं, बल्कि एक कला, एक गर्व का विषय मानेंगे। हमें यह समझना होगा कि मज़दूर सिर्फ काम नहीं करते, वे सपनों को आकार देते हैं। वे सिर्फ इमारतें नहीं बनाते, वे समाज की नींव रखते हैं। 1 मई तब एक सच्चा पर्व होगा जब हम श्रमिक दिवस की छुट्टी को मॉल में बिताने की बजाय, श्रमिकों के हक़ के लिए एक कदम उठाएंगे। जब हम उनकी कहानियों को सुनेंगे, उनकी आवाज़ को मंच देंगे।

यह दिन हमें यह भी याद दिलाता है कि मज़दूर सिर्फ अतीत की कहानी नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माता हैं। आज जब हम पर्यावरण, टिकाऊ विकास, और सामाजिक न्याय की बात करते हैं, तो मज़दूर उस बदलाव का केंद्र हैं। वे लोग जो खेतों में अनाज उगाते हैं, वे लोग जो कारखानों में मशीनें चलाते हैं, वे लोग जो सड़कों पर सफाई करते हैं—ये सभी हमारे ग्रह और समाज को जीवित रखने की धुरी हैं। फिर भी, हमारी नीतियां, हमारी प्राथमिकताएं, और हमारी सोच अक्सर उन्हें हाशिए पर रख देती है। हमें यह पूछना होगा-क्या हमारा विकास वाकई समावेशी है अगर उसमें मज़दूर की हिस्सेदारी सिर्फ मेहनत तक सीमित है? क्या हमारी प्रगति सच्ची है अगर उसका फल उन तक नहीं पहुंचता जो उसकी जड़ें सींचते हैं?

कोई भी क्रांति, कोई भी विकास, कोई भी निर्माण-तब तक अधूरा है जब तक उसकी नींव में मज़दूर की मुस्कान नहीं है। जब तक उनका हिस्सा सिर्फ पसीना है, न कि परिणाम। यह दिन एक कोरा नारा नहीं है, यह वह ध्वनि है जो हथौड़े की चोट से उठी थी और आज भी हमारी आत्मा को झकझोर सकती है-अगर हम सुनने को तैयार हों। यह दिन हमें न सिर्फ मज़दूरों के संघर्ष को याद करने का मौका देता है, बल्कि हमें यह सवाल करने के लिए प्रेरित करता है कि हम उनके लिए क्या कर सकते हैं। शायद यह वक्त है कि हम उनकी मेहनत को सिर्फ श्रम न मानें, बल्कि उसे एक ऐसी शक्ति के रूप में देखें जो दुनिया को बदल सकती है। शायद यह वक्त है कि हम मज़दूर दिवस को सिर्फ एक छुट्टी न बनाएं, बल्कि उसे एक संकल्प का दिन बनाएं—एक ऐसे समाज के निर्माण का संकल्प, जहाँ हर मेहनतकश का सिर ऊँचा हो, और उसकी आवाज़ सुनी जाए। क्योंकि जब तक मज़दूर की मुस्कान हमारी प्रगति का हिस्सा नहीं बनेगी, तब तक हमारी कोई भी उपलब्धि पूरी नहीं होगी।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

युवा जीवन को सत्य मार्ग पर लगाएं

आज की आधुनिक और तीव्र गति वाली दुनिया में जब हर व्यक्ति अपनी उपलब्धियों की दौड़ में व्यस्त है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम जीवन के मूल प्रश्न पर विचार करें "क्या हम सही मार्ग पर हैं?" विशेषकर युवाओं के लिए यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उनके द्वारा चुना गया मार्ग ही भविष्य की दिशा तय करता है। वर्तमान समय में तकनीक और सुविधाओं की प्रगति ने जीवन को भौतिक दृष्टि से तो सरल बना दिया है, लेकिन मानसिक रूप से व्यक्ति अधिक विचलित और असंतुलित हो गया है। युवा वर्ग सोशल मीडिया, प्रतिस्पर्धा और सफलता के दबावों से घिरा हुआ है। इसी कारण जीवन की सच्ची दिशा, मूल्य और उद्देश्य कहीं खोते जा रहे हैं। भारतीय धर्मशास्त्रों में 'सत्य' को सबसे बड़ा धर्म माना गया है "सत्यमेव जयते" केवल एक उद्घोष नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं: "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।" (अध्याय 3, श्लोक 35) अर्थात् अपने कर्तव्य को सत्य और निष्ठा से निभाना, चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो, श्रेष्ठ है। यह संदेश युवाओं को यह प्रेरणा देता है कि वे दिखावे, छल या प्रतियोगिता में किसी को गिराने की प्रवृत्ति से ऊपर उठें और आत्मनिर्भर एवं धर्मनिष्ठ बनें। ऋषि याज्ञवल्क्य, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद जैसे महान व्यक्तित्वों ने सत्य और आत्मचिंतन को ही जीवन की मूल दिशा बताया। विवेकानंद जी ने कहा था: "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" यह लक्ष्य केवल भौतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि आत्मिक शांति, समाज के लिए उपयोगी जीवन और सच्चाई पर आधारित आचरण भी है। आज का युवा जिस मानसिकता से गुजर रहा है, उसमें एक प्रमुख समस्या है, संतुलन की कमी। दूसरों को नीचा दिखाना, आलोचना करना, जलन और आत्मप्रशंसा की प्रवृत्ति हमारे मूल संस्कारों से भटकाव का सूचक है। संत तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में लिखा: "पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे।" अर्थात् दूसरों को उपदेश देने वाले तो बहुत मिलते हैं, पर स्वयं उस पर आचरण करने वाले विरले ही होते हैं। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, कबीरदास, रहीम जैसे लेखकों और संतों ने सत्य, करुणा और आत्मबोध की शिक्षा दी। कबीर कहते हैं: "साँच कहो तो मारन धावे, झूठ सहै सब कोई।" अर्थात् सत्य बोलना कठिन है, पर अंततः वही टिकता है। आज के युवाओं में ऊर्जा, क्षमता और नवाचार की भावना है। **(ये लेखक के निजी विचार हैं।)**

आपकी बात

डॉ दीपक प्रसाद
रंगकर्मी, निर्देशक
सहायक आचार्य

श्रीकृष्ण-भक्ति के दिव्य एवं अलौकिक प्रतीक हैं सूरदास

सूरदास जयंती- 2 मई, 2025

अलग बात

ललित गर्ग

इस संसार में यदि सबसे बड़ा कोई संगीतकार है तो वो हैं श्रीकृष्ण। जिस प्रकार से तत्व, रज और तम-इन तीनों गुणों के समन्वय को प्रकृति कहा गया है, उसी प्रकार से गायन, वादन और भक्ति इन तीनों में जो रमा हो, जो पारंगत हो उसे श्रीकृष्ण-भक्त गया गया है। ऐसे ही दिव्य एवं अलौकिक श्रीकृष्ण भक्ति के एक महान् चितेरे एवं श्रीकृष्ण भक्ति को समर्पित शीर्षस्थ भक्त-कवि व्यक्तित्व हैं सूरदासजी। वे एक दृष्टिहीन संत थे, जिन्होंने पूरी दुनिया को श्रीकृष्ण भक्ति का मार्ग दिखाया। वे बचपन से ही भगवान श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित थे और उनकी भक्ति में पूरी तरह से डूब गए। वे एक महान भक्ति कवि एवं हिन्दी साहित्य के सूर्य माने जाते हैं। उनका आदर्श चरित्र और जीवन दर्शन अंधेरे को भी उजाला प्रदान करता है। वे जहां भक्त, वैरागी, त्यागी और संत थे, वहीं वह उत्कृष्टतम काव्य प्रतिभा के धनी एवं गायन में कुशल भी थे। इसलिए उनके अन्तर्मन की पावन भक्तिधारा मन्दाकिनी की भांति कल-कल करके प्रस्फुटित हुई। सूरदास ने जीवनपर्यंत भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति की और ब्रज भाषा में उनकी लीलाओं का वर्णन किया। कान्हा की भक्ति में उन्होंने कई गीत, दोहे और कविताएं लिखी हैं। प्रभु श्रीकृष्ण का गुणगान करते हुए उन्होंने सूरसागर, सूर-सारवली और साहित्य लहरी जैसी महत्वपूर्ण रचनाएं कीं, जो भक्ति-साहित्य की अनमोल धरोहर है। उनका जन्म एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में संभवतः सन् 1535 की वैशाख शुक्ल पंचमी को हुआ जो इस वर्ष की 2 मई, 2025 है। चार भाइयों में सूरदास सबसे छोटे एवं नेत्रहीन थे। माता-पिता इनकी ओर से उदासीन रहते थे। निर्धनता एवं माता-पिता की उनके प्रति उदासीनता ने उन्हें विरक्त बना दिया। वह घर से निकल कर चार कोस की दूरी पर तालाब के किनारे रहने लगे।

सूरदास, श्रीकृष्ण भक्ति के महान कवियों में से एक हैं, जिनकी भक्ति में प्रेम, माधुर्य और विरह का अनूठा संगम है। सूरदास की भक्ति सगुण भक्ति धारा के पुष्टिमार्ग से जुड़ी है, जहाँ वे श्रीकृष्ण को अपने

जीवन का सर्वस्व मानते हैं। उनकी भक्ति में सख्य भाव की प्रधानता है, जहाँ वे श्रीकृष्ण को अपना सखा मानते हैं और उनके साथ प्रेममय संबंध स्थापित करते हैं। सूरदास का व्यक्तित्व भी बहुत विरल है, वे एक अनूठे भक्त थे जो श्रीकृष्ण के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे और उनकी भक्ति में पूरी तरह से लीन थे। उन्होंने ऐसे समय में श्रीकृष्ण भक्ति की धारा प्रवाहित की जब समाज में धर्म की हानि हो रही थी, अधर्म पुष्ट हो रहा था, सज्जन कष्ट झेल रहे थे और दुर्जन आनन्द भोग रहे थे। ऐसे समय में सूरदास भला तटस्थ कैसे रहते? इस तरह सूरदास की भक्ति केवल श्रीकृष्ण तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने अपने काव्य में मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी चित्रित किया है।

मान्यता के अनुसार एक बार सूरदास श्रीकृष्ण की भक्ति में इतने डूब गए थे कि वे एक कुंए में जा गिरे, जिसके बाद भगवान श्रीकृष्ण ने खुद उनकी जान बचाई और आंखों की रोशनी वापस कर दी। जब श्रीकृष्ण भगवान ने उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर वरदान में कुछ मांगने के लिए कहा तो उन्होंने कहा कि 'आप फिर से मुझे अंधा कर दें। मैं श्रीकृष्ण के अलावा अन्य किसी को देखना नहीं चाहता।' वे भले ही अंधे थे, लेकिन उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं को अपने हृदय से देखा और सुना और उनके बारे में सुंदर पद लिखे। संत सूरदास द्वारा रचित काव्य साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान भारतीय लोक संस्कृति और परम्परा को उच्च शिखर पर आसीन कराने में हुआ। उन्होंने द्वापर के नायक श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं का समसामयिक लोक-आस्था के अनुरूप चित्रण किया और भगवान को एक लोकनायक के रूप में प्रस्तुत किया। भगवान को लौकिक रूप में प्रस्तुत कर सूरदासजी ने हमारे समाज को एक नई आस्था एवं नई भक्ति की अवधारणा दी है। वास्तव में सूरदासजी का काव्य लालित्य, सौन्दर्य, वात्सल्य, श्रृंगार, शांत रस और प्रेम का काव्य है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

फेसबुक वॉल से

एक्स से

आज का दोहा

उम्र गयी, हासिल हुए, रिश्ते कुछ एहसास।
एक अकेला तम, बढा, घटता गया उजास।।
सोमदत्त शर्मा, गाजियाबाद (उ.प्र.)

रचना भेजिए

समाचारों के संबंध में शिकायत या इस पेज के लिए आर्टिकल कृप्या भेजें artical.rnmail@gmail.com
कॉल/व्हाट्सएप 8292553444

संपादक

विज्ञान संचार के लिए वैज्ञानिक की निरंतरता जरुरी

आज अधिक से अधिक हिंदी विज्ञान संस्थानो का कभी बुरा दौर चल रहा है जो चिंता की बात है अच्छे समय में सब साथ रहते हैं और बुरा समय में सब भागने लगते हैं या मज़ाक का पात्र बन जाते हैं हिंदी विज्ञान की सबसे पुरानी संस्थान, विज्ञान परिषद, प्रयाग, प्रयागराज की स्थापना सन 1935में हुई और उसकी पत्रिका विज्ञान शायद 2साल बाद 1937 में प्रकाशित हुई दरअसल हिंदी में सबसे पुरानी विज्ञान की पत्रिका विज्ञान ही थी जो आजादी के बाद से अब तक चल रही है उसका भी कोरोना के बाद आर्थिक संकट में घिर गई और लोगों से मदद मांगकर पत्रिका को 2औऱ 3अंक साथ मिलाकर चलानी पड़ी, बाद में विज्ञान परिषद, प्रयाग जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय,प्रयागराज के जमीन पर बनी थी वो कहीं से फंड न मिलने के कारण, हॉल व जो कमरा बनवाया था उसे किसी कार्यक्रम में पैसा लेकर बुक करने की नौबत आई,2013 में विज्ञान परिषद का शताब्दी सामारोह में बहुत से विज्ञान लेखकों को सम्मान मिला जिन्होंने सहायता राशि भी दि जिसमें मुझे भी बुलाया गया उससे पहले उस समय के विज्ञान और प्रोधोगिकी विभाग के सचिव ने विज्ञान परिषद का दौरा किया और परिषद के शताब्दी समारोह हेतु 1करोड़ की राशि को स्वीकृति दि और बहुत धूमधाम से शताब्दी सामारोह हुआ जिसमें शुरुआत में पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम साहब ने उसका उद्घाघाटन किया, जिसमें जाने माने परमाणु वैज्ञानिक, और भारत सरकार के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार डॉ (स्व) आर चिदमरम सर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे और विज्ञान परिषद के प्रधानमंत्री डॉ शिवगोपाल मिश्र ने उनका स्वागत किया और अतिथि के कर कमलों द्वारा विज्ञान परिषद की स्मारिका व पुस्तक का विमोचन हुआ इधर हिंदी विज्ञान में एक और नई क्रांति मुंबई के वैज्ञानिकों ने 1968 में हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद की नींव रखी और 2साल बाद वैज्ञानिक पत्रिका का सतत प्रकाशन हुआ जो आज भी ऑनलाइन माध्यम से चल रही है औऱ हाल ही में महान वैज्ञानिक डॉ आर चिदंबरम के निधन पर वैज्ञानिक का जनवरी -मार्च 25 का अंक डॉ चिदंबरम स्मृति विशेषाँक निकाल कर श्रद्धांजलि अर्पित की। अतः राष्ट्रीय अस्तर पर हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद ही एक मात्र ऐसी संस्था बची है जो इन उद्देश्यों क़ो पूर्ण कर सकती 11मई 25क़ो 10:30बजे रविवार, क़ो नई कार्यकारिणी का गठन हेतु 11 मई 25 को अनुशक्तिनगर में विशेष आम सभा बुलाई गई है आम सभा में चुनाव कार्यकारिणी समिति 25-27 हेतु सभी आजीवन सदस्यों को सचिव सत्य प्रभात प्रभाकर व राजेश कुमार सह सचिव ने परिषद परिषद के आगे आने वाले कार्यक्रम के बारे में बात करेंगे , बाद में नई संपादक मंडल व व्यवस्थापन मंडल के सदस्य बनाए जायेंगे व नई कार्यकारिणी के सदस्यों को वर्तमान कार्यकारिणी के को अब परिषद के आगे के कार्यक्रम के बारे में बताया जायेगा जो सभा में उपस्थित सभी लोगों ने स्वीकार हो परिषद के सभी आजीवन सदस्यो से अपील है कि पुनः आम सभा में उपस्थित है क्योंकि वैज्ञानिक के वर्तमान अंक में डॉ आर चिदंबरम के विशेष अंक का सफल प्रकाशन से उन्हें याद किया गया महान परमाणु वैज्ञानिक का भारत में नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया औऱ पोखरण 2 परमाणु परीक्षण में मुख्य भूमिका थी खासबात यह है कि वे बहुत पहले हिन्दी विज्ञान के अध्यक्ष भी थे और उनका आकस्मिक निधन मुंबई में परमाणु वैज्ञानिक डॉ. चिदंबरम का 4 जनवरी 2025 में 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया, वे भारत के परमाणु कार्यक्रम के प्रमुख वास्तुकारों में से एक थे., हिंदी के कार्यकारिणी समिति के चुनाव हेतु कृप्या ईमेल - hvspelection@gmail.com पर 5दिन के अंदर आवेदन पत्र भेज दे. हिन्दी विज्ञान की लोकप्रिय पत्रिका वैज्ञानिक से जुड़े सभी विज्ञान लेखकों पाठकों और सृजनशील व्यक्तियों के निरंतर सहयोग, स्नेह, विश्वास और वैज्ञानिक से लगाव है। इसके मुख्य संपादक श्री राजेश कुमार मिश्र हैं व संपादकीय बोर्ड के सदस्य सर्वश्री, राजेश कुमार, केके वर्मा, डॉ संजय कुमार पाठक व वैज्ञानिक के व्यवस्थापक ,सर्वश्री श्री नवीन त्रिपाठी, बी.एन. मिश्र,अनिल अहिरवार, प्रकाश कश्यप, बधाई के पात्र हैं.विज्ञान साहित्य का ऐसा मिला-जुला ढंग उस साहित्य के सृजन में सहायक होता है जो पूर्णतः भौतिकवादी होता है तथा शुद्ध कला का निर्माण नहीं करता है.हिंदी विज्ञान की पत्रिका वैज्ञानिक का योगदान विज्ञान संचार हेतु जरुरी है ताकि इससे नवविज्ञान लेखकों क़ो एक वैज्ञानिक मंच मिल सके।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

देश की बात

संजय गोस्वामी

स्वामी, पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एंव मुद्रक हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा 502, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची से प्रकाशित एवं एस एच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड), नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित। रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155, प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकारी संपादक : सुनील सिंह 'बादल'*, समाचार संपादक : त्रिभुवन कुमार सिन्हा, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नंबर : 06562-796018, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान हरमू रोड, रांची-834001, फोन नंबर : 0651-3553943, ई-मेल : news.rnmail@gmail.com, article.rnmail@gmail.com
(*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

यूक्रेन विजय दिवस युद्ध विराम को करना चाहता है बाधित : रूस

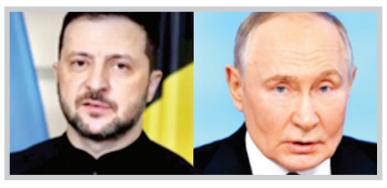

मॉस्को (आईएएनएस)। रूस ने कहा कि यूक्रेन विजय दिवस समारोह के दिन राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की ओर से घोषित युद्धविराम को बाधित करना चाहता है। कीव शासन के अपराधों के लिए रूसी विदेश मंत्रालय के विशेष दूत रोडियन मिरोशनिक के मुताबिक यूक्रेन संवाद को बाधित करना और तनाव को बढ़ाना चाहता है। मिरोशनिक ने दावा किया कि यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की का शासन जानबूझकर रूस के सीमावर्ती क्षेत्रों में नागरिकों को निशाना बना रहा है। राजनयिक ने अपने टेलीग्राम चैनल पर कहा, "ताकतवर हथियारों का इस्तेमाल नतीजों की पुष्टि करता है। यह और कुछ नहीं बल्कि विजय दिवस समारोह की अवधि के लिए दुश्मनी को निलंबित करने के रूस के शांतिप्रिय प्रस्ताव के जवाब में खूनी शासन का हमला है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अगले महीने विजय दिवस समारोह के मद्देनजर यूक्रेन में 72 घंटे के युद्धविराम की घोषणा की।

दमिश्क के पास भड़की सांप्रदायिक हिंसा, मौत का आंकड़ा 18 पहुंचा

दमिश्क (आईएएनएस)। दमिश्क के दक्षिणी उपनगरों में सांप्रदायिक अशांति के बीच झड़पें तेज हो गई हैं। ब्रिटेन स्थित सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स (एसओएचआर) के अनुसार, अशरफियात सहनाया में आरपीजी सहित हल्के और मध्यम हथियारों के साथ फिर से संघर्ष होने की सूचना मिली है। सहनया और अशरफियत सहनया में गोलीबारी और कम से कम एक विस्फोट की खबर मिली है, जिसके बारे में माना जा रहा है कि यह विस्फोट मोर्टार शेल के कारण हुआ था। इसके चलते जनरल सुरक्षा निदेशालय को दोनों शहरों में रात्रि कर्फ्यू लागू करना पड़ा। एसओएचआर ने बताया कि हिंसा में मरने वालों की संख्या बढ़कर 18 हो गई। मृतकों में जरामाना, सहनाया, अशरफियत सहनाया क्षेत्रों के नौ निवासी और सरकार समर्थक बलों के नौ सदस्य शामिल हैं। कम से कम 15 अन्य लोग घायल हुए हैं, जिनमें से कई की हालत गंभीर है।

भारत-इजरायल संबंध को नुकसान पहुंचाने की साजिश!

एजेंसी। नई दिल्ली

भारत में इजरायल के दूतावास ने बुधवार को उस दावे को फर्जी बताया जिसमें कहा गया कि उसकी ओर से विदेश मंत्रालय को 'नोट वर्बल' जारी किया गया। इस कथित 'नोट वर्बल' में जम्मू-कश्मीर में संयुक्त सैन्य अभ्यास के दौरान एक भारतीय सेना अधिकारी पर इजरायल रक्षा बल (आईडीएफ) की एक कर्मी का यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया गया। दूतावास ने इस घटना पर हैरानी जताते हुए कहा कि भारत और इजरायल के बीच मजबूत रिश्ते को नुकसान पहुंचाने के लिए इस तरह की 'फर्जी खबरों' का सहारा लेने वाले सफल नहीं होंगे।

इजरायली दूतावास ने एक्स पर लिखा, "अविश्वसनीय! इजरायल और भारत के बीच रिश्ता इतना मजबूत है कि नफरत करने वाले इसे नुकसान पहुंचाने के लिए फर्जी खबरों का सहारा ले रहे हैं। यह काम नहीं करेगा।" इजरायल ने घातक पहलगाम आतंकी हमले के बाद आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत के साथ अपनी एकजुटता व्यक्त की है। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के दुख को साझा करने पर इजरायल का आभार व्यक्त किया।
- पिछले सप्ताह विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने नई दिल्ली में इजरायली राजदूत रियूवेन अजार से मुलाकात की।

ने पहलगाम आतंकी हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फोन किया और भारत के लोगों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की। नेतन्याहू ने 24 अप्रैल को एक्स पर लिखा, "मैंने आज भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बात की और कश्मीर में इस्लामी आतंकवादी हमले के बाद भारत के लोगों के प्रति अपनी और इजरायल के लोगों की संवेदनाएं व्यक्त कीं। प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के दुख को साझा करने के लिए मुझे धन्यवाद दिया और इस बात पर जोर दिया कि हमारे दोनों देश जानलेवा आतंकवाद के खिलाफ महत्वपूर्ण लड़ाई में कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं।" पिछले सप्ताह विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने नई दिल्ली में इजरायल के राजदूत रियूवेन अजार से मुलाकात की थी। उन्होंने सीमा पार आतंकवाद से निपटने में इजरायल के दृढ़ समर्थन की सराहना की।

अजार ने सोशल मीडिया पर उपयोगी चर्चा के लिए विदेश मंत्री जयशंकर का आभार व्यक्त किया। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, "विदेश मंत्री एस. जयशंकर के साथ उपयोगी चर्चा के लिए धन्यवाद। आम चुनौतियों का मुकाबला करने और कई अवसरों का लाभ उठाने के लिए भारत और इजरायल के मिलकर काम करने की उम्मीद है!

आतंकियों ने 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल - पहलगाम स्थित बैसरन घाटी में लोगों (ज्यादातर पर्यटक) पर अंधाधुंध गोलियां चला दी थीं। हमले में कम से कम 26 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए थे।

दमिश्क के निकट सांप्रदायिक हिंसा जारी

मृतकों की संख्या बढ़कर हुई 18

दमिश्क (आईएएनएस)। दमिश्क के दक्षिणी उपनगरों में सांप्रदायिक अशांति के बीच झड़पें तेज हो गई हैं। ब्रिटेन स्थित सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स (एसओएचआर) के अनुसार, अशरफियात सहनाया में आरपीजी सहित हल्के और मध्यम हथियारों के साथ फिर से संघर्ष होने की सूचना मिली है। सहनया और अशरफियत सहनया में गोलीबारी और कम से कम एक विस्फोट की खबर मिली है, जिसके बारे में माना जा रहा है कि यह विस्फोट मोर्टार शेल के कारण हुआ था। इसके चलते जनरल सुरक्षा निदेशालय को दोनों शहरों में रात्रि कर्फ्यू लागू करना पड़ा। एसओएचआर ने बताया कि हिंसा में मरने वालों की संख्या बढ़कर 18 हो गई। मृतकों में जरामाना, सहनाया, अशरफियत सहनाया क्षेत्रों के नौ निवासी और सरकार समर्थक बलों के नौ सदस्य शामिल हैं। कम से कम 15 अन्य लोग घायल हुए हैं, जिनमें से कई की हालत गंभीर है।

चिन्मय की जमानत याचिका खारिज, रिहाई की राह कठिन

एजेंसी। ढाका

बांग्लादेश की अदालत ने बुधवार को हिंदू संत चंदन कुमार धर उर्फ चिन्मय कृष्ण दास को देशद्रोह के एक मामले में जमानत दे दी। स्थानीय मीडिया ने यह जानकारी दी। चिन्मय के वकील प्रोलाद देब नाथ ने 'द डेली स्टार' को बताया कि हाईकोर्ट के आदेश के बाद उनके जेल से रिहा होने की उम्मीद है। अगर सुप्रीम कोर्ट इस फैसले पर रोक नहीं लगाता है तो चिन्मय दास को रिहा कर दिया जाएगा।जस्टिस मोहम्मद अताउर रहमान और जस्टिस मोहम्मद अली रजा की पीठ ने चिन्मय की ओर से दायर जमानत याचिका पर सुनवाई के बाद यह आदेश पारित किया। रिपोर्ट के मुताबिक 23 अप्रैल को चिन्मय के वकील अपूर्व कुमार भट्टाचार्य ने उच्च न्यायालय की पीठ से अपने मुवक्किल को जमानत देने की प्रार्थना करते हुए कहा कि चिन्मय बीमार हैं और बिना सुनवाई के जेल में कष्ट झेल रहे हैं। पिछले साल 31 अक्टूबर को चटगांव के मोहोरा वार्ड बीएनपी के पूर्व महासचिव फिरोज खान ने कोतवाली पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज कराया था।

इसमें चिन्मय और 18 अन्य पर बंदरगाह शहर के न्यू मार्केट इलाके में 25 अक्टूबर को हिंदू समुदाय की एक रैली के दौरान राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने का आरोप लगाया गया। 26 नवंबर को चटगांव की एक अदालत ने चिन्मय को जेल भेज दिया, इससे एक दिन पहले राजधानी में उनकी गिरफ्तारी के बाद उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी गई थी। दास की गिरफ्तारी से व्यापक आक्रोश फैल गया था, कई लोगों ने उनकी तत्काल रिहाई की मांग की। दास बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के अधिकारों और सुरक्षा के लिए काम करने वालों में शामिल रहे हैं।

मिशिगन रैली में जमकर थिरके राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप

एजेंसी। वाशिंगटन

राष्ट्रपति के तौर पर 100 दिन पूरे करने का जश्न डोनाल्ड ट्रंप ने डांस करके मनाया। मिशिगन रैली में उन्होंने 100 दिन की उपलब्धियां गिनाईं और पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन की खामियों का जिक्र किया। इस रैली का नाम '100 डेज ऑफ ग्रेटनेस' रखा गया। व्हाइट हाउस की ओर से जारी एक वीडियो क्लिप में ट्रंप डांसिंग मूव्स करते और मौजूद समर्थकों को 'थैंक्यू' कहते देखे जा सकते हैं। इस दौरान ट्रंप ने समर्थकों के समूह को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि "हम आज रात अपने देश के इतिहास में किसी भी प्रशासन के सबसे सफल 100 दिनों का जश्न मनाने के लिए एकत्र हुए हैं।" ट्रंप ने इस दौरान टैरिफ से लेकर अप्रवासन नीतियों का बखान किया। उन्होंने बाइडेन प्रशासन और डेमोक्रेट्स पर जमकर हमला बोला। मिशिगन रैली में ट्रंप ने अपने पूर्ववर्ती जो बाइडेन पर तंज कसा और दोहराया कि 2020 का राष्ट्रपति चुनाव उनसे चुराया गया था। ट्रंप ने रोजगार

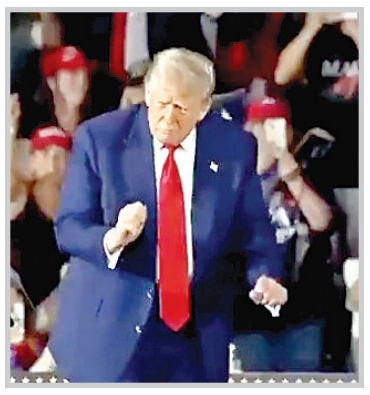

सृजन के मामले में भी अपनी पीठ थपथपाई। कहा, 'बहुत सारी ऑटो नौकरियां आ रही हैं। कंपनियां आ रही हैं...वे सभी मिशिगन वापस आना चाहती हैं और फिर से कारें बनाना चाहती हैं। आप जानते हैं क्यों? हमारी कर और शुल्क नीति के कारण, वे दुनिया भर से आ रहे हैं।' ट्रंप ने अपने समर्थकों, खासकर ऑटो कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया।

नवी मुंबई में ड्रग सिंडिकेट का पर्दाफाश

मुंबई। नवी मुंबई पुलिस के विशेष जांच दल (एसआईटी) ने बड़े ड्रग सिंडिकेट का पर्दाफाश करते हुए दो पुलिसकर्मियों, एक कस्टम अधिकारी सहित 10 लोगों को गिरफ्तार किया है। इन सभी के पास से 73 लाख रुपये मूल्य की प्रतिबंधित सामग्री और अन्य संपत्ति जब्त की गई है। नवी मुंबई के क्राइम ब्रांच के पुलिस उपायुक्त अमित काले ने बुधवार को बताया कि 14 अप्रैल को एक गुप्त सूचना के आधार पर नेरुल पुलिस स्टेशन की टीम ने आशीष गवरे (22) और अहमद आल्गी(23) को 2.76 लाख रुपये मूल्य की 17.19 ग्राम ड्रग के साथ गिरफ्तार किया था। इन दोनों से पूछताछ के बाद 28 वर्षीय सुजीत बंगेरा की गिरफ्तारी हुई। बंगेरा अमेरिका या थाईलैंड से ड्रग्स मंगवाता था। कस्टम अधिकारी प्रशांत गौर की मदद से इस पार्सल को एयरपोर्ट पर मंजूरी मिल जाती थी।

सेना को मिला नया उत्तरी कमांडर

एयर मार्शल नर्मदेश्वर तिवारी होंगे नए वायु सेना उप प्रमुख

नई दिल्ली (हि.स.)

चार दशकों का शानदार करियर पूरा करने के बाद आज लेफ्टिनेंट

जनरल एमवी सुचिन्द्र कुमार ने भारतीय सेना की उत्तरी कमान की कमान छोड़ दी। अब सेना की उत्तरी कमान के नए प्रमुख अब लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा होंगे। साउथ वेस्टर्न एयर कमांड के कमांडर एयर मार्शल नर्मदेश्वर तिवारी को वायु सेना का नया उप प्रमुख नियुक्त किया गया है। इन बदलावों से भारतीय सेना और वायु सेना की संचालन क्षमता और सामरिक ताकत में और वृद्धि होगी। उत्तरी कमान के सेना कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल एमवी सुचिन्द्र कुमार ने सेवानिवृत्त होने और कमान छोड़ने पर उधमपुर के ध्रुव युद्ध स्मारक में बहादुरों के सर्वोच्च बलिदान को सम्मानित करने के लिए पुष्पांजलि अर्पित की।

एयर मार्शल एसपी धारकर के सेवानिवृत्त होने के बाद तिवारी ने संभाली कमान

एयर मार्शल नर्मदेश्वर तिवारी वायु सेना के नए उप प्रमुख होंगे। वह एयर मार्शल एसपी धारकर का स्थान लेंगे, जो 40 से अधिक वर्षों के शानदार करियर के बाद 30 अप्रैल को सेवानिवृत्त हुए हैं। एयर मार्शल तिवारी वर्तमान में गांधीनगर में साउथ वेस्टर्न एयर कमांड के कमांडर हैं। यह बदलाव भारतीय वायु सेना के लिए एक नए युग की शुरुआत है, क्योंकि एयर मार्शल तिवारी का अनुभव और रणनीतिक क्षमता भारतीय वायु सेना की रणनीतिक दिशा को सुदृढ़ मार्गदर्शन प्रदान करेगी, जिससे वायु सेना की ताकत और प्रभाव में वृद्धि होगी। ऐसे महत्वपूर्ण समय में जब सुरक्षा के मोर्चे पर तेजी से बदलाव हो रहे हैं, तो एयर मार्शल तिवारी का नेतृत्व वायु सेना को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में मददगार साबित होगा।

राज्यों से

कोलकाता के होटल में लगी भीषण आग से 14 की मौत, पीएम मोदी ने जताया दुख

एजेंसी। नई दिल्ली

कोलकाता के बड़ा बाजार स्थित एक होटल में आग की चपेट में आने से 14 लोगों की मौत पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख जताया। साथ ही उन्होंने मृतकों और घायलों के लिए मुआवजे का भी ऐलान किया।

प्रधानमंत्री कार्यालय ने बुधवार को एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर कर बताया, "कोलकाता में आग लगने की दुर्घटना में लोगों की मौत से दुखी हूं। अपने प्रियजनों को खोने वालों के प्रति संवेदना। घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं। प्रत्येक मृतक के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से 2 लाख रुपए की अनुग्रह राशि दी जाएगी। इसके अलावा, घायलों को 50 हजार रुपए दिए जाएंगे।"

यह घटना मंगलवार देर रात की है। कोलकाता के बड़ा बाजार के मछुआ फल मंडी स्थित ऋतुराज होटल में अचानक आग लगी थी। यह आग इतनी भीषण थी कि इसने कुछ ही देर में पूरे होटल को अपनी चपेट में ले लिया और होटल के अंदर धुआं भर गया। इस दौरान होटल में मौजूद कुछ लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। हालांकि, धुएं की चपेट में आने से उनकी मौत हो गई।

मुआवजे का किया ऐलान

भाजपा ने बताया 'हत्या', सीएम पर लगाए लापरवाही के आरोप

पश्चिम बंगाल के भाजपा अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार ने भी घटना पर दुख जताया। उन्होंने एक बयान में कहा, "मछुआ बाजार के एक होटल में लगी आग में 14-15 लोगों की मौत हो गई, जिसमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। यह महज एक घटना नहीं है बल्कि यह हत्या है, क्योंकि ऐसी घटनाएं बार-बार हो रही हैं। कोलकाता में स्थिति बेहद खराब है। फायर ब्रिगेड मंत्री और मुख्यमंत्री को इस पर ध्यान देना चाहिए, लेकिन मुख्यमंत्री के पास समय ही कहां है। वह सिर्फ जश्न मनाने में व्यस्त हैं।" चश्मदीद चंचल गुप्ता ने आईएएनएस से बात करते हुए बताया कि होटल में आग मंगलवार देर रात करीब 9 बजे के आसपास लगी थी। आग लगने के बाद दमकल विभाग की टीम को मौके पर पहुंचने में एक घंटा लगा था और करीब ढाई घंटे के बाद आग पर काबू पाया जा सका। सुबह साढ़े चार बजे के आसपास शवों को होटल से बाहर निकाला गया। इस हादसे में करीब 18 से 20 लोगों की मौत हुई है।

ब्यूटी पार्लर से दो घंटे बाद लौटी दुल्हन, तो दूल्हे के पिता को आया हार्ट अटैक

इटावा । उत्तर प्रदेश के इटावा शहर में एक शादी उस समय टल गई जब ब्यूटी पार्लर गई दुल्हन वहां से अचानक गायब हो गई. शादी समारोह एक मैरिज होम में हो रहा था. दूल्हा सज-धज कर पहुंच गया था, लोग दावत में खाना खा रहे थे और बैंड बाजा तैयार था. लेकिन जैसे ही दुल्हन के देर तक नहीं लौटने की खबर फैली तो पूरा माहौल ही बदल गया। बताया जा रहा है कि करीब एक हजार से ज्यादा मेहमान मौजूद थे। चर्चाओं का दौर शुरू हो गया. बैंड, आर्केस्ट्रा और हलवाई सभी पूछने लगे कि क्या शादी रुक गई है।

पाकिस्तान के सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार का दावा, कहा

भारत अगले 24 घंटों में कर सकता है अटैक

एजेंसी। नई दिल्ली

पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच हालात लगातार बिगड़ते जा रहे हैं। इस बीच पाकिस्तान के सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार ने दावा किया कि भारत अगले 24 से 36 घंटे के अंदर पाकिस्तान पर सैन्य कार्रवाई कर सकता है। पाकिस्तान के सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार ने बुधवार को अपने एक्स अकाउंट पर एक बयान जारी किया। अपने बयान में कहा, "पाकिस्तान को पुख्ता जानकारी मिली है कि भारत अगले 24-36 घंटों में पहलगाम घटना के आधार पर पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई करने की योजना बना रहा है।"

"पाकिस्तान खुद आतंकवाद का शिकार रहा है और इस समस्या के दर्द को भली-भांति समझता है। हमने हमेशा आतंकवाद की हर रूप में निंदा की है, चाहे वह कहीं भी हो। एक जिम्मेदार देश के रूप में पाकिस्तान ने सच्चाई का पता लगाने के लिए एक निष्पक्ष, पारदर्शी और स्वतंत्र जांच आयोग द्वारा जांच की पेशकश की थी। दुर्भाग्यवश, भारत ने तर्कसंगत रास्ता अपनाने के बजाय तर्कहीनता और टकराव का खतरनाक रास्ता चुना है, जिसके पूरे क्षेत्र और उससे बाहर विनाशकारी परिणाम होंगे। विश्वसनीय जांच से बचना भारत के असली मंसूबों को उजागर करने के लिए पर्याप्त सबूत है।" सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार ने धमकी देते हुए कहा कि पाकिस्तान दोहराता है कि भारत की किसी भी सैन्य दुस्साहस का निश्चित और निर्णायक तरीके से जवाब दिया जाएगा।

आतंकी घटना में एनआईए को जांच में सहयोग करेंगे श्रीजीत रमेशन

एजेंसी। मुंबई

जम्मू-कश्मीर से लौटे पर्यटक श्रीजीत रमेशन ने कहा कि वह जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुई आतंकी घटना के संबंध में एनआईए जांच में सहयोग करेंगे। श्रीजीत रमेशन ने 26 अप्रैल को दावा किया था कि उनके पास एक वीडियो है, जिसमें दो आतंकवादी दिखाई दिए थे। इस बारे में उनसे एनआईए की टीम ने संपर्क किया है। श्रीजीत रमेशन ने बुधवार को न्यूज एजेंसी आईएएनएस से बातचीत की। उन्होंने बताया कि कल मुझे मुंबई में एनआईए मुख्यालय से एक कॉल आया। उसके बाद, मैंने एसपी, एनआईए मुंबई, डीवाईएसपी और तकनीकी टीम सहित शीर्ष-स्तरीय अधिकारियों के साथ लगभग पांच घंटे लंबी चर्चा की। चर्चा के दौरान, उन्होंने कई विवरण मांगे कि मैंने अपनी यात्रा कैसे शुरू की, मैं कहां रुका, मैंने कौन सा होटल बुक किया, मैंने किन स्थानीय टूर ऑपरेटरों और ड्राइवरों का इस्तेमाल किया, और अन्य विस्तृत जानकारी। मैंने अपनी ओर से उन्हें सारी जानकारी साझा की है। अगर मुझे जांच के लिए दिल्ली भी बुलाया जाता है तो मैं जरूर जाऊंगा। श्रीजीत रमेशन 26 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर से लौटे हैं। उन्होंने बताया कि वह 18 अप्रैल को पहलगाम के उसी जगह पर घूमने गए थे, जहां आतंकवादियों ने 22 अप्रैल को गोलियां बरसाई थीं। यहां उन्होंने अपनी बच्ची का रील शूट किया था। महज 12 सेकंड के इस वीडियो में दो शख्स जाते हुए दिखाई दे रहे हैं। टूरिस्ट का दावा है कि दोनों वही आतंकवादी हो सकते हैं जिनके स्केच सुरक्षा बलों ने घटना के बाद जारी किए थे। उन्होंने कहा कि उन्होंने फोटो और वीडियो राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को सौंप दिए हैं।

पाकिस्तान का जो भी समर्थन करते हैं वो देशद्रोही : सिद्धारमैया

एजेंसी। कर्नाटक

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने बुधवार को कहा कि पाकिस्तान के समर्थन में नारे लगाने वाला कोई भी व्यक्ति 'देशद्रोह' के समान है। हालांकि, उन्होंने कहा कि मंगलुरु में एक व्यक्ति की कथित भीड़ द्वारा की गई हत्या की जांच चल रही है, जिस पर 'पाकिस्तान जिंदाबाद' का नारा लगाने का आरोप था। सिद्धारमैया ने कहा कि अगर पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा लगाया गया तो यह गलत है, चाहे वह कोई भी हो। जांच अभी चल रही है, मामला दर्ज किया गया है, रिपोर्ट आने दीजिए। यह स्पष्ट हो जाएगा कि किसके खिलाफ क्या कार्रवाई की जानी चाहिए, सिद्धारमैया ने मंगलुरु में कथित तौर पर पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा लगाने के लिए एक व्यक्ति की हत्या पर संवाददाताओं द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहा। अगर कोई पाकिस्तान के पक्ष में बोलता है तो यह गलत है, यह देशद्रोह है। कर्नाटक के गृह मंत्री जी परमेश्वर ने पुष्टि की है कि मंगलुरु में एक व्यक्ति की लिंचिंग की गई। उन्होंने कहा कि पूछताछ के दौरान, घटना में शामिल लोगों ने दावा किया कि पीड़ित ने 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगाए थे, जिसके कारण भीड़ ने हमला किया। इसकी आगे जांच की जा रही है। यह बात केवल गिरफ्तार लोगों ने ही कही है। अब तक करीब 20 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस मृतक के बारे में भी पता लगा रही है और वह कहां का रहने वाला है। हमने घटना को गंभीरता से लिया है।

साड़ी चुराती महिलाओं का वीडियो वायरल छानबीन में जुटी पुलिस

भागलपुर। इन दिनों भागलपुर जिले में सोशल मीडिया पर एक सीसीटीवी फुटेज काफी तेजी से वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में देखा जा सकता है कि किस तरह से तीन महिला जिले के सुल्तानगंज के अब्जूगंज स्थित एक कपड़े की दुकान में पहुंचती है और दुकानदार से साड़ी दिखाने की बात कहती है। महिलाएं दुकानदार को अलग-अलग साड़ी दिखाने की बात में उलझाए रखती है। इसी बीच एक महिला जिसके गोद में बच्चा रहता है काफी तेजी से साड़ी के एक बंडल को अपने शरीर के अंदर छुपा लेती है। फिर बातों बातों में ही दुकान से रफूचक्कर हो जाती है। दुकानदार को जब इस बात का एहसास होता है तो वह सीसीटीवी फुटेज चेक करता है और उसके बाद उसे महिलाओं के करतूत की जानकारी मिलती है।

सीआईएससीई के 10वीं और 12वीं के रिजल्ट जारी, लड़कियों ने फिर मारी बाजी

एजेंसी। नई दिल्ली

काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन (सीआईएससीई) ने आईसीएसई और आईएससी का रिजल्ट बुधवार को घोषित कर दिया। इस बार का रिजल्ट 99 प्रतिशत से अधिक रहा है। सीआईएससीई ने छात्र-छात्राओं को सफलता पर बधाई दी है। आईसीएसई (कक्षा 10वीं) का रिजल्ट 99.09 फीसदी रहा, जबकि आईएससी (कक्षा 12वीं) का रिजल्ट 99.02 फीसदी रहा है। इस साल के रिजल्ट की खास बात यह रही है कि दोनों ही परीक्षाओं में लड़कियों ने लड़कों से बेहतर प्रदर्शन किया है। आईसीएसई (कक्षा 10वीं) में लड़कियों का पास प्रतिशत 99.37 रहा तो वहीं आईएससी (कक्षा 12वीं) में यह आंकड़ा 99.45 रहा है। सीआईएससीई ने बताया कि इस साल आईसीएसई कक्षा 10 की परीक्षा 18 फरवरी से 27 मार्च तक और आईएससी कक्षा 12 की परीक्षा 13 फरवरी से 5 अप्रैल तक आयोजित की गई थी। इसके परिणाम आधिकारिक वेबसाइट 'सीआईएससीई डॉट ओआरजी' पर जाकर देखा जा सकता है।

सीआईएससीई के मुख्य कार्यकारी और सचिव डॉ. जोसेफ इमैनुएल ने आईएएनएस से बातचीत में बताया कि काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन ने 10वीं और 12वीं परीक्षाओं के परिणाम बुधवार सुबह 11 बजे घोषित किए। आईसीएसई (कक्षा 10वीं) का रिजल्ट 99.09 फीसदी रहा, जबकि आईएससी (कक्षा 12वीं) का रिजल्ट 99.02 फीसदी रहा है।

शराब पीकर स्कूल पहुंचे हेडमास्टर को पुलिस ने किया गिरफ्तार

पूर्वी चंपारण। सुबह-सुबह ही शराब पीकर स्कूल पहुंचे हेडमास्टर को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मामला कुड़वाचैनपुर थाना क्षेत्र के उत्क्रमित मध्य विद्यालय खरुही का है। शराब पीकर लड़खड़ाते पांव और बड़बडाते जुबान के साथ स्कूल पहुंचे हेड मास्टर बच्चो और शिक्षको के सामने हंगामा करने लगे,जिसकी सूचना बच्चों ने अपने अभिभावकों को दी और फिर अभिभावकों ने पुलिस को इस मामले की जानकारी दी, जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने कुड़वाचैनपुर थाना क्षेत्र के उत्क्रमित मध्य विद्यालय खरुही के हेडमास्टर ढाका थाना क्षेत्र के विशंभरपुर निवासी रामस्वार्थ महतो को गिरफ्तार कर लिया। शिक्षा की अलख जगाने वाले और लोगो को शराबबंदी का शपथ दिलाने वाले हेडमास्टर की इस कारनामें की चर्चा पूरे जिले में हो रही है।

बिहार चुनाव से पहले जाति जनगणना का मची होड़, कांग्रेस व राजद बता रहे अपनी जीत

एजेंसी। पटना

कांग्रेस ने बुधवार को आगामी जनगणना में जाति सर्वेक्षण को शामिल करने के केंद्र सरकार के फैसले का श्रेय लेते हुए कहा कि यह लंबे समय से पार्टी की मांग रही है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने नई दिल्ली में आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीईए) की ब्रीफिंग के दौरान आगामी जनगणना में जाति के आंकड़ों को शामिल करने के सरकार के फैसले की घोषणा की। उन्होंने जाति जनगणना के मुद्दे को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने के लिए कांग्रेस और उसके सहयोगियों की भी आलोचना की। वहीं, बिहार चुनाव को लेकर राजद ने भी श्रेय लेने की शुरूआत कर दी है। कांग्रेस सांसद चमाला किरण कुमार रेड्डी ने कहा कि यह पहल तेलंगाना राज्य से आई है, जिसने हाल ही में जाति जनगणना की है। भारत जोड़ो यात्रा का संचालन करने वाले राहुल गांधी ने जाति जनगणना की आवश्यकता को देखा। हम इसे स्वीकार करने के लिए नरेंद्र मोदी जी और कैबिनेट मंत्रियों के आभारी हैं। हमारे नेता राहुल गांधी ने यही सपना देखा था। हम उनके सपने को पूरा होते देखकर खुश हैं। कांग्रेस नेता उदित राज ने कहा कि मैं इस फ़ैसले का स्वागत करता हूं। यह कांग्रेस की जीत है। आख़िरकार मोदी सरकार को जाति जनगणना करानी पड़ रही है। बिहार के पूर्व सीएम और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने केंद्रीय कैबिनेट के उस फैसले पर कहा कि जाति गणना आगामी जनगणना का हिस्सा होगी। उन्होंने कहा, "यह हमारी 30 साल पुरानी मांग थी। यह हमारी, समाजवादियों और लालू यादव की जीत है। इससे पहले, बिहार के सभी दलों ने पीएम से मुलाकात की थी, लेकिन उन्होंने हमारी मांग को अस्वीकार कर दिया।

बांग्लादेश क्रिकेट टीम पांच मैचों की टी20 सीरीज खेलने के लिए मई में करेगी पाकिस्तान का दौरा

लाहौर (आईएएनएस)

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने घोषणा की है कि बांग्लादेश की टीम पांच मैचों की टी20 सीरीज के लिए मई में पाकिस्तान का दौरा करेगी। यह सीरीज 25 मई से 3 जून तक फैसलाबाद और लाहौर में खेली जाएगी। भविष्य दौरा कार्यक्रम (एफटीपी) के तहत शुरू में तीन वनडे और तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की श्रृंखला निर्धारित की गई थी, लेकिन अब यह पांच टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों का दौरा होगा। पीसीबी ने एक बयान में कहा, "यह श्रृंखला एफटीपी का हिस्सा है। उसमें मूल रूप से तीन एकदिवसीय और तीन टी-20 मैच शामिल थे। हालांकि, अगले साल होने वाले आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप को देखते हुए दोनों बोर्ड ने आपसी सहमति से एकदिवसीय मैचों की जगह दो अतिरिक्त टी-20 मैच कराने पर सहमति जताई है। इकबाल स्टेडियम 17 साल के अंतराल के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का स्वागत करेगा। यहां 1978 से 2008 के बीच 24 टेस्ट और 16 वनडे मैच खेले गए हैं।

इस ऐतिहासिक स्थल पर आखिरी अंतर्राष्ट्रीय मैच अप्रैल 2008 में बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच वनडे मैच था। इस मैदान पर पिछले वर्ष सितंबर में प्रथम चैंपियंस वन-डे कप तथा पिछले माह राष्ट्रीय टी20 कप का सफलतापूर्वक आयोजन किया था। यहां पर 25 मई और 27 मई को श्रृंखला का पहला तथा दूसरा टी-20 मैच आयोजित किया जाएगा। लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में 30 मई 1 और 3 जून को शेष तीन टी20 मैच खेले जाएंगे। बांग्लादेश की टीम 21 मई को पहुंचेगी और 22 से 24 मई तक इकबाल स्टेडियम में प्रशिक्षण सत्र में भाग लेगी।

पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच होने वाले मैच का शेड्यूल इस प्रकार है-

- **25 मई - पहला टी20 मैच:** पाकिस्तान बनाम बांग्लादेश, इकबाल स्टेडियम, फैसलाबाद
- **27 मई - दूसरा टी20 मैच:** पाकिस्तान बनाम बांग्लादेश, इकबाल स्टेडियम, फैसलाबाद
- **30 मई - तीसरा टी20 मैच:** पाकिस्तान बनाम बांग्लादेश, गद्दाफी स्टेडियम, लाहौर
- **1 जून - चौथा टी20 मैच:** पाकिस्तान बनाम बांग्लादेश, गद्दाफी स्टेडियम, लाहौर
- **3 जून - पांचवां टी20 मैच:** पाकिस्तान बनाम बांग्लादेश, गद्दाफी स्टेडियम, लाहौर

चहल की हैट्रिक से 190 पर सिमटी चेन्नई की पारी, करन ने बनाए 88 रन

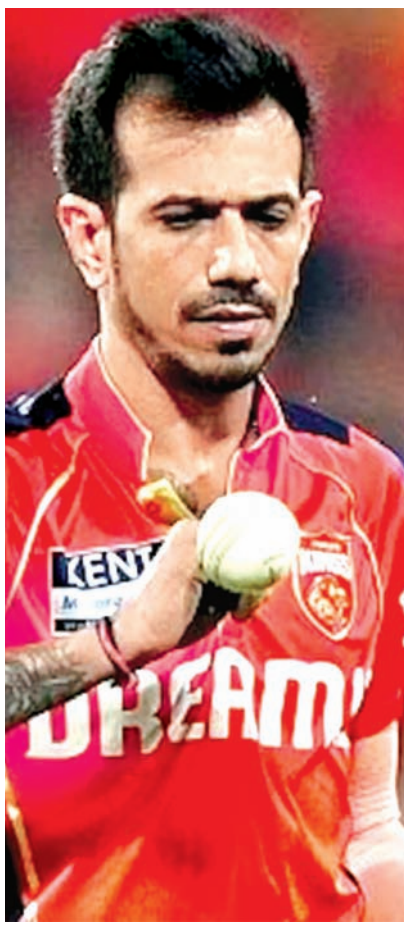

मुंबई (एजेंसी)

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल 2025) के 49वें मैच में आज चेन्नई सुपरकिंग्स की टक्कर पंजाब किंग्स से हो रही है। इस मुकाबसे में पहले बल्लेबाजी करते हुए चेन्नई की टीम 190 रन बना सकी। चहल ने हैट्रिक लगाई और एक ओवर में 4 विकेट झटके। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल 2025) के 49वें मैच में आज चेन्नई सुपरकिंग्स की टक्कर पंजाब किंग्स से हो रही है। ये मुकाबला धोनी की टीम के लिए काफी अहम है। अगर सीएसके आज मैच हारेगी तो प्लेऑफ में पहुंचने की उसकी उम्मीदें खत्म हो जाएंगी। पहले बल्लेबाजी करने उतरी चेन्नई की शुरुआत अच्छी नहीं रही।

तीसरे ही ओवर में चेन्नई को पहला झटका लगा जब शेख रसीद को अर्शदीप ने अपना शिकार बनाया। रसीद के बल्ले से केवल 11 रन ही निकले। इसके बाद अगले ही ओवर में आयुष म्हात्रे भी अपना विकेट गंवा बैठे। आयुष के बल्ले से 7 रन आया। इसके बाद जडेजा अच्छी लय में दिख रहे थे। लेकिन छठे ही ओवर में बरार ने उन्हें पवेलियन का रास्ता दिखाया। जडेजा के बल्ले से 17 रन आए। हालांकि, इसके बाद सैम करन और डेवाल्ड ब्रेविस के बीच एक अच्छी साझेदारी पनपी।

- रविंद्र जडेजा ने 17 रन की छोटी लेकिन अहम पारी खेली।
- **दोनों बल्लेबाजों ने पारी को संभालने और गति देने का काम किया।**
- 15वें ओवर में ब्रेविस का विकेट गिरा, जिससे यह साझेदारी टूट गई।
- **ब्रेविस के आउट होने के बावजूद सैम करन क्रीज पर टिके रहे और पारी को आगे बढ़ाते रहे।**

हालांकि, 15वें ओवर में ब्रेविस का विकेट गिरा और 78 रनों की पार्टनरशिप टूट गई। लेकिन दूसरे छोर पर सैम करन टिके रहे। सैम करन ने 30 गेंद में अर्धशतक जड़ा। फिफ्टी जड़ने के बाद करन ने तूफानी अंदाज में बल्लेबाजी की। 18वें ओवर में उनका विकेट गिरा। करन ने 47 गेंद में 88 रनों की तूफानी पारी खेली। दुबे के साथ भी उनकी 46 रनों की साझेदारी हुई। एमएस धोनी के बल्ले से 11 रन निकले। उन्होंने चहल के ओवर में एक छक्का लगाया। लेकिन इसके बाद चहल ने हैट्रिक लगाई। 19वें ओवर में चहल ने कुल 4 विकेट झटके। चेन्नई की टीम 20 ओवर भी नहीं खेल सकी और 190 रन पर ही सिमट गई।

पंजाब किंग्स के सामने चुनौतीपूर्ण मैच, सीएसके की आखिरी उम्मीद

पांच बार की चैंपियन सीएसके के लिए यह सीजन बेहद निराशाजनक रहा है। टीम अब तक खेले 9 में से सिर्फ 2 मुकाबले जीत पाई है और अंक तालिका में सबसे नीचे है। वहीं पंजाब किंग्स 9 में से 5 जीत के साथ पांचवें स्थान पर है और यह मैच जीतकर प्लेऑफ की ओर मजबूत कदम बढ़ाना चाहेगी। सबसे ज्यादा चिंता की बात यह रही है कि सीएसके अपने घरेलू मैदान चेपॉक पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई है, जिसे कभी उसका किला माना जाता था। सीएसके किसी भी हालत में टूर्नामेंट की तीसरी जीत दर्ज करना चाहेगी ताकि प्लेऑफ में पहुंचने की थोड़ी-बहुत उम्मीदें बरकरार रख सके। यह और भी चिंता का विषय है कि टीम के दिग्गज और कप्तान महेंद्र सिंह धोनी भी इस बार टीम को प्रेरित करने में सफल नहीं हो पाए हैं। उन्होंने रुतुराज गायकवाड़ से कप्तानी वापस ली थी, जिन्हें कोहनी की चोट के कारण बाहर होना पड़ा।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दोस्ताना मैचों में भारतीय महिला हॉकी टीम की नजरें नए संयोजन आजमाने पर

पर्थ (आईएएनएस)

ऑस्ट्रेलिया ए टीम के खिलाफ दो मैच खेलने के बाद अब भारतीय महिला हॉकी टीम ऑस्ट्रेलिया की सीनियर टीम के खिलाफ तीन दोस्ताना मैच खेलेगी। ये मैच पर्थ हॉकी स्टेडियम में 1 मई से शुरू होंगे। पहले दो मैचों में हार मिलने के बाद भारत अब बेहतर प्रदर्शन करना चाहेगा। पहले मैच में भारत ने अच्छा खेल दिखाया लेकिन फिर भी 3-5 से हार गया। ऑस्ट्रेलिया ए ने पहले हाफ में ही चार गोल कर बढ़त बना ली। भारत ने वापसी की कोशिश की लेकिन पूरी तरह से मैच में नहीं लौट सका। भारत की तरफ से महीमा टेटे (27वें मिनट), नवनीत कौर (45वें मिनट) और लालरेम्सियामी (50वें मिनट) ने गोल किए। ऑस्ट्रेलिया ए के लिए नीसा फ्लिन (3'), ओलिविया डाउन्स (9'), रूबी हैरिस (11'), टेटम स्टीवर्ट (21') और केंड्रा फिट्जपैट्रिक (44') ने गोल किए। दूसरे मैच में भारत को बेहद करीबी मुकाबले में 2-3 से हार का सामना करना पड़ा।

भारत 11 स्वर्ण सहित 25 पदक जीतकर एशियाई अंडर-15 मुक्केबाजी चैंपियनशिप में शीर्ष पर रहा

अम्मान (आईएएनएस)

भारत ने लड़कियों की श्रेणी में शानदार प्रदर्शन करते हुए 11 स्वर्ण सहित 25 पदक के साथ एशियाई अंडर-15 मुक्केबाजी चैंपियनशिप में पदक तालिका में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। युवा भारतीय महिलाओं ने 15 भार वर्गों में 10 स्वर्ण और चार कांस्य पदक जीते, मंगलवार को फाइनल में उन्होंने प्रत्येक खिताबी मुकाबले में जीत दर्ज की, जिससे इस आयोजन में उनका वर्चस्व और मजबूत हुआ। लड़कियों की अंडर-15 मुक्केबाजी की शुरुआत कोमल (30-33 किग्रा) ने कजाकिस्तान की आयरू ओंगरबेक को 3:2 के विभाजित निर्णय से हराकर की। खुशी अहलावत (35 किग्रा) ने फिर अपनी प्रतिद्वंद्वी को 4:1 से हराया, जबकि तमन्ना (37 किग्रा) ने दूसरे दौर में आरएससी के साथ अपना खिताब पक्का किया। सवी (40 किग्रा), मिल्की मीनम (43 किग्रा), प्रिंसी (52 किग्रा), नव्या (58 किग्रा), सुनैना (61 किग्रा), त्रुशाना मोहिते (67 किग्रा) और वंशिका (70+ किग्रा) सभी ने सर्वसम्मति से अपने-अपने मुकाबले जीते।

बुमराह आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर हैं कायम

दुबई (आईएएनएस)

सिलहट में पहले टेस्ट में बांग्लादेश पर जिम्बाब्वे की ऐतिहासिक तीन विकेट की जीत ने आईसीसी पुरुष टेस्ट खिलाड़ी रैंकिंग के कुछ हिस्सों को फिर से लिख दिया है। इस मामले में सबसे आगे तेज गेंदबाज ब्लेसिंग मुजरबानी हैं, जिन्होंने मैच में नौ विकेट चटकाए और न केवल उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार दिलाया, बल्कि टेस्ट गेंदबाजों के बीच उन्हें एलीट गेंदबाजों की सूची में पहुंचा दिया। 705 अंकों की नई करियर-सर्वश्रेष्ठ रेटिंग के साथ, मुजरबानी टेस्ट क्रिकेट में 700 अंकों के आंकड़े को पार करने वाले इतिहास के केवल दूसरे जिम्बाब्वे के गेंदबाज बन गए हैं - एक दुर्लभ उपलब्धि जो उन्हें शीर्ष ब्रैकेट में मजबूती से रखती है। उनके प्रयास ने उन्हें नवीनतम आईसीसी टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में चार स्थान ऊपर उठाकर 15वें स्थान पर पहुंचा दिया। सूची में शीर्ष पर केवल भारत के जसप्रीत बुमराह बने हुए हैं। जिम्बाब्वे के जश्न में बाएं हाथ के स्पिनर वेलिंगटन मसकाद्जा ने दो साल से अधिक समय के बाद टेस्ट क्षेत्र में यादगार वापसी की। मसकाद्जा ने सिलहट टेस्ट में पांच विकेट चटकाए और टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में संयुक्त 68वें स्थान पर वापस आ गए।

महान शूटिंग कोच प्रो. सनी थॉमस का निधन, एनआरएआई ने शोक व्यक्त किया

नई दिल्ली (आईएएनएस)। महान शूटिंग कोच प्रो. सनी थॉमस का केरल के कोट्टायम जिले के उझवूर में बुधवार को निधन हो गया। प्रो. थॉमस 83 वर्ष के थे। द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित प्रो. सनी थॉमस ने 1993 से 2012 तक 19 वर्षों तक भारतीय शूटिंग टीम के कोच के रूप में सेवा दी और इस दौरान कई चैंपियन निशानेबाजों को मार्गदर्शन दिया, जिनमें 2008 बीजिंग ओलंपिक में भारत को पहला व्यक्तिगत स्वर्ण पदक दिलाने वाले अभिनव बिंद्रा भी शामिल हैं। नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआई) के अध्यक्ष कालिकेश नारायण सिंह देव ने उनके निधन पर भारतीय शूटिंग समुदाय की ओर से गहरा शोक व्यक्त किया। सिंह देव ने कहा, "यह एक ऐसा खालीपन है जिसे भारतीय शूटिंग शायद ही कभी भर पाए। प्रोफेसर थॉमस शूटिंग में एक संस्था समान थे और भारत आज शूटिंग में जो शक्ति बना है, वह उनके निस्वार्थ योगदान के बिना संभव नहीं हो पाता। पूरा शूटिंग समुदाय शोक में है और एनआरएआई की ओर से मैं उनके परिजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। अभिनव बिंद्रा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शोक व्यक्त करते हुए लिखा, "प्रो. सनी थॉमस के निधन की खबर सुनकर गहरा दुख हुआ।

व्यापार/लाइफ व साइंस

कृषि और ग्रामीण श्रमिकों को मार्च में महंगाई का बोझ कम होने से राहत

नई दिल्ली (आईएएनएस)

श्रम और रोजगार मंत्रालय से बुधवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, इस साल मार्च में कृषि मजदूरों (सीपीआई-एएल) और ग्रामीण मजदूरों (सीपीआई-आरएल) के लिए ऑल-इंडिया कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स पर आधारित मुद्रास्फीति दर क्रमशः 3.73 प्रतिशत और 3.86 प्रतिशत पर आ गई। पिछले साल मार्च 2024 में सीपीआई-एएल 7.15 प्रतिशत और सीपीआई-आरएल 7.08 प्रतिशत थी। पिछले छह महीनों में कृषि और ग्रामीण मजदूरों के लिए मुद्रास्फीति दर में लगातार गिरावट आ रही है। यह उन कमजोर वर्गों के लिए राहत भरा है, जो बढ़ती कीमतों से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। इससे उनके हाथ में अधिक पैसे बचते हैं, जिससे वे

अधिक सामान खरीद पाते हैं, जिससे उनकी जीवनशैली बेहतर होती है।

सांख्यिकी मंत्रालय से इस महीने की शुरुआत में जारी आंकड़ों के अनुसार, कृषि और ग्रामीण श्रमिकों के लिए मुद्रास्फीति में गिरावट इस साल मार्च में देश की समग्र खुदरा मुद्रास्फीति में पिछले साल के इसी महीने की तुलना में 3.34 प्रतिशत की गिरावट की पृष्ठभूमि में आई है, जो अगस्त 2019 के बाद का सबसे निचला स्तर है। मार्च के दौरान खाद्य मुद्रास्फीति धीमी होकर 2.69 प्रतिशत हो गई, जो नवंबर, 2021 के बाद का सबसे निचला स्तर है। आधिकारिक बयान के अनुसार, मार्च 2025 के महीने के दौरान हेडलाइन मुद्रास्फीति और खाद्य मुद्रास्फीति में गिरावट मुख्य रूप से सब्जियों, अंडों, दालों, मांस-मछली, अनाज और दूध की मुद्रास्फीति में गिरावट के कारण है। हाल के महीनों में देश में खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट का रुख रहा है। रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति ने 2025-26 के लिए अपने मुद्रास्फीति पूर्वानुमान को 4.2 प्रतिशत से घटाकर 4 प्रतिशत कर दिया है।

भारतीय शेयर बाजार सपाट बंद रियल्टी शेयरों में हुई खरीदारी

मुंबई (आईएएनएस)

भारतीय शेयर बाजार बुधवार को सपाट बंद हुआ। सत्र में मिलाजुला कारोबार देखा गया। सेंसेक्स 46 अंक या 0.06 प्रतिशत की गिरावट के साथ 80,242 और निफ्टी 1.75 अंक की मामूली कमजोरी के साथ 24,334 पर बंद हुआ। बाजार की चाल के विपरीत रियल्टी शेयरों में तेजी देखी गई। निफ्टी रियल्टी इंडेक्स 1.91 प्रतिशत की तेजी देखी गई। माइक्रोटेक डेवलपर्स 3 प्रतिशत से अधिक की, गोदरेज प्रोपर्टीज, डीएलएफ और सोभा 2 प्रतिशत से अधिक की बढ़त के साथ बंद हुए। इसके अलावा, ऑटो और फार्मा इंडेक्स भी लाल निशान में बंद हुए। आईटी, पीएसयू बैंक, फाइनेंशियल सर्विसेज, एफएमसीजी, मेटल, एनर्जी और प्राइवेट बैंक इंडेक्स दबाव में थे। सेंसेक्स पैक में मारुति सुजुकी, भारती एयरटेल, सन फार्मा, पावर ग्रिड, एचयूएल, एचडीएफसी बैंक, इटरनल (जोमैटो), टेक महिंद्रा, एलएंडटी, कोटक महिंद्रा बैंक, इंडसइंड बैंक, इन्फोसिस और अदाणी पोर्ट्स टॉप गेनर्स थे। बजाजा फिनसर्व, बजाज फाइनेंस, टाटा मोटर्स, एसबीआई, अल्ट्राटेक सीमेंट, टीसीएस, टाटा स्टील, एशियन पेंट्स और एनटीपीसी टॉप लूजर्स थे। बोनांजा में रिसर्च एनालिस्ट, वैभव विदवानी ने कहा, "भारतीय शेयर बाजार आज हल्की गिरावट के साथ बंद हुआ है। इसका कारण भारत-पाकिस्तान के साथ वैश्विक स्तर पर तनाव बढ़ना है। उन्होंने आगे कहा, "मौजूदा समय में निवेशक सर्तक बने हुए हैं और भारत-अमेरिका ट्रेड बातचीत पर निगाहें बनाए हुए हैं।

अक्षय तृतीया में 12,000 करोड़ का सोना व 4,000 रु करोड़ की चांदी की बिक्री

नई दिल्ली (आईएएनएस)

कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (सीएआईटी) ने कहा कि बुधवार को अक्षय तृतीया के अवसर पर भारत में लगभग 12,000 करोड़ रुपए के सोने के आभूषण और संबंधित वस्तुओं की बिक्री का अनुमान है। इसके अलावा, प्रमुख व्यापार निकाय के अनुसार, इस शुभ दिन पर लगभग 4,000 करोड़ रुपए के चांदी के व्यापार का अनुमान है। सीएआईटी के राष्ट्रीय महासचिव और भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने कहा, "अनुमान के आधार पर, आज देश भर में लगभग 12,000 करोड़ रुपए के सोने के आभूषण और संबंधित वस्तुओं की बिक्री हुई। इसके अलावा, चांदी का व्यापार लगभग 4,000 करोड़ रुपए होने का अनुमान है। सोने और

चांदी की कीमतों में भारी उछाल के बावजूद, शादी के सीजन और अक्षय तृतीया के शुभ अवसर में पारंपरिक विश्वास ने व्यापार गतिविधि में योगदान दिया। उन्होंने कहा कि सोने को वित्तीय निवेश के सबसे अच्छे रूपों में से एक माना जाता है, जिसने खरीदारों को उच्च कीमतों के बावजूद खरीदारी जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। आज कीमती धातु की कीमत 97,500 रुपए प्रति 10 ग्राम और चांदी की कीमत 98,000 रुपए प्रति किलोग्राम थी, जो ऐतिहासिक रूप से उच्चतम स्तरों में से एक है।

ऑल-इंडिया ज्वेलर्स और गोल्डस्मिथ फेडरेशन के अध्यक्ष पंकज अरोड़ा ने कहा, "दिलचस्प बात यह है कि दिन में सोने की कीमतों में 1,000 रुपए और चांदी की कीमतों में 2,000 रुपए की गिरावट आई। उच्च दरों के बावजूद, उपभोक्ता रुचि स्थिर रही, जो इस शुभ अवसर के गहरे धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि कम कीमतें आमतौर पर अधिक मांग को बढ़ावा देती हैं, फिर भी अक्षय तृतीया के महत्व के कारण खरीदारी की भावना मजबूत रही।

नौकरी बदलने में हेल्थ और वेलनेस को प्राथमिकता दे रहे भारतीय कर्मचारी

नई दिल्ली (आईएएनएस)। भारत में नौकरी बदलने में ज्यादातर कर्मचारी हेल्थ और वेलनेस को प्राथमिकता दे रहे हैं।

यह जानकारी बुधवार को जारी की गई रिपोर्ट में दी गई। वैश्विक व्यावसायिक सेवा फर्म एऑन की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में 82 प्रतिशत कर्मचारी अगले 12 महीनों में नई नौकरी की तलाश कर रहे हैं। रिपोर्ट में बताया गया कि भारतीय कर्मचारियों को मुख्य रूप से कंपनियों में पांच प्रकार के फायदे मिलते हैं, जिसमें वर्क-लाइफ बैलेंस, मेडिकल कवरेज, कैरियर विकास, वेतन अवकाश और सेवानिवृत्ति बचत शामिल हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में सर्वेक्षण में भाग लेने वाले लोगों में सभी पीढ़ियों के बीच मेडिकल कवरेज नौकरी में मिलने वाले सबसे अधिक मूल्यवान लाभों में से एक था।

सेबी ने निवेशकों को 'ओपिनियन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म' को लेकर दी चेतावनी

मुंबई (आईएएनएस)। पूंजी बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने ओपिनियन ट्रेडिंग

प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करने को लेकर कड़ी चेतावनी जारी की है। चेतावनी में कहा गया है कि ये प्लेटफॉर्म सेबी के नियामक निरीक्षण के तहत काम नहीं करते और प्रतिभूति कानूनों के तहत निवेशकों को कोई सुरक्षा प्रदान नहीं करते हैं। सेबी ने एक सलाह में कहा कि कुछ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, जिन्हें 'ओपिनियन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म' कहा जाता है, यूजर्स को 'हां या ना' के इवेंट के परिणामों पर ट्रेड करने की अनुमति देते हैं। भुगतान इस बात पर निर्भर करता है कि कोई निश्चित घटना होती है या नहीं।

उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक ने चौथी तिमाही में 74.7 प्रतिशत की गिरावट

मुंबई (आईएएनएस)। उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक (एसएफबी) ने बुधवार को वित्त वर्ष 2025 की चौथी

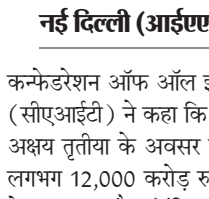

तिमाही में 83.4 करोड़ रुपए के शुद्ध लाभ में 74.7 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की, जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में यह 329.6 करोड़ रुपए था। उज्जीवन एसएफबी की आय में यह गिरावट मुख्य रूप से बैंक के बढ़ते प्रावधानों और बिजनेस मिक्स में बदलाव के कारण ब्याज आय में कमी के कारण दर्ज की गई। वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में उज्जीवन एसएफबी की शुद्ध ब्याज आय (एनआईआई) 864.4 करोड़ रुपए रही, जो एक साल पहले इसी अवधि के 933.5 करोड़ रुपए से 7.4 प्रतिशत कम है।

वित्त वर्ष 2025 में अदाणी पावर की चमक, रिकॉर्ड उत्पादन दर्ज हुआ

अहमदाबाद (आईएएनएस)। अदाणी पावर ने बुधवार को नतीजों का ऐलान किया। वित्त वर्ष 25 में कंपनी का

प्रदर्शन शानदार रहा है और इसने 13,926 करोड़ रुपए का कंटिन्यूइंग प्रॉफिट बिफोर टैक्स (पीबीटी) दर्ज किया है, जो कि वित्त वर्ष 24 में 11,470 करोड़ रुपए था। इसमें सालाना आधार पर 21.4 प्रतिशत का इजाफा देखा गया है। कंपनी का कंटिन्यूइंग प्रॉफिट बिफोर टैक्स बढ़ने की वजह ईबीआईटीडीए और फाइनेंस लागत में कमी होना है। अदाणी ग्रुप की पावर कंपनी ने वित्त वर्ष 25 में 56,473 करोड़ रुपए का कंसोलिडेटेड कंटिन्यूइंग रेवेन्यू हासिल किया है, जो कि वित्त वर्ष 24 में 50,960 करोड़ रुपए था। कंपनी का रेवेन्यू बढ़ने की वजह अधिक बिक्री वॉल्यूम होना है।

कस्तूरबा गांधी विद्यालय में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम व औषधीय पौधों का रोपण

विविधताओं में एकता समझेंगे तभी सच्चे भारतीय बनेंगे: वार्डेन

औषधीय पौधों का रोपण कर पर्यावरण व स्वास्थ्य सुरक्षा का लिया संकल्प

छात्राओं ने पीएम श्री स्कूल प्लस टू कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय परिसर में औषधीय पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन बड़े ही उत्साह के साथ किया गया। इस कार्यक्रम में छात्राओं, शिक्षिकाओं और अतिथियों ने भाग लिया और पौधों के संरक्षण का संकल्प लिया। कार्यक्रम में पंचायत की मुखिया सरिता कुमारी ने कहा कि औषधीय पौधों का महत्व सिर्फ पर्यावरण को शुद्ध रखने में नहीं, बल्कि शरीर के रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में भी है। हमें इन पौधों का संरक्षण और उपयोग नियमित रूप से करना चाहिए। वार्डन किरण कुमारी सिंह ने तुलसी, गिलोय और नीम के औषधीय गुणों और उनके स्वास्थ्य लाभों पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ये पौधे हमें कई बीमारियों से बचाने के साथ-साथ मानसिक शांति भी प्रदान करते हैं। मौके पर विद्यालय प्रबंधन समिति के और मुख्य अतिथियों के साथ-साथ सभी शिक्षिका और विद्यालय के छात्राएं उपस्थित रहे।

‹‹ भारत की विविधता हमारी सबसे बड़ी ताकत : मुखिया

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। पीएम श्री स्कूल प्लस टू कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में बुधवार को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्रों को भारत की सांस्कृतिक विविधता से अवगत कराया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महुअरी पंचायत की मुखिया सरिता कुमारी, विद्यालय प्रबंधन समिति की अध्यक्ष अनीता देवी, शिक्षक-शिक्षिकाएं, अभिभावक सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्जवलित कर किया गया। कार्यक्रम में वार्डन किरण कुमारी सिंह ने कहा कि ह्यएक भारत श्रेष्ठ भारतह्ल हमारे देश की शक्ति और एकता का प्रतीक है। यह योजना छात्राओं को न केवल अन्य राज्यों की संस्कृति, परंपराओं और भाषाओं से परिचित कराती है, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय एकता और सामूहिकता का एहसास कराती है। जब हम विविधताओं में एकता को समझेंगे, तभी सच्चे भारतीय बनेंगे। उन्होंने कहा कि देश की महानता उसकी विविधता में है। इस तरह के कार्यक्रम बच्चों में अपने देश के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना को और गहरा करते हैं। मुखिया सरिता कुमारी ने कहा कि भारत की विविधता हमारी सबसे बड़ी ताकत है। जब हम एक-दूसरे की संस्कृति, भाषा और परंपराओं को समझते हैं, तब हम एकजुट होते हैं। कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों को यह समझने का अवसर मिल रहा है कि देश की एकता और अखंडता को बनाए रखना हर नागरिक का कर्तव्य है। उन्होंने विद्यालय प्रबंधन द्वारा एक भारत से सरकार कार्यक्रम के लिए वार्डन किरण कुमारी सिंह को धन्यवाद दिया। कहा कि ऐसे कार्यक्रम करने से हमारे बच्चों में छुपी प्रतिभा का विकास होता है। कार्यक्रम में विद्यालय की शिक्षिका सुष्मिता रानी ने कहा कि एक भारत श्रेष्ठ भारत जैसे कार्यक्रमों से हमें न केवल राष्ट्रीय एकता का संदेश मिलता है, बल्कि यह हमें अपने देश की समृद्ध संस्कृति को सम्मान देने की प्रेरणा भी देते हैं। कार्यक्रम में छात्राओं ने विभिन्न राज्यों की पारंपरिक वेशभूषा, लोकगीत और नृत्य प्रस्तुत कर भारत की सांस्कृतिक विविधता को जीवंत किया।

ग्रामीणों की मांग व विरोध के बाद भी खेत में लगा दिया गया ट्रांसफार्मर

नवीन मेल संवददाता

हैदरनगर। प्रखंड के बभंडी पंचायत के गोल्हना में खेतों में स्थापित विद्युत ट्रांसफार्मर को हटाने की मांग वर्षों से ग्रामीणों सहित किसान करते रहे हैं। इस मामले को गंभीरता से नहीं लिए जाने से खासकर बरसात के दिनों में कोई बड़ी हादसा के अंदेशा से लोग भयभीत हैं। साथ ही किसानों को स्वतंत्र रुप से खेती भी करने में मानसिक पीड़ा सताती है। इस गांव के समस्त विद्युत उपभोक्ता ने जनहित से जुड़ी उक्त समस्या को दूर करने के लिए विभागीय अभियंताओं को बार-बार सूचना आवेदन के माध्यम से देने का काम किया है। वर्तमान में इस गांव का विद्युत ट्रांसफार्मर सड़क मार्ग से काफी दूर आहर क्षेत्र में स्थापित है। इस स्थान की भौगोलिक स्थिति अत्यंत खराब है। विशेषकर बरसात के मौमस में जब चारों ओर खेतों में जल जमाव हो जाता है। ऐसी स्थिति में ट्रांसफार्मर की मरम्मत और रख रखाव कार्य अत्यधिक कठिन ही नहीं, बल्कि स्थाई विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करना मुश्किल हो जाता है। साथ ही उपकरणों के क्षतिग्रस्त होने व दुर्घटनाओं की आशंका भी बनी रहती है। ग्रामीणों ने उक्त ट्रांसफार्मर को सड़क किनारे सुरक्षित व ऊंचे स्थान पर स्थापित करने की मांग की है। ग्रामीणों ने पुनः विभागीय अभियंताओं से इस गंभीर समस्या का संज्ञान लेते हुए गोल्हना में नए डीपी तैयार कर ट्रांसफार्मर स्थल को बदलने का आग्रह किया है। इससे सभी ग्राम वासियों को सत्त सुरक्षित और निर्बाध विद्युत आपूर्ति की व्यवस्था हो सके।

बिजली विभाग की मनमानी

सर्वेश्वरी समूह ने पनशाला खोला

रंका। सर्वेश्वरी शाखा ने तपती गर्मी को देखते हुए एसके इंटरनेशनल स्कूल के गेट के पास पनशाला खोला है। सर्वेश्वरी शाखा रंका के कांति सिंह ने पूरे विधि विधान के साथ पूजा-अर्चना के बाद पनशाला का शुभारंभ राहगीरों को गुड़ खिलाकर व पानी पिलाकर की। इस संबंध में रंका सर्वेश्वरी शाखा के कांति सिंह ने बताया कि हर वर्ष तपती गर्मी को देखते हुए रंका एस के इंटरनेशनल के गेट के पास पनशाला का शुभारंभ किया जाता है। इस वर्ष भी पानशाला का शुभारंभ किया गया। उन्होंने बताया कि इस रास्ते से जाने वाले राहगीर व ग्रामीण पाल्हे, भलुआनी, सोनदाग, मुंगदह आदि गांव के लोग इस रास्ते से होकर रंका प्रखंड मुख्यालय आते-जाते हैं। तपती गर्मी के मौसम में उन्हें शीतल जल पीने को मिलेगा। मौके पर रंका सर्वेश्वरी शाखा के महामंत्री मोरध्वज प्रसाद सिंह उर्फ सुमन सिंह, अजय कुमार सिंह, बंटी राय आदि उपस्थित थे।

सीढ़ी से गिरकर घायल

भवनाथपुर। बुका में स्थित अपने आवास पर सीढ़ी से फिसल कर गिरने के कारण सीताराम पाठक गंभीर रूप से घायल हो गए। यह हादसा सुबह उस समय हुआ जब वह अपने घर के सीढ़ी से छत जा रह थे। इस दौरान उनका संतुलन बिगड़ने के कारण वह सीढ़ियों से फिसलकर नीचे गिर पड़े।

कुंदरी लाह बागान होगा पुनर्जीवित: उपायुक्त ने किया स्थल का निरीक्षण

लाह उत्पादन को मिलेगा बढ़ावा तालाब का भी होगा जीर्णोद्धार

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू जिला अंतर्गत नीलाम्बर-पीताम्बरपुर स्थित एशिया प्रसिद्ध कुंदरी लाह बागान को पुनर्जीवित करने की दिशा में प्रशासन ने गंभीर पहल शुरू कर दी है। इसी क्रम में उपायुक्त शशि रंजन ने जिला एवं वन विभाग के वरीय पदाधिकारियों के साथ लाह बागान का निरीक्षण किया। उन्होंने बागान में हो रहे लाह उत्पादन की वर्तमान स्थिति की जानकारी ली एवं इसके विस्तार की संभावनाओं पर चर्चा की।

निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने बागान में स्थित तालाब का भी जायजा लिया। उन्होंने तालाब की गहराई, जलस्तर एवं पुनर्जीवन की संभावनाओं पर विशेष ध्यान देते हुए जीर्णोद्धार की प्रक्रिया को शीघ्र आरंभ करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि कुंदरी लाह बागान केवल जिले की नहीं, बल्कि पूरे राज्य की धरोहर है, जिसे संरक्षित एवं सशक्त किया जाना आवश्यक है। उपायुक्त ने मौके पर मौजूद सखी मंडल की महिला सदस्यों से संवाद स्थापित किया और लाह उत्पादन की अद्यतन जानकारी ली। उन्होंने महिलाओं को लाह उत्पादन से जुड़ने हेतु प्रोत्साहित करते हुए कहा कि इससे रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त आधार मिलेगा। निरीक्षण के दौरान वन प्रमंडल पदाधिकारी सत्यम कुमार, उप विकास आयुक्त शब्बीर अहमद, छतरपुर एवं सदर अनुमंडल पदाधिकारी, प्रखंड, अंचल और जेएसएलपीएस के पदाधिकारी उपस्थित थे।

सेक्रेड हार्ट स्कूल के सौरभ तिवारी ने 98.4 प्रतिशत अंक लाकर मारी बाजी, मेदिनीनगर में छाया जश्न

- आईसीएसई 2025 परीक्षा में सभी 169 छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, 45 ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक पाए

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। आईसीएसई बोर्ड की दसवीं की परीक्षा 2025 के नतीजों ने मेदिनीनगर को गौरव से भर दिया है। सेक्रेड हार्ट स्कूल के 169 विद्यार्थियों ने परीक्षा में हिस्सा लिया और सभी ने प्रथम श्रेणी से सफलता पाई। इनमें से 45 छात्र-छात्राओं ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित कर विद्यालय का नाम रोशन किया।

विद्यालय में टॉपर बने सौरभ कुमार तिवारी ने 98.4% अंक प्राप्त कर न सिर्फ स्कूल, बल्कि पूरे इलाके में पहला स्थान हासिल किया। सौरभ लेस्लीगंज के गोराडीह (वर्तमान में हवाई अड्डा, रेड़मा) के निवासी हैं। उनके पिता कुश कुमार तिवारी शिक्षक हैं और माता गृहिणी। सौरभ की इस बड़ी सफलता ने पूरे परिवार को गर्वित कर दिया है।

सौरभ के पिता ने बताया कि, 'सौरभ बचपन से ही कुशाग्र और अनुशासित रहा है। उसकी सफलता में पूरे परिवार और शिक्षकों का अहम योगदान है।'

दूसरे स्थान पर युवराज गुप्ता ने 97.8% अंक प्राप्त किए, वहीं आर्यन अग्रवाल और युथिका सिंह ने 96.8% अंकों के साथ संयुक्त रूप से तीसरा स्थान हासिल किया। इसी क्रम में, ग्राम जोड़ निवासी और झारखंड पुलिस में कार्यरत रंजित तिवारी के पुत्र साकेत तिवारी ने 92.2% अंक प्राप्त किए हैं। साकेत संत जेवियर एकेडमी के छात्र हैं और उनकी इस सफलता से गांव में भी खुशी की लहर है।

विद्यालय प्रबंधन ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। यह परिणाम इस बात का प्रमाण है कि कठिन परिश्रम, पारिवारिक सहयोग और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलकर सफलता की नई मिसालें गढ़ सकते हैं।

दो बाइक की आमने-सामने की टक्कर में एक घायल

रमना। सोनेहारा मुख्य सड़क पर नरेश साह के घर के पास दोपहर तीन बजे तीखा मोड़ पर दो मोटरसाइकिल के आमने-सामने की टक्कर में गम्हरिया ग्राम निवासी 55 वर्षीय बुचून यादव (नागेंद्र) गंभीर रूप से घायल हो गए। उनका प्राथमिक उपचार रमना हेल्थ सेंटर में किया गया। जानकारी अनुसार बुचून यादव पत्नी के साथ साढ़ू के घर शादी समारोह में शामिल होने जा रहे थे। कर्णपुरा ग्राम से अपने रिश्तेदार के शादी समारोह के बाद डंडई थाना के लावाही ग्राम निवासी 56 वर्षीय प्रेम साह अपनी पत्नी के साथ घर वापस जा रहे थे। इस क्रम में उक्त तीखे मोड़ पर दोनों की आमने सामने टक्कर हो गयी। इससे दोनों सवार की गिर गए। प्रत्यक्षदर्शियों ने दुर्घटना की सूचना घायल के घरवालों को दी।

पुलिस ने पांच वारंटी को किया गिरफ्तार

रमना। विशेष अभियान चलाकर रमना पुलिस ने विभिन्न केस के पांच वारंटियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इस संबंध में थाना प्रभारी आकाश कुमार ने बताया कि विभिन्न केस के वारंटियों के विरुद्ध गिरफ्तारी का वारंट न्यालय द्वारा निर्गत हुआ था। इसके अलोक में विशेष अभियान द्वारा छपामारी कर मड़वनिया निवासी आरोपी सुरेश भुइयां पिता महावीर भुइया, रमना पंचायत के मनोज साव पिता स्व सरजू साव, बनखेता ग्राम के संजय सिंह पिता स्व नारायण सिंह,गम्हरिया ग्राम के रामसागर भुइयां पिता बद्री भुइयां, उपेंद्र चौधरी पिता रघुनाथ चौधरी ग्राम हरादाग को गिरफ्तार कर न्यायालय के आदेश पर गढ़वा जेल भेज दिया गया।

75 प्रतिशत कार्डधारियों का हुआ ई-केवाईसी

डंडई। राशना कार्डधारियों के लाभुको का ई-केवाईसी कराने की अंतिम तिथि बुधवार को समाप्त हो गई है। प्रखंड क्षेत्र के लगभग 75 प्रतिशत ही लाभकों का ई-केवाईसी हो पाया। बताया जाता है कि प्रखंड क्षेत्र में पहले 60,925 लाभुकों द्वारा प्रत्येक माह जन वितरण दुकानदारों से खाद्यान्न का उठाव किया जाता रहा था, लेकिन उनमें ई-केवाईसी कराने की अंतिम तिथि तक मात्र 46,533लोगों द्वारा ही ई-केवाईसी कराने कराया गया। शेष 14,392 लाभुकों का ई-केवाईसी नहीं हो पाया।

दो अलग-अलग सड़क दुर्घटना में एक दर्जन घायल

भवनाथपुर। बुधवार को अलग-अलग स्थानों पर हुए ऑटो, बाइक व बोलेरो की दुर्घटनाओं में एक दर्जन लोग घायल हो गए। सभी घायलों को भवनाथपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में भर्ती कराया गया। वहां चिकित्सक डॉ. अभिजीत विश्वास और इंद्र किशोर विश्वकर्मा द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद स्थिति गंभीर होने पर तीन लोगों को बेहतर इलाज के लिए गढ़वा सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। पहली घटना भवनाथपुर मुख्य पथ के ब्लॉक गेट पर एक स्कूटी और बस के बीच हुए टक्कर में आनंद कुमार पिता मंगरू साह लमारी कला उंडई उसकी सरहज श्रद्धा सेवी पति संजय साह अरसली दक्षिणी के मजूराही टोला निवासी भवनाथपुर ब्लॉक गेट के पास स्कूटी और बस के टक्कर में घायल हो गए। दूसरी घटना केतार के आमवाडीह में एक ऑटो और बोलेरो की टक्कर में 10 लोग गंभीर रुप से घायल हो गए। उनमें शकुंति देवी पति सोनू,रामदेव सिंह बेगाडीह, सुनील कुमार यादव पिता नागेंद्र यादव, चांदनी कुमारी पिता रमेश राम, रंजीत कुमार पिता कमलेश कुमार, संगीता देवी पति सोनू चेरी पीपरखांड केतार से जाने के क्रम में अमावडीह के पास एक अनियंत्रित बाराती बोलेरो के टकराने से लोग घायल हो गए। उनमें दो की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायलों को भवनाथपुर सीएचसी भर्ती कराया गया। चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद तीन घायलों को रेफर कर दिया। दुर्घटनाओं की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी है। घटना की सूचना मिलते ही जेएसएम कार्यकर्ता प्रखंड अध्यक्ष अरुण रावत ,मनोज यादव,गोपाल यादव ,कसमुद्दीन अंसारी,दीपक चंद्रवंशी सहित अन्य घायलों को इलाज में मदद किया।

पहलगाम आतंकी हमला के विरोध में कैंडल मार्च निकाला

केतार। कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में केतार बाजार में झामुमो ने प्रखंड अध्यक्ष लालेश्वर राम के नेतृत्व में कैंडल मार्च निकाला गया। कैंडल मार्च आंबेडकर चौक से कर्पूरी गेट तक निकाली गई। मार्च में बड़ी संख्या में झामुमो कार्यकता शामिल होकर आक्रोश व्यक्त किए। इस दौरान पाकिस्तान व आतंकवाद विरोधी नारेबाजी की गई। प्रखंड अध्यक्ष लालेश्वर राम ने कहा कि पहलगाम में आतंकवादियों ने जो कायरतापूर्ण हरकत की है,उसका हिसाब तत्काल होना चाहिए। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान हिंदू-मुस्लिम करके देश में नफरत फैलाना चाहता है। उन्होंने केंद्र सरकार से इस हमलें का सख्त बदला लेने और पाकिस्तान को सबक सिखाने की मांग किया। संगठन सचिव संजय वर्मा ने कहा कि नृशंस आतंकी हमला देश की एकता व अखंडता पर सीधा प्रहार है।

विशेष अभियान के तहत 21 वारंटी गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

श्री बंशीधर नगर। अनुमंडल क्षेत्र के सात थानों से विभिन्न मामलों के 21 वारंटी को गिरफ्तार कर गढ़वा जेल भेज दिया गया। इस आशय की जानकारी पुलिस इंस्पेक्टर रतन कुमार सिंह ने दी। वह मंगलवार को पत्रकारों के साथ बातचीत कर रहे थे। उन्होंने बताया कि पुलिस अधीक्षक दीपक पांडेय के निर्देश पर 29 अप्रैल के मध्य रात्रि में अनुमंडल क्षेत्र के सभी थानों में 10-12 वर्ष से फरार चल रहे वारंटियों के गिरफ्तारी को लेकर विभिन्न थानों के थाना प्रभारी टीम बनाकर छापेमारी अभियान चलाया। उनमें 21 वारंटी को गिरफ्तार कर गढ़वा जेल भेजा गया। 66 वारंट का निष्पादन किया गया। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार वारंटी में बंशीधर नगर से 8, रमना थाना से 5, धुरकी थाना से एक वारंटी, भवनाथपुर थाना से एक, खरौंधी थाना से दो वारंटी, केतार थाना से एक, हरिहरपुर ओपी से तीन वारंटी शामिल है। मौके पर थाना प्रभारी आदित्य नायक, अवर निरीक्षक सुंदर सोरेन, रमना सहित सभी थानों के अवर निरीक्षक उपस्थित थे।

हमारी जमीन हमसे न छीनी जाए : ग्रामीण

- उपायुक्त ने सुनीं आमजनों की पीड़ा, भरोसे और कार्रवाई का दिया संदेश

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। बुधवार को समाहरणालय में आयोजित जनता दरबार, आम जनता की पीड़ा और प्रशासनिक संवेदनशीलता का एक जीवंत उदाहरण बना। उपायुक्त शशि रंजन ने विभिन्न प्रखंडों से आए फरीयादियों की समस्याएं बारी-बारी से सुनीं और उन्हें प्राथमिकता के आधार पर त्वरित समाधान का भरोसा दिया।

जनता दरबार में ग्रामीणों ने अपनी समस्या रखी। नेउरा गांव के गौरीशंकर पासवान, रामचंद्र राम और कमलदेव उरांव ने अपनी रैयती भूमि पर जबरन कब्जा किए जाने की शिकायत की। उन्होंने उपायुक्त से मांग की कि अवैध कब्जाधारियों से भूमि मुक्त कराई जाए और उन्हें सुरक्षा दी जाए। सदर प्रखंड के सिंगरा कला गांव से आए मनमोहन प्रसाद सिंह और उमाशंकर सिंह ने फोरलेन सड़क निर्माण के लिए अधिग्रहित गैरमजरूआ भूमि को रैयती मान्यता देने संबंधी प्रस्ताव पर कार्रवाई की मांग की। सुदना (वार्ड-9) निवासी संजय चौधरी ने आरोप लगाया कि उनकी निजी निर्बंधित भूमि पर दलालों द्वारा अवैध तरीके से एकरारनामा कर बिक्री की गई है। उन्होंने इस पर कानूनी कार्रवाई की मांग की। हुसैनाबाद के महुअरी गांव की मनीषा सिंह ने शिकायत की कि ग्रीन राशन कार्ड के लिए केवाईसी प्रक्रिया में अड़चन के कारण उनका परिवार राशन से वंचित है। उन्होंने केवाईसी के लिए समय सीमा बढ़ाने की अपील की। सुल्तानी गांव के राजीव रंजन ने क्रशर संचालक द्वारा पर्यावरण नियमों के उल्लंघन और प्रदूषण फैलाने की शिकायत की। रेहला से आए अशोक तिवारी ने भूमि पर अवैध कब्जा हटाने एवं चारदीवारी निर्माण में हो रही रुकावट की जानकारी दी। हैदरनगर निवासी सविता देवी ने बच्चों के स्कूल नामांकन में हो रही देरी की शिकायत दर्ज कराई।

उपायुक्त शशि रंजन ने सभी फरीयादियों की समस्याएं गंभीरता से सुनीं, कुछ मामलों में तत्काल कार्रवाई का निर्देश दिया, जबकि अन्य आवेदनों को संबंधित विभागों को अग्रसारित करते हुए समाधान सुनिश्चित करने का आदेश दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि 'हर वाजिब समस्या का समाधान प्रशासन की जिम्मेदारी है, और इसमें किसी प्रकार की ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी।'

शिक्षकों को करना होगा 50 घंटे का अनिवार्य प्रशिक्षण

नवीन मेल संवाददाता

खरौंधी। प्रखंड के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत सभी कोटि के शिक्षकों को अब कम से कम 50 घंटे का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य होगा। इसमें ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों प्रकार के प्रशिक्षण शामिल होंगे। इस संबंध में बीपीएम नवीन प्रकाश ने जानकारी दी कि यह प्रशिक्षण शिक्षकों की पेशेवर दक्षता को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत प्रत्येक वर्ष 50 घंटे का सतत पेशेवर विकास प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य किया गया है। इसके तहत शिक्षक नई शिक्षा पद्धतियों, डिजिटल उपकरणों के उपयोग, मूल्यांकन विधियों, समावेशी शिक्षा और सामाजिक-भावनात्मक शिक्षण जैसे विषयों पर जानकारी प्राप्त करेंगे। प्रशिक्षण दो भागों में विभाजित किया गया है। पहला भाग ऑनलाइन माध्यम से जे गुरुजी ऐप्प से पूरा किया जाएगा, जिसमें शिक्षकों को विभिन्न शैक्षिक पोर्टल और प्लेटफॉर्म पर लॉगिन कर प्रशिक्षण लेना होगा। दूसरा भाग ऑफलाइन होगा, जिसमें शिक्षक डायट (जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान) गढ़वा में उपस्थित होकर लगभग 5-6 घंटे की कक्षा प्रशिक्षण लेंगे।प्रशिक्षण की शुरूआत एक मई माह के पहले सप्ताह से हो रही है, जिसकी विस्तृत तिथियां और समय-सारणी जिला शिक्षा कार्यालय द्वारा जल्द जारी की गयी है। शिक्षकों को अपने प्रशिक्षण के निर्णय का उद्देश्य शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण विधियों से लैस करना है ताकि वे कक्षा में बेहतर शिक्षण दे सकें और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में योगदान दे सकें। बीपीएम ने सभी शिक्षकों से समय पर प्रशिक्षण पूर्ण करने की अपील की है, ताकि किसी भी तरह की प्रशासनिक बाधा उत्पन्न न हो।

पेज एक के शेष

सीआईएससीई ने 10वीं...

आईएससी में भी लड़कियों ने लड़कों से बेहतर प्रदर्शन किया है, जहां उनका उत्तीर्ण प्रतिशत 99.45 प्रतिशत रहा तथा लड़कों का उत्तीर्ण प्रतिशत 98.64 प्रतिशत रहा। ज्ञात हो कि इस वर्ष आईसीएसई कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षाएं 21 फरवरी से 28 मार्च तक आयोजित की गई थीं। वहीं, आईएससी कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं 13 फरवरी से 5 अप्रैल तक हुई थीं।

सचिन की बेटी...

यह सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि लोगों को एकजुट करने वाली ताकत है। सारा ने अपने पिता सचिन तेंदुलकर और भाई अर्जुन तेंदुलकर को क्रिकेट खेलते देखा है, जिसने उनके लिए इस खेल को और भी खास बना दिया।

जीईपीएल में मुंबई फ्रेंचाइजी की मालिक बनने के सवाल पर सारा ने कहा, मुंबई मेरा जन्मस्थान है, मेरा घर है। इसे प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए बेहद खास है। यह सिर्फ एक नए प्रारूप का हिस्सा बनने की बात नहीं है, बल्कि क्रिकेट को आज के दौर के हिसाब से आगे ले जाने का मौका है। सारा का मानना है कि ई-क्रिकेट की सबसे बड़ी खासियत इसकी पहुंच और गतिशीलता है। उन्होंने कहा, यह तेज, इंटरैक्टिव और तेजी से विकसित हो रहा है, जैसा कि हमारी दुनिया है। मुझे सबसे ज्यादा यह उत्साहित करता है कि यह युवाओं को क्रिकेट से जोड़ने के नए रास्ते खोलता है, चाहे वे खिलाड़ी हों, कंटेंट क्रिएटर हों या प्रशंसक। सारा ने युवा लड़कियों के लिए भी एक प्रेरणादायक संदेश दिया। उन्होंने कहा, जो आपको पसंद है, उसे करें। खुद को सामने लाने से न डरें। बोलें, जोखिम लें और अगर आप असफल भी हों, तो रुकें नहीं। कोशिश करने में ही ताकत है।

केंद्रीय कैबिनेट की...

इससे समाज आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से मजबूत होगा और देश की भी निर्बाध प्रगति होती रहेगी। पीएम मोदी के नेतृत्व में राजनीतिक मामलों की कैबिनेट समिति ने फैसला किया है कि जाति गणना को आगामी जनगणना में शामिल किया जाएगा। कैबिनेट की बैठक में मेघालय के शिलांग के पास मावलिंगखुंग से असम के सिलचर के पास पंचग्राम तक एक नए ग्रीनफील्ड हाई-स्पीड कॉरिडोर के निर्माण को मंजूरी दी गई है। यह परियोजना राष्ट्रीय राजमार्ग-6 (एनएच-6) के तहत कुल 166.80 किलोमीटर लंबा कॉरिडोर होगा, जिसे हाइब्रिड एन्यूटी मोड के अंतर्गत बनाया जाएगा। इस परियोजना की कुल लागत 22,864 करोड़ रुपये आंकी गई है।

पाकिस्तानी एयरलाइंस के...

अधिकारियों ने कहा कि भारत की ओर से अब आधिकारिक रूप से अपने हवाई क्षेत्र को प्रतिबंधित कर दिया गया है और इस वजह से पाकिस्तानी एयरलाइनों को कुआलालंपुर जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों तक पहुंचने के लिए चीन या श्रीलंका जैसे देशों से होकर लंबा रास्ता अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। इससे पहले जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी हमले के बाद पाकिस्तान ने भारत की फ्लाइट्स के लिए अपना हवाई क्षेत्र बंद कर दिया था। पाकिस्तानी विमानों के लिए अपने हवाई क्षेत्र को बंद करने का भारत का फैसला पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में की गई जवाबी कार्रवाई का हिस्सा है। इससे पहले, भारत ने सिंधु जल संधि को सस्पेंड कर दिया था।

श्रमिक दिवस

एचईसी कभी गौरव था आज है खस्ताहाल

देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्थापित कंपनी में है कार्यशील पूंजी की कमी

रांची में हटिया के पास स्थित हेवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचईसी) भारत का सार्वजनिक क्षेत्र का एक उपक्रम है। इसकी स्थापना वर्ष 1958 में हुई थी। यह भारत सरकार के भारी उद्योग मंत्रालय के अधीन है।

एचईसी में कास्टिंग और फोर्जिंग, फोर्जिंग, फैब्रिकेशन, असेंबली, परीक्षण आदि समस्त सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध हैं। इसे इस्पात, खनन, रेलवे, एयरोस्पेस, रक्षा, बिजली आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में इंजीनियरिंग और विनिर्माण क्षमता को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए स्थापित किया गया था, जिससे कि देश को भारी उपकरणों के लिए आयात की निर्भरता कम किया जा सके। इस कंपनी की स्थापना देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किया गया था। यह झारखंड का गौरव था। लेकिन, अंतरिक्ष परियोजनाओं के लिए लांच पैड तथा उपस्कर बनाने वाली कंपनी आज खस्ताहाल है। एचईसी ने भारतीय इस्पात उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने देश की कई प्रमुख परियोजनाओं में भी योगदान दिया है। इस्पात संयंत्रों के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार के मशीनरी और उपकरणों का निर्माण कर देश को आत्मनिर्भर बनाने का काम किया है। लेकिन, खुद ही मुश्किल में फंस गया है। कई वर्षों से एचईसी को वित्तीय संकट का सामना करना पड़ रहा है। अब तो यह हाल है कि इसके कर्मचारियों के वेतन का भुगतान भी नियमित रूप से नहीं हो पा रहा है। इससे कर्मचारियों और उनके परिवार के जीवन यापन में समस्या आ रही है। उनके बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित हो रही है। कंपनी को पर्याप्त कार्यशील पूंजी नहीं मिल पाने के कारण आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया है। आर्थिक संकट के कारण कच्चा माल खरीदने और उत्पादन जारी रखने में दिक्कत हो रही है। कुछ प्लांट्स कच्चे माल की कमी के कारण बंद हो गए हैं। एचईसी में कुछ जरूरी रॉ मैटेरियल की भी भारी कमी हो गई है। इससे उत्पादन और बिक्री दोनों प्रभावित हैं। साथ ही, पुरानी मशीनें बार-बार खराब हो जा रही हैं। कंपनी को ऑर्डर समय पर नहीं मिल पा रहा है। नए कायार्देश नहीं मिल पा रहे हैं। नए कायार्देश नहीं मिलने से कंपनी की स्थिति और खराब होते जा रही है। खराब आर्थिक स्थिति के कारण एचईसी को निजीकरण की आशंका से भी जूझना पड़ रहा है। इससे कर्मचारियों में भी अनिश्चितता बनी हुई है। एचईसी की खराब आर्थिक स्थिति के लिए कुछ हद तक प्रबंधन की उदासीनता भी जिम्मेदार है।

एचईसी के प्रमुख उत्पाद

1. स्टील सेक्टर के उपकरण
2. खनन सेक्टर के उपकरण
3. क्रशिंग उपस्कर
4. खनिज प्रॉसेसिंग उपकरण
5. क्रेन निर्माण, मशीन टूल
6. कास्टिंग और फोर्जिंग

एचईसी की ईकाई

1. भारी मशीन उत्पादन संयंत्र
2. फाऊंड्री फोर्ज संयंत्र
3. भारी मशीन टूल्स संयंत्र
4. परियोजना विभाग

विशेष योग्यताएं

1. अंतरिक्ष परियोजनाओं के लिए लांच पैड तथा उपस्कर निर्माण
2. थोक सामग्री प्रबंधन की टर्न-की परियोजनाओं का क्रियान्वयन
3. नीतीगत उपयोग/प्रयोग के लिए विशेष स्टील का विकास

एचईसी में आर्थिक संकट के कारण

1. कार्यशील पूंजी की कमी
2. नए कार्यादेश का अभाव
3. ग्राहकों की मांग ससमय पर पूरा नहीं होने से आर्डर समय पर नहीं मिलना
4. निजी करण की आशंका से कर्मियों में उदासीनता
5. पूराने उपकरणों का बार-बार खराब होना
6. कुछ प्लांट में रॉ मटेरियल की कमी

श्रम के सम्मान का उत्सव है अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस

'अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस' श्रम के सम्मान का एक बड़ा उत्सव है। समाज, देश, यहां तक कि मानवता की प्रगति भी उनलोगों पर टिकी हुई है, जो अपने काम को समर्पित भाव से करते हैं। महात्मा गांधी ने भी कहा था कि किसी देश का विकास उसके किसान और कामगारों पर निर्भर करता है। वास्तव में किसी भी समाज, देश, उद्योग की तरक्की में ज्ञान और श्रम दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी उद्योग की सफलता बेहतर योजना और समझदार व कुशल श्रमिक के बिना संभव नहीं है।

वर्ष 1889 में पेरिस में अंतरराष्ट्रीय श्रमिक कांग्रेस का आयोजन हुआ, जिसमें आठ घंटे के कार्य दिवस के लिए मजदूर वर्ग की मांगों के समर्थन में एक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन के लिए एक प्रस्ताव अपनाया गया। श्रमिकों और समाजवादियों के इस अंतरराष्ट्रीय संगठन ने 1 मई को अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के रूप में घोषित किया। दुनिया भर के अधिसंख्य देश 1 मई को ही श्रमिक दिवस मनाते हैं। वहीं, अमेरिका और कनाडा सितंबर के पहले सोमवार को अपना मजदूर दिवस मनाते हैं।

दूसरी ओर, 1 मई की तारीख को अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर ने अमेरिका में एक आम हड़ताल की याद में चुना था, जो शिकागो में 1 मई 1886 को शुरू हुई थी और चार दिन बाद 'हे मार्केट' घटना के साथ समाप्त हुई थी। आज अगर कर्मचारियों के लिए दिन में काम के 8 घंटे तय हैं, तो वह शिकागो की आंदोलन की ही देन है। श्रमिक आंदोलन और मई दिवस को समझने के लिए तीन प्रमुख जगहों के आंदोलन पर ध्यान देना होगा - 1. अमेरिका, 2. यूरोप और 3. यूएसएसआर (अब रूस)। 19वीं शताब्दी में अमेरिका के ऐतिहासिक श्रमिक संघ आंदोलन के कारण श्रमिक दिवस को मान्यता मिली। वर्ष 1889 में समाजवादी समूहों और ट्रेड यूनियनों के एक अंतरराष्ट्रीय महासंघ ने शिकागो में हुई हे मार्केट घटना (1886) को याद करते हुए श्रमिकों के समर्थन में 1 मई को 'मई दिवस' के रूप में मान्यता दिया था। दूसरी ओर, जुलाई 1889 में यूरोप में पहली 'इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ सोशलिस्ट पार्टीज' द्वारा एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें यह ऐलान किया गया कि 1 मई को अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस (मई दिवस) के रूप मनाया जाएगा। इसके बाद 1 मई, 1890 को पहला मई दिवस मनाया गया था। वहीं, वर्ष 1917 में हुई रूसी क्रांति के बाद सोवियत संघ (यूएसएसआर) और पूर्वी ब्लॉक राष्ट्रों ने मजदूर दिवस मनाना शुरू किया। वास्तव में, मार्क्सवाद और समाजवाद जैसी नई विचारधाराओं ने श्रमिकों से संबंधित मुद्दों की तरफ सबका ध्यान आकर्षित किया था। सभी लोगों ने श्रम के मूल्य को समझा और उसका सम्मान किया।

'हे मार्केट' घटना का पड़ा वैश्विक प्रभाव

संयुक्त राज्य अमेरिका के शिकागो के 'हे मार्केट' में कपड़ा श्रमिकों ने हड़ताल 1 मई 1886 को आठ घंटे काम करने को लेकर जो आंदोलन किया था, उसका वैश्विक प्रभाव पड़ा। यह आंदोलन कई देशों में आठ घंटे का कार्य दिवस तय करने में सफल रहा। वैसे, सबसे पहले 21 अप्रैल 1856 को ऑस्ट्रेलिया विक्टोरिया में आठ घंटे के कार्यदिवस को लेकर आंदोलन हुआ था। इसी आंदोलन से प्रभावित होकर शिकागो के हे मार्केट के श्रमिकों ने भी वर्क डाउन या स्ट्राइक किया। शिकागो शहर में हे मार्केट घटना श्रमिकों के समर्थन में एक शांतिपूर्ण रैली थी। यहां 15-15 घंटे काम करने वाले मजदूर अपने 8 घंटे के कार्य दिवस के लिए हड़ताल पर थे। इस दौरान 4 मई 1886 को लाठीचार्ज और पुलिस फायरिंग में बहुत से मजदूरों की जान चली गई और सैकड़ों लोग घायल हो गए। बाद में जिन लोगों की इस झड़प में मृत्यु हुई, उन्हें 'हे मार्केट शहीद' के रूप में सम्मानित किया गया। बाद में वर्ष 1889 में समाजवादी समूहों और ट्रेड यूनियनों के एक अंतरराष्ट्रीय महासंघ ने शिकागो में हुई 'हे मार्केट' घटना को याद करते हुए श्रमिकों के समर्थन में 1 मई को 'मई दिवस' के रूप में मनाने के लिए प्रेरित किया।

भारत में श्रमिकों की सुरक्षा के लिए कानूनी प्रावधान

भारत में देश के 50 करोड़ से अधिक संगठित और असंगठित श्रमिकों के कल्याण के लिए तीन श्रम संहिता विधेयक पारित किए गए हैं। इन तीन कानूनों के माध्यम से श्रमिकों को हर तरह से सुरक्षा देने की कोशिश की गई है।

ये तीन श्रम संहिता निम्न हैं :

1. सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020
2. व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति सहिंता, 2020
3. औद्योगिक संबंध संहिता, 2020

श्रम दिवस के जनक हैं मैकगायर और मैगुयर

श्रमिक आंदोलन के नेता पीटर मैकगायर और मैथ्यू मैगुयर दोनों को 'श्रम दिवस का जनक' कहा जाता है। दोनों श्रमिक आंदोलन के लिए समर्पित भावुक कार्यकर्ता थे। वे दोनों बहुत 19वीं सदी में अमेरिकी श्रम अधिकारों के लिए अहम लड़ाई लड़ी थी।

वर्ष 1923 में पहली बार भारत में मनाया गया था 'श्रमिक दिवस'

भारत में वर्ष 1923 में 'श्रमिक दिवस' या 'मई दिवस' मनाया गया था। लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान ने 1 मई, 1923 को चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) में 'मजदूर दिवस' या 'मई दिवस' मनाया था। कम्युनिस्ट नेता मलयपुरम सिंगारवेलु चेट्टियार ने श्रमिकों के लिए लाल झंडा उठाया था। यह पहली बार था कि किसी ने देश में लाल झंडा उठाया था। 1 मई, 1923 को मरीना बीच पर एक बड़ा प्रदर्शन किया गया था। साथ ही, एक संकल्प पारित कर यह सहमति बनाई गई कि इस दिवस को भारत में भी मजदूर दिवस के तौर पर मनाया जाए और इस दिन छुट्टी की घोषणा की जाए।

भारत में श्रम अधिकारों की सुरक्षा के लिए संवैधानिक प्रावधान

भारतीय संविधान में देश के श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई प्रावधान हैं। संविधान में श्रमिकों की सुरक्षा के लिए कई व्यवस्थाएं की गई हैं। ये सुरक्षा व्यवस्था मौलिक अधिकार और राज्य की नीति निदेशक सिद्धांत के रूप में है।

ये सुरक्षा व्यवस्था निम्न हैं

- **अनुच्छेद 14 :** इसमें विधि के समक्ष समता एवं विधियों के समान संरक्षण का उपबंध किया गया है। संविधान का यह अनुच्छेद भारत के राज्यक्षेत्र के भीतर भारतीय नागरिकों एवं विदेशी दोनों के लिए समान व्यवहार का उपबंध करता है।
- **अनुच्छेद 19(1)(ग) :** नागरिकों को संघ या सहकारी समिति बनाने का अधिकार देता है।
- **अनुच्छेद 21 :** प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण प्रदान करता है।
- **अनुच्छेद 23 :** मानव के दुर्व्यापार और जबर्दस्ती श्रम का प्रतिषेध करता है।
- **अनुच्छेद 24 :** इसमें फैक्ट्री आदि में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध किया गया है। यह अनुच्छेद चौदह वर्ष से कम आयु के बालकों के किसी कारखाने, खान या किसी अन्य जोखिमयुक्त व्यवसाय में कार्य करने पर रोक लगाता है।
- **अनुच्छेद 39 (क) :** राज्य अपने नागरिकों को आजीविका के पर्याप्त साधनों के लिए समान कार्य के लिए समान वेतन का प्रावधान करता है।
- **अनुच्छेद 41 :** यह अनुच्छेद कहता है कि राज्य अपनी आर्थिक सामर्थ्य और विकास की सीमाओं के भीतर, काम पाने, शिक्षा प्राप्त करने और बेकारी, बुढ़ापा, बीमारी एवं नि:शक्तता तथा अन्य प्रकार के अभाव की स्थिति में लोक सहायता पाने के अधिकार को प्राप्त कराने का प्रभावी उपबंध करेगा।
- **अनुच्छेद 42 :** यह अनुच्छेद कहता है कि राज्य काम की न्यायसंगत और मानवोचित स्थिति को सुनिश्चित करने के लिए तथा प्रसूति सहायता के लिए उपबंध करेगा।
- **अनुच्छेद 43 :** यह अनुच्छेद कहता है कि राज्य उपयुक्त विधान या आर्थिक संगठन द्वारा या किसी अन्य रीति से कृषि, उद्योग या अन्य प्रकार के सभी कर्मकारों को काम, निर्वाह मजदूरी, शिष्ट जीवन स्तर और अवकाश का संपूर्ण उपभोग सुनिश्चित करने वाली काम की दशाएं तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवसर प्राप्त कराने का प्रयास करेगा। साथ ही, विशिष्टतया ग्रामों में कुटीर उद्योगों को वैयक्तिक और सहकारी आधार पर बढ़ाने का प्रयास करेगा।
- **अनुच्छेद 43 (क) :** यह अनुच्छेद राज्य को उद्योगों के प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में काम करने का अधिकार प्रदान करता है।

महात्मा गांधी और श्रमिक आंदोलन

अहमदाबाद की सूती मिल के श्रमिकों ने वर्ष 1918 में अपने अधिकारों और बेहतर काम की स्थिति के लिए आंदोलन किया था। यह सत्याग्रह था और महात्मा गांधी ने इसका नेतृत्व किया था। यह आंदोलन, गांधी के सत्याग्रह आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। श्रमिक 50 प्रतिशत वेतन वृद्धि की मांग कर रहे थे, लेकिन मिल मालिक केवल 20 प्रतिशत वृद्धि करना चाहते थे। गांधीजी ने श्रमिकों का समर्थन करने के लिए भूख हड़ताल भी की थी।